

Recommended by the West Bengal Board of Secondary Edu
Text Book for Class VI vide Notification No. T. B. No. VI
dated 5. 12. 79

প্রাচীন সভ্যতা

[ ষষ্ঠ শ্রেণীর জন্য ]

বর্মনারায়ণ দাস, এম. এ. (ট্রপল), পি-এইচ্. ডি. প্রধান শিক্ষক, পানিহাটি ত্রাণনাথ উচ্চ বিভালয়, ২৪ পরগণা





৯ এग्राकेनि रागान लन, कलिकाण-१

প্রকাশক :

এ. সাহা
পৃথিপত্র
১ এটান্টনি বাগান লেন
কলিকাতা-৭০০ ০০১

বিক্রয়কেন্দ্র :
পুথিপত্র

২ বন্ধিম চ্যাটার্জী খ্রীট
কলিকাতা-৭০০ ০৭৩

Date. 7 - 7 - 89

HD DHR

সরকারী আহুক্ল্যে প্রাপ্ত ষল্পম্লার কাগজে মুদ্রিত

প্রথম সংশ্বরণ, জুন, ১৯৭৯ সংশোধিত সংশ্বরণ, নভেম্বর, ১৯৭৯ তৃতীয় সংশ্বরণ, ডিসেম্বর, ১৯৮০ পুনর্মুদ্রণ, ফেব্রুয়ারি, ১৯৮১ পুনর্মুদ্রণ, ডিসেম্বর, ১৯৮৩

মূলা: সাত টাকা বিরানকাই প্রদা মাত্র

মুদ্রাকর:
বি. রায়
রায় প্রিন্টার্স
৯ এ্যান্টনি বাগান লেন,
কলিকাতা–৭০০ ০০১

### ভূমিকা

বই লিখলে তার ভূমিকাও লিখতে হয়। এটাই নাকি রেওয়াজ। ভূমিকার লেখক ছ্'একটা সুযোগ নিয়ে থাকেন। গ্রন্থের বিষয়বস্তুর সঙ্গে পাঠকের পরিচয় করিয়ে দেওয়া, লেখকের কোনো বিশেষ বক্রব্য থাকলে সে বক্রব্যের পেছনে তাঁর যুক্তিগুলোকে সহাদয় পাঠকের কাছে উপস্থিত করা— এ সবের জন্মেই ভূমিকা। তবে ভূমিকা দীর্ঘায়ত না হওয়াই বাঞ্চনীয়। এই গ্রন্থের ভূমিকা লিখতে গিয়ে প্রথমেই ধন্যবাদ জানান্দি পশ্চিমবঙ্গ মধ্যশিক্ষা পর্যদের সিলেবাস রচয়িতাদের। এতদিন ষষ্ঠ প্রেণীর ছাত্রছাত্রাদের পড়তে হোত বাংলার ইতিহাস। এর বদলে এখন পড়তে হবে প্রাচীন সভ্যতার ইতিহাসের পাঠ আরম্ভ হওয়া উচিত। তবে এই প্রসঙ্গে একটি কথা বলার আছে যে, এই পৃষ্ঠাসংখ্যার মধ্যে বিষয়বস্তুর প্রতি সুবিচার করা সুক্রিন, প্রায় অসম্ভব বলে মনে হয়েছে।

গ্রন্থকার

### SYLLABUS IN HISTORY

| rage   | es:  | NO. OI   |
|--|------|----------|
| HISTORY OF ANCIENT CIVILISATIONS:                |      | Lessons  |
| A. (i) Why we should read history;               |      |          |
| (to be acquainted with.human                     |      | 4        |
| civilisation, its development)                   | 1    | 1        |
| (ii) How we come to know of ancient              | -    |          |
| people ?   | 2    | 1        |
| B. EARLY MAN:                                    |      |          |
| Use of fire as early as 300,000 B. C.            |      |          |
| (by 'Peking Man'):                               |      |          |
| Food gathering man.                              |      | 1        |
| OLD STONE AGE:                                   |      |          |
| Nature of tools and implements,                  |      |          |
| their uses.                                      |      | 1        |
| NEW STONE AGE: (By 8000 B. C.)                   |      |          |
| Evolution of tools and implements.               |      |          |
| Man—a food producer.                             |      | 2        |
| The Neo-lithic revolution consisted also of dome | -    |          |
| stication of animals: invention of pottery       |      |          |
| (wheel): weaving (clothings); dwelling—          |      |          |
| stone houses with defences; early trans-         |      |          |
| port; beginnings of community life in            |      |          |
| settlements; beliefs and arts (as evident        |      |          |
| from cave-paintings etc.), use of formal         | 6    | 4        |
| language as a means of communication;            | (for | 'B' as a |
| worship of the Goddess of productivity.          | who  | ole)     |
| C. COPPER-BRONZE AGE:                            |      |          |
| Emergence of towns; changes in produc-           |      |          |
| tion_specialisation (various types of skill      |      |          |
| of artisans and craftsmen); commerce (ex-        |      |          |
| change of commodities); some changes in          |      |          |
| social life—classes; inter-tribal conflicts;     |      |          |
| emergence of an early form of state.             |      |          |
| Reasons of the growth of River-Valley            |      | ,        |
| Civilisations                                    |      | 2        |

|    |        | F F  | ages: | No. o |
|----|--------|--|-------|-------|
| D. | THE    | EARLY CIVILISATIONS  | I     | esson |
|    |        | (3000 B. C.—1500 B. C.)  |       |       |
|    | Mesop  | otamia, Egypt. Indus Valley, China   |       |       |
|    | —in o  | utlines:   |       |       |
|    | (i) M  | ESOPOTAMIA:  |       |       |
|    | (a)    | Location and antiquity; earlier development of civilisation than in  |       |       |
|    |        | other areas.   |       |       |
|    | (b)    | Fertility of the soil—crops  |       |       |
|    |        | Defence against floods.  |       |       |
|    |        | Other occupations.   |       |       |
|    | (e)    | Achievements of Sumerians:   |       |       |
|    | (-/    | imposing towers, mud-brick temples,  |       |       |
|    |        | fresco stone-cutting, metallurgy,  |       |       |
|    |        | transport and trade, script.   | 5     | 4     |
|    | (ii) I | EGYPT:   |       |       |
|    | (a)    | Location and nature of the land:   |       |       |
|    | (b)    | The Pharaoh, the priest, script and  |       |       |
|    | ( )    | scribes, tax collectors and 'soldiers'   |       |       |
|    | Acres  | (workers);   |       |       |
| •  | (c)    | Trade;   |       |       |
|    | (d)    | The Pyramids (examples); Religious beliefs;  |       |       |
|    | (e)    | Chief occupations.   | 7     | 6     |
|    | (f)    | THE INDUS VALLEY:  | 1104  |       |
|    | (iii)  | The discoveries (brief reference to  |       |       |
|    | (a)    | locations and findings);   |       |       |
|    | (b)    | A TOTAL TOTA |       |       |
|    | (c)    | Food and other articles of use:  |       |       |
|    | (d)    | Crafts 3   |       |       |
|    | (e)    | Trade;   |       |       |
|    | (f)    | Worship ;  |       |       |
|    | (g)    | Light thrown by relics upon classi-  | -     |       |
|    | (0)    | fication in society.   | 7     | 5     |
|    | (iv)   | CHINA  |       |       |
|    | (a)    | Valley of Huang Ho and Yangste-  |       |       |
|    |        | Kiang;   |       |       |

|    |          |                                      | Page | s: No of<br>Lessons |
|----|----------|--------------------------------------|------|---------------------|
|    | (b)      | China in early times;                |      |                     |
|    | (c)      | Myths (particularly of flood);       | 2    | 1                   |
|    | (v)      | Common features, in brief, of the ri |      |                     |
|    |          | an civilisations, with special refe  | pari |                     |
|    |          | rence to social and economic life.   | 3    | 2                   |
| 3. | THE      | IRON AGE-SOCIETIES:                  | 3    | 4                   |
|    | (a)      | Discovery and use of iron, its       |      |                     |
|    | ()       | impact;                              |      |                     |
|    | (b)      | Main features of social and          |      |                     |
|    | (0)      | economic life;                       |      |                     |
|    | (c)      | Growth of Kingship.                  | lib  |                     |
| 1  |          | ABYLON:                              | 2    | 2.                  |
|    | (1) D    |                                      |      |                     |
|    |          | Farming and Commerce; Temples        |      |                     |
|    |          | and Priests; Learning and culture;   |      |                     |
|    |          | The Code of Hamurabi—nature of       |      |                     |
|    |          | society as revealed by the Code.     |      | 3                   |
|    | (ii) E   | GYPT AS AN IMPERIAL POWER            | 1    |                     |
|    |          | Colonies: The power of priests       |      | 2                   |
|    | (iii) II | RAN:                                 |      |                     |
|    |          | Rise of Persia; Zoroaster.           |      | 2                   |
|    | (iv) T   | HE JEWS :                            |      | 2                   |
|    |          | Hebrews in Egypt. Hebrew exodus      |      | 2                   |
|    | 1        |                                      | 12   | (for T' as          |
|    |          |                                      |      | a whole)            |
| [. | GREE     | BCE (only in broad outlines):        |      |                     |
|    | An int   | roductory note on the influence      |      |                     |
|    | of Cre   | te: The Homeric Age. The city        |      |                     |
|    | Athens   | cultural interchange, colonisation.  |      |                     |
|    | politic  | al life. Athens vs. Sparta.          |      |                     |
|    | Cultur   | al greatness of Athens; Litera-      |      |                     |
|    | ture, A  | rts, Religion—brief reference to a   |      |                     |
|    | few em   | inent persons e.g. Pericles          |      |                     |
|    | Sophoc   | les. Socrates, Herodotus.            |      |                     |
|    | Macedo   | on: Alexander—his invasion of        |      |                     |
|    | india.   | Fall of the Empire. Roman            |      |                     |
|    | conques  | st of Greece.                        | 10   | 0                   |

Pages: No of Lessons TH. ROME: Origin of Rome. Conflict with Carthage. Early Roman Society: Particians and Plebeians: Roman citizenship, Slavery and slave revolts (Spartacus). Julius Caesar: End of Roman Republic. New Empire. Eventual decline and fall. Rise of Christianity. R IV. CHINA . "Great Shang". Confucius - his teachings. Building the Great Wall. The Chin Empire 3 2 V. INDIA: (a) The coming of the Aryans. (b) The Vedas. (c) Early Arvan Society, religion and political organisation (with reference to the Vedas). (d) The Epics. (e) The rise of Jainism and Buddhism. (f) The Empires - a brief outline of developments from the Mauryas-to the Kushans-to the decline of the Gupta Empire. (g) Ancient Bengal upto the decline of the Guptas (on the basis of proven historical materials viz. inscriptions and literary evidence). (h) Foreign contacts (particularly with Central Asia)—their impact upon society and trade. (i) Foreign Travellers-Megasthenes and Fa Hien-general picture of society as revealed in their accounts (in brief outlines only). (i) A brief summary of ancient Indian developments in arts and architecture. literature, education (Taxila and Nalanda), and Sciences (Astronomy,

Mathematics, Chemistry, Medicine).

15

10

|                   | সূচীপত্ৰ                                  |        |
|-------------------|---|--------|
|                   |   | शृष्ठी |
| প্রথম অধ্যায়     | প্রাচীন সভ্যতার ইতিহাস                    | 7-8    |
| প্রথম পরিচ্ছেদ    | আমরা ইতিহাস পড়ি কেন                      | 2      |
| বিতায় পরিচ্ছেদ   | প্রাচীন ইতিহাসের উপকরণ                    | 2      |
| দ্বিতীয় অধ্যায়  | আদিম মানুষ ও পাথর-যুগ                     | α-78   |
| প্রথম পরিচ্ছেদ    | वानिय मान्य                               | e      |
| দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ | পুরনো পাধর-যুগ                            | ٩      |
| তৃতীয় পরিচ্ছেদ   | নতুন পাধর-যুগ                             | 4      |
| চতুর্থ পরিচ্ছেদ   | নতুন পাথর-যুগের আরো করেকটি বড়ো ঘটনা      | >0     |
| তৃতীয় অধ্যায়    | তান্ত-ব্ৰোঞ্জ যুগ                         | 20-50  |
| প্রথম পরিচ্ছেদ    | ধাতুর আবিদ্ধার ও নগরের উদ্ভব              | 50     |
| দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ | বাণিজা, শ্রেণীর উন্তব ও রাজতন্ত্রের ধারণা | 20     |
| তৃতীয় পরিচ্ছেদ   | নদী-উপত্যকার সভ্যতার বিকাশ                | 24     |
| চতুর্থ অধ্যায়    | পৃথিবীর প্রাচীনতম কয়েকটি সভ্যতা          | 52-48  |
| প্রথম পরিচ্ছেদ    | মেদোপটেমিয়া                              | २५     |
| দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ | মিশর                                      | 29     |
| তৃতীয় পরিচ্ছেদ   | সিন্ধু উপত্যকা                            | ৩৬     |
| চতুর্থ পরিচ্ছেদ   | চীৰ                                       | 89     |
| পঞ্চম পরিভেছদ     | নদী-উপত্যকার সভ্যতাগুলোর সাধারণ বৈশিষ্ট্য | 60     |
| পঞ্চম অধ্যায়     | লোহযুগের সমাজ                             | 48-49  |
| ষষ্ঠ অধ্যায়      | লোহযুগের কয়েকটি সভ্যতা                   | (9-229 |
| প্রথম পরিচ্ছেদ    | <u>वार्विल</u> न                          | 42     |
| দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ | সামাজ্যবাদী মিশ্র                         | 66     |
| তৃতীয় পরিচ্ছেদ   | हेर्जान                                   | తిన    |
| চতুর্থ পরিচ্ছেদ   | इङ्जिट्न ताजा                             | ৭৩     |
| পঞ্ম পরিচ্ছেদ     | গ্রীদ                                     | 99     |
| यष्ठं পরিচ্ছেদ    | রোম                                       | ৯৭     |
| সপ্তম পরিচ্ছেদ    | होन '                                     | 2.5    |
| অন্টম পরিচ্ছেদ    | প্রাচীন ভারত                              | >>9    |

# প্রথম অব্যার গ্রাচীন সভ্যতার ইতিহাস প্রথম পরিচ্ছেদ আমরা ইতিহাস পড়ি কেন

আমরা মানুষ। আমাদের মন আছে। সেই মনে কভকগুলো প্রশ্ন জাগে — কি, কেন, করে, কোথায় এমনি আরও কত কি। পশু-পাখিদের সঙ্গে এখানেই আমাদের বড়ো তফাং। পশু-পাথিরা খেতে পেলেই খুশি। তাদের কৌতূহল নেই। তাই আদিম যুগ থেকে আজ পর্যস্ত তাদের অবস্থার কোনো উন্নতি হয় নি, তারা পশুই থেকে গেছে। মানুষ বহুকাল পশুরই মত জীবন কাটিয়েছে। খাতের সন্ধানে বনে-জঙ্গলে ঘুরে বেড়িয়েছে। কিন্তু সেই অসহায় অবস্থা থেকে বেরিয়ে আসার জত্যে সে প্রাণপণ চেষ্টা করেছে। তার কৌতূহল তাকে ক্রমাগত নতুন নতুন আবিধার আর উদ্ভাবনের পথে নিয়ে গেছে। সে আগুন আবিদ্ধার করেছে, চাষবাস শিখেছে, ঘরবাড়ি ও রাস্তাঘাট তৈরি করেছে, গ্রাম ও শহরে পাঁচজনে মিলেমিশে বাদ করতে শিখেছে। সভাতাও এমনি করে ধাপে ধাপে গেছে এগিয়ে। সভাতার জন্মও উন্নতির পেছনে আছে মানুষের অদমা কোতৃহল, অজানাকে জানার ইচ্ছা। এই জানার ইচ্ছাটা সবচেয়ে বেশি ভোমাদের। অজানার রাজ্য থেকে একটি একটি করে খবর কুড়িয়ে নিয়ে তোমাদের জ্ঞানের ভাণ্ডারটি ভরে ওঠে। ভোমরা যখন খুবই ছোটো ছিলে তখন চিনতে কেবল বাবা-মাকে; ভাই-বোনকে। এখন ভোমাদের জ্ঞানের পরিধি অনেক বেড়েছে। ভোমাদের চেনার জগভটাও হয়েছে অনেক বড়ো। আরও যখন বড়ো হবে তথন জানবে দেশ-বিদেশের মান্থবের কথা। ইভিহাস না পড়লে কেমন করে জানবে সে-সব কথা! আজ থেকে হাজার হাজার বছর আগেও সভা মানুষ পৃথিবীতে বাস করত। তারা লিখতে জানত, তারা ছবি আঁকত, থালা-বাসন গড়ত, পাথর কেটে

স্থন্দর-স্থন্দর মূর্তি নির্মাণ করত। ইতিহাস পড়ে তবেই তো এসব কথা জানা যায়। প্রাচীনকালের এসব কথা না জানলে সভ্যতার পথে আমরা কতদূর এগিয়েছি, তাও ভালো করে বোঝা যাবে না। ইতিহাস থেকে আমরা নানাভাবে শিক্ষালাভ করি। ইতিহাসের কাহিনী আমাদের কঠিন কাজ করার প্রেরণা ও সাহস যোগায়, আমাদের মধ্যে একটি আদর্শবোধও গড়ে তোলে। তাই ইতিহাস না পড়লে আমাদের শিক্ষা সম্পূর্ণ হয় না।

# দ্বিতীয় পরিচেছদ প্রাচীন ইতিহাসের উপকরণ

পুঁথি: প্রাচীনকালের কথা জানা গেছে কেমন করে?

একশো বা ছ'শো বছর আগের কথা জানা থুব কঠিন কাজ নয়।
লোকের মুথ থেকেও কিছু কিছু জানা যায়। তা ছাড়া, পুরনো
পুঁথি, দলিলপত প্রভৃতি থেকেও দেকালের মান্থবের জীবনযাত্রার

একটি ছবি পাওয়া যায়। আমাদের দেশের বেদ এবং রামায়ণমহাভারতে কয়েক হাজার বছর আগেকার মান্থবের জীবনযাত্রাপ্রশালী, চিন্তা, সমাজ-ব্যবস্থা, রীজিনীতি প্রভৃতির একটা আভাস
মেলে। মহাকবি হোমারের লেখা ছ'খানি মহাকাব্য 'ইলিয়ড'ও
'ওডিসি' থেকেও তেমনি প্রাচীন গ্রীকজাতি সম্বন্ধে অনেক কথা জানা
যায়। প্রাচীন ভারতে কাগজের কাজ চলতো তালপাতায় ও ভূর্জপত্রে। মিশরের মান্থ্য একরকম ঘাসের ডাঁটার টুকরো জুড়ে জুড়ে
কাগজের মতো একটা জিনিস তৈরি করত। তার নাম প্যাপিরাস।
আবার ব্যাবিলনের লোক নরম কাদার টালির ওপরে নক্তণের মতো
এক রকমের কলম দিয়ে লিখত। পণ্ডিতেরা বহু পরিশ্রেম করে এসব
প্রাচীন ভাষার পাঠোজার করেছেন।

লিপিঃ মিশরে দেবতার মন্দিরের গায়ে ও পাধরে কিছু কিছু লেখা পাওয়া গেছে। ভারতেরও বহু জায়গায় অনেক রাজা পাহাড় বা স্তম্ভের গায়ে অনেক কথা লিখে রেখে গেছেন। মৌর্হ শুমাট অশোকের সময়ের বহু শিলালিপি ভারতের বিভিন্ন অঞ্চলে জাবিষ্ণৃত হয়েছে। পাথর বা ধাতুর ফলকে খোদাই করা লিপিকে ভিংকীর্ণ লিপি' বলে। রাজারা অনেক সময় ব্রাহ্মণকে জমি দান করতেন। সেই দানের কথা উৎকীর্ণ করা হোত তামার পাতে। এরকম দানপত্র থেকে সেকালের কয়েকজন রাজার নাম, রাজকর্মচারীদের পরিচয় এবং জমির দাম প্রভৃতি জানা গেছে। মধ্য এশিয়ার নানা জায়গা থেকে বহু কাঠের ফলক পাওয়া গেছে। এগুলোর ওপরে খরোষ্ঠী ভাষায় সরকারী নির্দেশ লেখা রয়েছে।

প্রাচীন মুজা: মাটির নিচে ও ওপরে প্রাচীনকালের বহু মুজা ভারতের নানা জায়গা থেকে পাওয়া গেছে। সেকালের এরকম টাকা ও মোহরে রাজা, রাজকর্মচারীদের নাম প্রভৃতি এবং হু'একটা গুরুত্বপূর্ণ ঘটনার উল্লেখ আছে। কাজেই মুজাও প্রাচীন ইতিহাসের একটি মূল্যবান দলিল।

প্রাগৈতিহাসিক কালের কথা: কিন্তু মামুষের লেখা ইতিহাসের
বিষেদ তো থুব বেশি নয়! বড়ো জাের কয়েক হাজার বছর। অথচ
পৃথিবীতে মামুষ বাস করছে প্রায় গত পাঁচ লক্ষ বছর ধরে। সেই
স্মৃদ্র অভীতকালের কথা জানার উপায় কি ? কেমন করে তা জানা
গেল, সে এক আশ্চর্য কাহিনী। বহু পণ্ডিত আজীবন পরিশ্রম করে
মামুষের সেই অলিখিত ইতিহাস আবিকার করেছেন।

প্রকৃতত্ত্ব ঃ প্রাচীনকালের মানুষ ঘরবাড়ি, নানারকম যন্ত্রপাতি, অন্ত্রশস্ত্র, থেলনা, বাসনকোসন ও আসবাবপত্র প্রভৃতি তৈরি করত। মাটি থুঁড়ে সেকালের মানুষের তৈরি এরকম বহু জিনিস পাওয়া গেছে। কোথাও পাওয়া গেছে জন্ত-জানোয়ার আর মানুষের হাড়ও মাথার খুলি। পুরনো শহরের চিহ্ন, ভাঙা মন্দির, প্রাসাদ কোথাও বা কবর মাটির নিচ থেকে খুঁড়ে বার করা হয়েছে। গুহার দেওয়ালে আবিদ্ধৃত হয়েছে বিচিত্র সব শিকারের দৃশ্য। হাজার হাজার বছর ধরে মানুষ গ্রামে বাস করত, সেখানে মাটি জমে জমে বড়ো বড়ো সব টিবি হয়েছে। এসব টিবি খুঁড়ে পণ্ডিতেরা সেকালের সভ্যতার বহু নিদর্শনের সন্ধান পেয়েছেন। সেকালের আস্তাক্রার মধ্যেও এরকম নিদর্শন মিলেছে। আর এসব নিদর্শন থেকেই

রচিত হয়েছে প্রাচীনকালের ইতিহাস। এ ধরনের চর্চাকে বলা হয় প্রাতৃত্ব।

#### **अञ्जूशील**नी

- ১। ইতিহাস পড়ার উদ্দেশ্য কি ? (তিনটি বাকো প্রকাশ কর)।
- ২। ঠিক উত্তরগুলো বেছে নিয়ে তোমার নিজের ভাষায় প্রকাশ কর ঃ
- (क) ইতিহাস না পড়লে আমাদের শিক্ষা সম্পূর্ণ হয় না।
- (খ) ইতিহাদ পড়ে আমরা ধর্মপরারণ হই।
- (গ) ইতিহাসের কাহিনী আমাদের মধ্যে আদর্শবোধ গড়ে তোলে।
- (ঘ) মানুষ অতি সহজে এবং অল্প সময়ে সভাতার পথে এগিয়ে গেছে।
- (ঙ) পণ্ডর দলে মানুষের কোনও তফাং নেই।
- ৩। প্রাচীন ইতিহাদের উপাদানগুলোর নাম কর।
- ৪। 'ইলিয়ড' ও 'ওডিসি' কার রচনা ?
- ে। মাটি খুঁড়ে প্রাচীনকালের কি কি নিদর্শন পাওয়া গেছে 🕆
- ७। 'উৎकीर्ग निशि' कात्क बल ?
- ৭। 'প্রত্নতত্ত্ব' বলতে কি বোঝার ?
- ৮। মধ্য এশিয়ার নানা জান্নগা থেকে কি পাওয়া গেছে ?

# দ্বিতীয় অশ্যায় আদিঘ মানুষ ও পাথৱ-যুগ প্রথম পরিচ্ছেদ

#### আদিম মানুষ

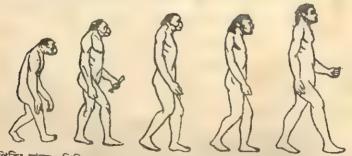
আমাদের এই পৃথিবীর বয়েস প্রায় তিনশো কোটি বছর হলেও
মামুষ এখানে বসবাস করছে মাত্র গত পাঁচ লক্ষ বছর ধরে। প্রশ্ন
উঠবে, তা হলে আজ থেকে পাঁচ লক্ষ বছর আগেকার মামুষ কি
দেখতে-শুনতে, কথাবার্তায়, বৃদ্ধিতে-বিবেচনায় ঠিক আমাদেরই মতো
ছিল ? উত্তরে বলব, মোটেই তা নয়। ইংরেজ বিজ্ঞানী চার্লস
ডারউইন প্রমাণ করে দেখিয়েছেন যে, মামুষের উদ্ভব হয়েছে একরকম
নরবানর থেকে। লক্ষ লক্ষ বছর ধরে নানা প্রতিকৃল অবস্থার সঙ্গে
খাপ খাইয়ে নিয়ে তবেই এক সময় নরবানর মামুষে রূপান্তরিত
হয়েছে। বিজ্ঞানের ভাষায় একেই বিবর্তন বলা হয়।

পিকিং-মানুষঃ চীনের পিকিং শহর থেকে খুব বেশি দূরে নয়,
এমন একটি গ্রামের নাম চাউ-কাউ-তিয়েন। এই গ্রামেরই একটি
পাহাড়ের গুহায় আদিম মানুষের হাড়গোড় পাওয়া গেছে। ইংরেজ
বিজ্ঞানী ডেভিডসন ব্র্যাক এদের নাম দিয়েছেন পিকিং-মানুষ বা
সিনানথ পাস। চেহারার দিক থেকে অনেকটা বানরের মতো হলেও,
আর সব দিকে এরা ছিল মানুষ। ত্রুপায়ের ওপর ভর দিয়ে এরা
স্বচ্ছন্দে হাঁটতে পারত। পিকিং-মানুষের আবির্ভাব হয়েছিল আজ
থেকে প্রায়্ন তিন লক্ষ বছর আগে।

আগুনের ব্যবহার: পিকিং-মামুষের সবচেয়ে বড়ো কৃতিত্ব এই যে, তারা আগুনের ব্যবহার জানত। এর প্রমাণ পাওয়া গেছে এদের গুহা থেকে। আগুনকে বশে আনতে পেরে আদিম মানুষ নিজেকে পরিবেশের সঙ্গে খাপ খাইয়ে নেবার অনেকখানি ক্ষমতা আয়ত্ত করে কেলেছিল। একদিকে যেমন প্রচণ্ড ঠাণ্ডার হাত থেকে ভারা রেহাই পেয়েছে আগুন জ্বালিয়ে, তেমনি গুহার জমাট কালো অন্ধকার দূর হয়েছে আগুনের আলোয়। আগুন দেখে হিংশ্র জন্তু-জানোয়ারেরা ভয়ে পালিয়ে গেছে। কাঁচা মাংস আগুনে ঝল্সে নিয়ে থেভেও তাদের ভারি ভালো লেগেছে। প্রথম দিকে জ্বলস্ট আগুন নিয়ে তারা গুহার মধ্যে রাখত, আগুন কিছুতেই নিব্জে দিত না। কাঠে কাঠ ঘষে বা চকমকি পাথর ঠুকে আগুন তৈরি করতে শিখেছিল তারা অনেক পরে। আগুনের আবিন্ধার সভ্যতার পথে মামুষের-যে প্রথম পদক্ষেপ, সে বিষয়ে কোনো সন্দেহ নেই।

শিকার ও সংগ্রহের যুগঃ পিকিং-মামুষ কিন্তু খাল উৎপাদন করতে জানত না। তারা জঙ্গল থেকে ফলমূল সংগ্রহ করে আনত বা জন্ত-জানোরার শিকার করত। আরও পরের দিকে আদিম মামুষ নদীতে মাছ ধরতেও শিখেছিল। কিন্তু খালের জল্মে তাদের নির্ভর করতে হোত পুরোপুরি শিকার ও সংগ্রহের ওপর। রোজই-যে শিকার জুটত এমন নয়। যেদিন জুটত না, সেদিন উপবাসেই কাটাতে হোত। খাল্ল যোগাড় করাই ছিল ভাদের জীবনের সবচেয়ে বড়ো সমস্যা।

মানুষের ক্রমবিকাশের কয়েকটি ধাপঃ পিকিং-মামুষ ছাড়াও সে যুগের আরেকটি সাক্ষ্য হোল জাভা-মামুষ, যাদের নাম দেওয়া হয়েছে পিথিক্যান্থুপাস। এর বহুকাল পরে আরো উন্নত প্র্যায়ের



পিকিং-মানুষ পিথিক্যানধুপাদ নিয়াভারধ্যাল ক্রোমাগ্নন হোমো গ্রাপিয়েনস

আর একদল মানুষের আবির্ভাব হয়েছিল। এদের বলা হয় নিয়াগুরিথাল মানুষ। এদেরও পরে সাক্ষাৎ পাওয়া গেছে ত্যোমাগ্নন মানুষের। সে আজু থেকে প্রায় পঁচিশ হাজার বছর আগের ঘটনা। হোমো স্থাপিয়েনস বা সমকালীন মানুষ পৃথিবীতে বাস করে গেছে আজ থেকে প্রায় পনের হাজার বছর আগে। আর এই সমকালীন মানুষই হচ্ছে আমাদের নিকট-পূর্বপুরুষ।

### দ্বিভীয় পরিচ্ছেদ পুরনো পাথৱ-যুগ

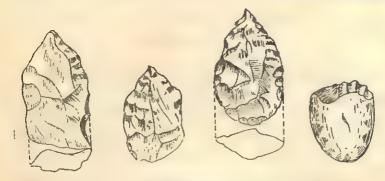
53

সময়কালের ধারণাঃ পুরনো পাথর-যুগ, নতুন পাথর-যুগ এবব বলতে কি বোঝায়, সে বিষয়ে তোমাদের একটা মোটামুটি ধারণা থাকা উচিত। তোমাদের একট আগেই বলেছি যে, পৃবিধীতে মান্ত্র বাস করছে গত পাঁচ লক্ষ বছর ধরে। এই পাঁচ লক্ষ বছরের মধ্যে শেষ দিকের মাত্র পাঁচ হাজার বছর ছাড়া বাদবাকি সময়ে মান্ত্র্য বাবহার করেছে একমাত্র পাথরের হাতিয়ার; কাজেই ঐ সময়টাকে বলা হয় পাথর-যুগ। পাথর-যুগকে আবার তই ভাগে ভাগ করা হয়েছে। পাথর-যুগের বেশির ভাগ সময়টাই পড়ে পুরনো পাথর-যুগে। শেষদিকের কয়েক হাজার বছর নিয়ে নতুন পাথর-যুগ। যীশুরীস্টের জন্মেরও প্রায়্ন আট হাজার বছর আগে নতুন পাথর-যুগের শুক্র। মেসোপটেমিয়া, মিশর বা ভারতবর্ষের পাঞ্জাবে প্রায়্ন একই সময়ে নতুন পাথর-যুগের শুক্র হয়েছিল, কিন্তু ইয়োরোপে বেশ কিছুকাল পরে।

যন্ত্রপাতি ও হাতিয়ারঃ পাথর থুবই মজবৃত, আদিম মানুষ তাই পাথর দিয়েই তাদের যন্ত্রপাতি ও হাতিয়ার তৈরি করত। গোড়ার দিকে, তারা বড়ো একখণ্ড পাথর ভেঙে নিয়ে হাতিয়ার তৈরি করত। খীরে খীরে তারা বিশেষ প্রয়েজনের জিন্তে বিশেষ হাতিয়ার তৈরি করতে লাগল। পৃথিবীর নানা অঞ্চল থেকে আদিম মানুষের তৈরি হাত-কুডুল পাওয়া গেছে। হাত-কুডুল দিয়ে তারা নানা রকমের কাজ চালিয়ে নিত। সাধারণতঃ চকমকি পাথর (বা ফ্লিন্ট) থেকেই আদিম মানুষ হাতিয়ার তৈরি করত। পুরনো পাথর-যুগের মাঝামাঝি সময়ে হাতিয়ার তৈরির

ь

কাজে মানুষ অনেকথানি দক্ষতা লাভ করেছিল। বড়ো একখণ্ড পাথর থেকে পাতলা পরত থসিয়ে নিয়ে তথন অস্ত্রশস্ত্র তৈরি করা হোত। পণ্ডিতেরা এরকম অস্ত্রশস্ত্রের নাম দিয়েছেন পরত পাথরের হাতিয়ার। ইউরোপের নিয়াণ্ডারথ্যাল মানুষ বর্শার ফলকের মতো একরকমের অস্ত্র দিয়ে ম্যামথ শিকার করত। পরে হাতিয়ার

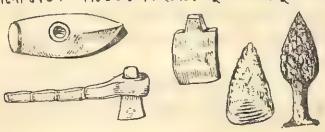


#### পুরনো পাধর-যুগের অন্ত্রশন্ত

আবো উনত হয়েছে। জন্ত-জানোয়ারের হাড় ও শিঙ্ দিয়ে মান্য হাতিয়ার তৈরি করেছে। হাড় ও শিঙ্ ফুটো করার জন্মে ত্রপুন, কাঁটা, চেরা ও চাঁছার জন্মে পাথরের বাটালি প্রভৃতি এ যুগেই তৈরি হয়েছে। পুরনো পাথর-যুগের শ্রেষ্ঠ আবিদ্ধার বর্শা আর তীর-ধন্মক। লাঠির ডগায় হাল্কা হাড়ের ফলক লাগিয়ে বর্শা তৈরি করা হোত। পুরনো পাথর-যুগের মান্যুষ বর্শা দিয়ে শিকার করত বুনো ঘোড়া, বাইসন, বল্গা হরিণ প্রভৃতির মতো সব জন্ত-জানোয়ার।

# ভৃতীয় পরিচেছদ <mark>নতুন পাথৱ-যুগ ( ৮০০০ খ্রীঃ পূঃ )</mark>

উন্নত ধরনের হাতিয়ার ও যন্ত্রপাতিঃ নতুন পাথর-যুগের হাতিয়ারকে ঘষেমজে অনেক ধারালো করা হয়েছে। এ যুগে পালিশ করা কাঠের হাতল লাগানো পাথরের হাত-কুডুল তৈরি হয়েছে। এই কুডুল দিয়ে বাগিচার মাটি আলগা করা হোত। এ রকমের বাগিচা-চাষ করত সাধারণত মেয়েরা। পাথরের কুড়ুল দিয়ে মাটিও কোপানো থেত। কাল্ডেও তৈরি হয়েছে নতুন পাথর-যুগে। নতুন



নতুন পাধর-যুগের অল্লখন্ত

পাথর-যুগের আরো নানা রকম অন্তর্শন্ত্রের মধ্যে একটির নাম ব্লেড বা ফলা, পাথরের হাতিয়ার।

কৃষিকাজঃ নতুন পাথর-যুগেই মান্ত্রয় প্রথম কৃষিকাজ করতে
শেখে। গোড়ার দিকে কৃষিকাজ বলতে বোঝায় বাগিচা-চাষ।
একটা লাঠি বা শিঙ্ দিয়ে মাটি একটু আল্গা করে দেওয়া হোত।
এর ওপর ছড়িয়ে দেওয়া হোত বীজ্ঞ। সত্যিকারের চাষ শুরু হয়েছিল
পাথরের লাক্ষল আবিক্ষারের পর থেকে। কৃষিকাজ আদিম মান্ত্র্যের
জীবনে একটা বড়ো রকমের বিপ্লব ঘটিয়েছিল। কৃষিকাজের স্ফুচনায়
ছিল গম ও বার্লির চাষ। এই বিপ্লবের শুরু হয়েছিল মেসোপটেমিয়ায়, মিশরে এবং পশ্চিম ভারতে।

কৃষি আরম্ভ হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে খাছ্য সংগ্রহ করার অনিশ্চয়তা পেকে মানুষ মুক্তি পেল। আগে খাছের সন্ধানে তাদের এক জায়গা থেকে অন্য জায়গায় ঘূরে বেড়াতে হোত। কৃষিবিছা আয়ত্ত করার পর তারা একটা জায়গায় স্থায়িভাবে বসবাস করতে লাগল।

পশুপালনঃ নতুন পাথর-যুগেই মানুষ পশুপালন করতে শেখে।
পশুদের মধ্যে কুকুরই প্রথম পোষ মানে। শিকারীকে নির্ভূল
শিকারের সন্ধান দিতে পারত কুকুর। এ কাজে তার জুড়ি ছিল না।
পরবর্তী কালে বুনো ছাগল, বুনো ভেড়া আর বুনো ষাঁড়কে পোষ
মানানো হয়। প্রথম দিকে মানুষ পশুপালন করত নেহাতই মাংসের
লোভে। বহুকাল পরে নানা অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে তারা ব্ঝতে
পোরেছিল যে, পশুপালন করলে তারা নানাদিক থেকে লাভবান

হতে পারে। গৃহপালিত পশু থেকে শুধু মাংসই নর, ছ্থের মতো পুষ্টিকর খান্তও তারা পেতে লাগল। পশুর লোম থেকে কাপড় বুনে তারা শীতের হাত থেকে রক্ষা পেল। কৃষিকাজের মতো পশুপালনও মানুষকে সভাতার পথে অনেকদূর এগিয়ে দিয়েছে।

# চভূর্ব পরিচ্ছেদ নতুন পাথর-যুগের আরে। কয়েকটি বড়ো ঘটনা

পুরনো পাথর-যুগ থেকে নতুন পাথর-যুগে মামুষকে থেতে হয়েছে একটি বিপ্লবের মধ্য দিয়ে। এ বিপ্লবের প্রকাশ ঘটেছে কৃষিকাজ ও পশুপালনে। কৃষি ও পশুপালনের মতোই উল্লেখযোগ্য আরও করেকটি ঘটনা ঘটেছিল এ যুগে। তথন এক অঞ্চলের জন্ত-জানোয়ার ফুরিয়ে গেলেই খাত্যের সন্ধানে মামুষকে আর একটি অঞ্চলে চলে যেতে হোত। এরকম অন্থির যাযাবর জীবনে স্থতো কাটা, কাপড় বোনা, মাটির পাত্র তৈরি করার মতো কাজের কোনো স্থান ছিল না। নতুন পাথর-যুগে কৃষি ও পশুপালনের মধ্য দিয়ে খাত্যের সমস্যা আর তেমন রইল না। কলে তাদের অবকাশও তথন বাড়ল। পুরনো পাথর-যুগেই মানুষ গাছের ছাল দিয়ে চুবড়ি বৃনতে পারত। কিন্তু পোড়ামাটির পাত্র তৈরি করতে মানুষ প্রথম শিখল নতুন পাথর-যুগেই।

পোড়ামাটির পাত্র ঃ পোড়ামাটির পাত্র প্রথম তৈরি হয়েছিল পশ্চিম এশিয়ায়। কৃষির মতো এ কাজটিও ছিল গোড়ার দিকে মেয়েদের হাতে। পোড়ামাটির পাত্রের ওপরে নানা রঙের অলক্ষরণ করার কৌশলটি মামুষ ধীরে ধীরে আয়ত্ত করেছিল। কুমোরের চাকা আবিষ্কার হয়েছে আরো পরে।

কাপড় বোনা ঃ নত্ন পাথর-যুগের আর একটি কৃতিত্ব কাপড় বোনা। এ কাজটিও করত মেয়েরা। পুরনো পাথর-যুগেই মানুষ্ চামড়া ও পাতার পোশাক তৈরি করতে শিখেছিল; নতুন পাথর-যুগে এসে তারা স্থতোর ও পশমের পোশাক তৈরি করতে শিখল। এ যুগেই প্রথম সত্যিকারের তাঁত তৈরি হয়েছিল। কুটির ও দালানঃ স্থায়িভাবে বাস করতে গেলে ঘরবাড়ি ভৈরি করতে হয়। নতুন পাথর-যুগে মান্থর এ কাজটিভেও পিছিয়ে থাকে নি। পুরনো পাথর-যুগের শেষ দিকেই মান্থর কাঠের গুঁড়ি সাজিয়ে কুটির ভৈরি করত আবার জলাভূমির উপরে মাচা তুলেও কুটির ভৈরি করত। নতুন পাথর-যুগের প্রথমদিকে মাটি-লেপা নলখাগড়ার বেড়া দিয়ে ভারা কুটির ভৈরি করত। পরে রোদে শুকিয়ে নেওয়া ইট দিয়ে দালান-কোঠা ভৈরি করে ভাতে বাস করত।

প্রাম: স্থায়িভাবে বসবাস করার ফলে গড়ে উঠল ছোটো ছোটো প্রাম। পশ্চিম এশিরার করেকটি অঞ্চলে চিবি খুঁড়ে এরকম প্রাগৈতিহাসিক গ্রামের নিদর্শন পাওয়া গেছে। মামুষ নানা কারণে এক জায়গায় গোষ্ঠীবন্ধ হয়ে বাস করতে শিখেছিল। গোষ্ঠীর অন্তর্ভুক্ত কয়েকটি পরিবার নিয়ে এক-একটি গ্রাম গড়ে উঠভ। গ্রামের চারধারে গভীর পরিখা কাটা হোত। ভারপর খুঁটির বেড়া দিয়ে গ্রামটিকে ঘিরে দেওয়া হোত। হিংস্র পশু এবং মামুষ-শক্তর আক্রমণ থেকে আত্মরক্ষার জন্মেই ভারা এসব ব্যবস্থা করত। এ মুগে বেঁচে থাকার ভাগিদেই পাঁচজনকে একসঙ্গে চলতে হোত, একত্র হয়ে কাজ করতে হোত।

যানবাহন : নতুন পাধর-যুগ আরম্ভ হওয়ার কিছুকালের মধ্যেই চাষীদের হাতে বাড়তি শস্ত মজ্ত হয়েছিল। তারা সেই উদ্বৃত্ত কসলের বিনিময়ে অক্যান্ত প্রয়োজনের জিনিস সংগ্রহ করতে লাগল। মামুষ তথন আর বিশেষ একটি অঞ্চলের মধ্যে আটকে রইল না। এক অঞ্চল থেকে আর এক অঞ্চলে যাতায়াত শুরু করল। যানবাহন বলতে প্রথম দিকে ছিল গাধা। গাধার পিঠে চড়ে মামুষও যেমন যেত, তেমনি মালপত্র চাপিয়ে দেওয়া হোত। কিছুকাল পরে ঘোড়াও যানবাহনের মাধ্যম হয়ে উঠল। এ যুগের আর একটি বড়ো আবিক্ষার হোল চাকাওয়ালা গাড়ি। ৩০০০ খ্রীস্টপ্রান্দের আগেই স্থমেরে চাকাওয়ালা গাড়ির প্রচলন হয়েছিল। চাকাওয়ালা গাড়ির কোনোটা যাত্রী বহন করত, আবার কোনোটা মাল বহন করত। কাঠের শুঁড়ি দিয়ে ডোঙা তৈরি করতে মামুষ শিখেছিল আগেই। তারপর নলখাগড়ার আঁটি একত্র করে বেঁধে ভেলা তৈরি করত।

ভেলার চড়েই তারা নদী পারাপার করত। এরও অনেক পরে পালতোলা নৌকার প্রচলন হয়। ৩০০০ খ্রীস্টপূর্বান্দে আরব-সাগর ও ভূমধ্যসাগরের ওপর দিয়ে রীভিমতো পালতোলা নৌকোর যাভায়াত শুরু হয়ে যায়।

আদিম মানুষের ধর্মবিশ্বাসঃ কৃষি ও পশুপালনের যুগে
মানুষ নিজের খাত নিজেই তৈরি করত ঠিকই, কিন্তু প্রকৃতির রাজ্যে
তব্ও তারা ছিল অসহায়। খরা, ঝড়, শিলাবৃষ্টি, ভূমিকম্প, মড়ক ও
মহামারী—এগবের যে-কোনে একটা এসে তাদের সারাবছরের
পরিশ্রমকে বার্থ করে দিত। তাই এসব শক্তিকে তারা নানা
মন্ত্রত্ত উচ্চারণ ও পুজো-আচা করে খুশি করার চেষ্টা করত। তারা
ভাবত, নদীর দেবতা খুশি থাকলে আর বক্তা হবে না। ক্ষেত্রের
দেবতা খুশি থাকলে ফসল নষ্ট হবে না। এমনি আরও কত কি।
এ থেকেই গড়ে উঠেছিল অন্ধ বিশ্বাস আর কুসংস্কার। আদিম মানুষ
পরলোক বিশ্বাস করত। তাই মৃত পূর্বপুক্রবদের কবরে তাদের
ব্যবহারের উপযোগী সব বক্ষের জিনিস্ট তারা রেখে দিত।



স্পেনের আলভামিরার গুহাচিত্র

মৃতদেহকে কবর দেবার সময়
তার দেহে লালরঙের প্রলেপ
লাগানো হোত। এমনি আরও
অনেক নিয়ম এবং অমুষ্ঠান
তারা পালন করত। জাত্তশক্তির ওপর আদিম মামুবের
ছিল প্রবল বিশ্বাস। স্পেনের
আলভামিরা গুহায় লাল আর

কালো রঙে আঁকা একপাল বাইসনের ছবি আবিদ্ধৃত হয়েছে। ফ্রান্স, ক্ষেপন ও ইতালিতে এরকম আরো কয়েকটি গুহাচিত্রের সন্ধান পাওয়া গেছে। এসব গুহাচিত্র আদিম মামুষের শিল্পকর্ম তো বটেই, এ সবের মধ্যে আবার তাদের জাত্বিখাসেরও পরিচয় পাওয়া যায়।

ভাষা: নতুন পাথর-বুগের মানুষকে একজোট হয়ে বহু কাজ করতে হোত। কাজেই তারা মনের ভাব প্রকাশ করার জন্তে নিশ্চয়ই কথা বলত। ঐ সময় থেকেই বিভিন্ন অঞ্চলের মধ্যে বাতায়াত ও লেনদেনেরও গুরু হয়। আদিম মানুষ কথা বলতে পারত বলেই তার পক্ষে সহযোগিতার ভিত্তিতে কাজকর্ম করা, লেনদেনের মাধ্যমে জিসিসপত্র সংগ্রহ করা সম্ভব হয়েছিল।

কসল দেবীর পূজা: নত্ন পাথর-যুগের মান্তবের সমস্ত দৃষ্টি ও মনোযোগ ছিল মাঠের কসলের ওপরে। কসল কলাবার জন্মে তারা নানা রকম অনুষ্ঠান পালন করত। তারা কল্পনা করত কসলের জনি যেন মা, আর কসল হচ্ছে সন্তান। মায়ের প্রতীক হিসেবে নারীমৃতি গড়া হোত মাটি, পাথর বা হাড় দিয়ে। মিশর, সিরিয়া, ইরান এবং পূর্ব ইয়োরোপের বহু জায়গায় এরকম অজ্ঞ মৃতি পাওয়া গেছে।

আদিম মানুষের মধ্যে আরেকটি অনুষ্ঠানও খুব প্রচলিত ছিল।
তা হচ্ছে 'কসলরাজার বিয়ে'। প্রতি বছরই একজন তরুণকে বেছে
নিয়ে কসলরাজা করা হোত। তারপর তাকে বিয়ে দেওয়া হোত
বাছাই করা কোনো তরুণীর সঙ্গে। কিন্তু বছর ঘুরতেই কসলরাজাকে
মেরে কেলে তার মৃতদেহকে খুব ঘটা করে কবর দেওয়া হোত।
আদিম মানুষ বিশাস করত কসলরাজার দেহটিকে মাটিতে পুঁতে
দিলেই জমিতে ভাল ফসল ফলবে।

#### অনুশীলনী

- >। নীচের শ্রশগুলোর উত্তর দাও:
- (ক) পৃথিবীর বয়েস কত ?
- (খ) পৃথিবীতে মানুষ বাস করছে কতদিন ধরে?
- (গ) চার্লস ডারউইন কী প্রমাণ করে দেখিয়েছেন ?
- (घ) 'लिकिः-मानूय' नामि (क पिरत्र इन ?
- (ঙ) 'পিকিং-মানুষ'-যে আগুনের ব্যবহার জানত, তা বোঝা গেলং কি ভাবে ং
- (চ) সভাতার পথে মানুষের প্রথম পদক্ষেপ কী ?
- (ছ) ক্রোমাগ্নন মানুষের আবির্ভাব হয়েছিল কবে?
- ২। বিবর্তন বলতে কী বোঝায় ?
- ৩। 'পিকিং-মানুষ'-এর পরিচয় দাও।
- ৪। আগুনকে বশে আনতে পারায় মানুষের কী লাভ হয়েছিল !

- ৫। 'পিকিং-মানুষ' খাদ্য সংগ্রহ করত কী ভাবে ?
- 'পিকিং-মানুষ'-এর পরে যেসব মানুষের আবির্ভাব, তাদের পরিচয়
   দাও।
- ৭। পাধর-যুগ বলা হয় কোন্ সময়টাকে ?
- ৮। নতুন পাধর-যুগের গুরু হয়েছে কোন্ সময়ে ?
- ১। পুরনো পাথর-যুগের হাতিয়ার সম্বন্ধে কী জান ?
- >। আদিম মানুষ সাধারণত কোন্ ধরনের পাথর দিয়ে হাতিয়ার তৈরি করত ?
- ১১। আদিম মানুষ বর্শা তৈরি করত কী ভাবে ?
- ্১২। নতুন পাধর-যুগের হাতিয়ারের বিশেষত্ব কী !
- ১৩। বাগিচা-চাৰ বলতে কী বোঝায় ? কারা বাগিচা-চাৰ করত ?
- ১৪। কৃষিকাজ শুরু হওয়ার ফলে আদিম মানুষের যাযাবর জীবনে কী ধরনের পরিবর্তন হরেছিল ?
- >१। योक्षित व्यथम (शांषा जीव की ?
- ১৬। আদিম মানুষ কখন পোড়ামাটির পাত্র বানাতে ও কাপড় বৃনতে শেখে? এ-বিষয়ে তুমি কী জান?
- ১৭। নতুন পাধর-যুগে মানুষ কী ভাবে দালান তৈরি করত ?
- >৮। आनिम यूर्णत यानवारन मन्नत्स की जान ?
- ১৯। আদিম মানুষের ধর্মবিশ্বাস সম্বন্ধে সংক্ষেপে জ্'চার কথা বল।
- ২০। আদিম মানুষ ফদল ফলাবার জন্য যে-সব অনুষ্ঠান পালন করত, তার মধ্যে ত্-একটির নাম কর।

0

- ২১। বন্ধনীর মধ্যে থেকে ঠিক উত্তরটি বেছে নিয়ে শৃন্যস্থান প্রণ কর:
  - (क) আমাদের নিকট-পূর্বপুরুষ হচ্ছে——মানুষ। (নিয়াগুরিখ্যাল/স্ম-কালীন/পিকিং)
  - (ব) পুরনো পাথর-যুগের শ্রেষ্ঠ আবিস্কার——। (বর্শা/ভুরপুন/কুডুল/ তীর-ধনুক)
  - (গ) মানুষ কৃষি করতে শেখে——যুগে। (লোহ/পুরনো পাথর/নতুন পাথর)
  - (

     প্রি প্রান্ত পাত্র প্রথমে তৈরি হয়েছিল—

    । (ইয়ারোপে/

    পশ্চিম এশিয়ায় )
- (ঙ) তাঁতের আবিজার করেছে——মানুষ। (পুরনো পাথর-যুগের/ লোহ-যুগের)

# ভৃতীয় অধ্যায় তাম্ল-ব্রোঞ্জ যুগ প্রথম পরিচেছদ ধাতুর আবিষ্কার ও নগরের উদ্ভব

পাথরের যুগের পরেই ধাতুর যুগ। পাথরের যুগের বয়সের তুলনায় ধাতুর যুগের বয়স কিছুই নয়। আজ থেকে সাত হাজার বছর আগে মানুষ তামার আবিদ্ধার করে, আর সোহার আবিদ্ধার হয়েছে মাত্র পাঁচ হাজার বছর আগে। ছ' হাজার বছর ধরে মানুষ তামা ও ব্রোজের ব্যবহার করেছে। সেজত্যে ঐ সময়টাকে বলা হয় তাম্র-ব্রোজ যুগ। এর পরেই লোহযুগ। আমরা এখনও লোহযুগেই বাস করছি।

তামা ও ব্রোঞ্জের আবিকার । মামুষ কেমন করে প্রথমে তামা গলাতে শিখেছিল, তা আমরা জানি না। ঘটনাটি হয়তো নিতান্তই আকস্মিক। তবে যেমন করে ঘটুক না কেন, এই আবিষ্কার তংকালীন মামুবের চিস্তা ও কল্পনাকে একেবারে ওলট-পালট করে দিয়েছিল। পাথরের হাতিয়ার মজবৃত হলেও তা আচম্কা ভেঙে যেতে পারে। আর ভেঙে গেলেই তা প্রায় অচল। তামার হাতিয়ারের বেলা এ কথা খাটে না। তাকে গলিয়ে নিলেই আর একটি নতুন হাতিয়ার তৈরি করা যায়। তামার মতো ব্রোঞ্জের আবিষ্কারও একটি আকস্মিক ঘটনা। তামা ও টিন একসঙ্গে গলিয়ে নিলেই যে-সংকর ধাতুটি পাওয়া যায়, তার নাম ব্রোঞ্জর

নগরের উদ্ভব : পাথর-যুগ পেছনে ফেলে মানুষ ধাতৃর যুগে পা ফেলেছে। তবে একটি বিপ্লবের মধ্য দিয়ে একাজ করা সম্ভব হয়েছে। আমরা একে নগর-বিপ্লব বলতে পারি। ৩০০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দের মেলোপটেমিয়া, মিশর এবং ভারতবর্ষের পাঞ্জাবে কয়েকটি নগর গড়ে উঠেছিল। পাথর-যুগে যেগুলো ছিল স্বয়ং-

সম্পূর্ণ গ্রাম, পরে সেগুলোই নগরে পরিণত হয়। নগরগুলোই হয়ে ওঠে শিল্প-বাণিজ্যের কেন্দ্র।

নভুন কারিগর-শ্রেণীর উদ্ভব: তামার আবিফারের ফলে মানুষের অর্থনৈতিক ও সামাজিক জীবনেও উল্লেখযোগ্য পরিবর্তন ঘটল। এই ধাতৃটিকে কেন্দ্র করে এক নতুন কারিগর-শ্রেণীর উদ্ভব হোল, এদের নাম কামার। তামা গলিয়ে এরা ব্যবহারের উপযোগী নানা রকম যন্ত্রপাতি গড়ে, তৈরি করে নানা রকমের হাতিয়ার। খনি থেকে আকরিক ভামা তুলে আনে আরেক দল। অপর এক দল আক্রিক তামা গলিয়ে বিশুদ্ধ তামা সংগ্রহ করে। ফলে নতুন নতুন কারিগর-গোষ্ঠীর উত্তব হোল। এরা চাষবাস করার সময় পেত না। উদৃত্ত ফদল থেকেই এদের ভরণ-পোষণের ব্যবস্থা হতে লাগল। এতদিন গোষ্ঠীর অন্তর্ভুক্ত সকলকে কিছু না কিছু চাষের কাজ করতে হোত। এজন্তে ফদলে ছিল সকলের সমান অধিকার। সমাজে এই প্রথম নতুন কিছু মান্তুষের দেখা পাওয়া গেল যারা চাষ ছাড়া অক্স কাজ করেও স্বচ্ছন্দে জীবিকানির্বাহ করতে পারে। তামার কারিগরদের চাষীদের মতো গ্রামের চৌহদ্দির মধ্যেই আটকে থাকভে হোত না। তাদের কাজের চাহিদা ছিল থুবই। ফলে ডারা প্রায়ই এক জারগা থেকে অন্য জারগার ঘুরে ঘুরে বেড়াত।

### দ্বিতীয় পরিচেছদ

### বাণিজ্য, শ্রেণীর উদ্ভব ও রাজতন্ত্রের ধারণা

লেনদেন ঃ কৃষি ও পশুপালনের যুগ থেকেই গ্রামের চাষীদের
সঙ্গে যাযাবর পশুপালকদের একটা লেনদেন সম্পর্ক গড়ে উঠেছিল।
পশুপালকদের কাছ থেকে চাষীরা পেত মাছ, মাংস এবং আরো কিছু
কিছু জিনিস, আর পশুপালকরা পেত শশু। ধাতু আবিষ্কারের পর
থেকে এই লেনদেনের সম্পর্ক আরও উন্নত হয়। মিশরের বহু কবর
থেকে সবৃদ্ধ রঙের তামা, রজন, রঙ-বেরঙের নানা রকম পাণর,
ভূমধ্যসাগরীয় অঞ্চলের সামুক্তিক জীবের খোলা প্রভৃতি পাওয়া গেছে।

এগুলোর কোনোটাই খাস মিশরের নয়, আনা হয়েছিল দূরবর্তী সব
অঞ্চল থেকে। যে-ক'টি পলিমাটি-অঞ্চলে সভ্যতার জন্ম হয়েছে,
দেখানে তামা প্রচুর পরিমাণে পাওয়া যেত না, আনতে হোত বাইরে
থেকে। পরবর্তী কালে নগর পত্তনের পরে দেবমন্দিরের প্রয়োজনে
বহু জিনিসই বাইরে থেকে আনতে হোত। আর সভ্যিকারের ব্যবসাবাণিজ্যের তথন থেকেই শুক্ত। উদ্বৃত্ত ফদল আর গৃহপালিত জ্বন্তু
বিনিময় করেই লেনদেন হোত।

বাণিজ্য: ব্যবসা-বাণিজ্যের মূলে ছিল উদ্ত ফসল। আদিম সমাজে ফসল ফলাবার কাজে সকলেই ছিল অংশীদার।

বিভিন্ন শ্রেণীর উদ্ভব: ধাতৃ আবিফারের পর থেকে এ ব্যবস্থাটিতে পরিবর্তন ঘটল। কামার, কুমোর, ছুতোর, তাঁতী, রাজমিস্ত্রী সকলেরই জীবিকা আলাদা হয়ে গেল। সমাজে এইভাবে নানা শ্রেণীর উদ্ভব হোল। ফলে, আদিম সমাজের সাম্য আর রইল না। আদিম সমাজের গোষ্ঠীবদ্ধ জীবনে ছিল দিন-আনা-দিন-খাওয়ার মতো একটা অবস্থা। কাব্লেই তখন সকলে মিলে যা তৈরি করত, তা হয়ে উঠত সকলেরই সম্পত্তি। সেখানে সকলেই ছি<mark>ল</mark> সমান; কেউ প্রভুও নয়, আবার কেউ দাসও নয়। অনেকগুলো গোষ্ঠী একত্র হওয়ার ফলে যথন একটি বড়ো দল বা ট্রাইব গড়ে উঠত, তথনও এমন অবস্থাই ছিল। সেখানে কোনও ব্যক্তিগত সম্পত্তি ছিল না। কাজ ভাগাভাগি হয়ে যাওয়ার পর থেকেই কিন্তু মানুষ একটা সমৃদ্ধির যুগে পা দিয়েছিল। তথন তারা সোনা, রূপা ও মণি-মুক্তোর অলঙ্কার ব্যবহার করতেও মোটামুটি শিখেছে। জীবনধারণের উপায় উন্নত হয়ে ওঠার ফলে মানুষের পরিশ্রম উদ্বৃত্ত সৃষ্টি করতে লাগল। অল্প কিছু লোকের হাতে এই উদ্বত জমা হতে লাগল। আর সেই উন্তু ফদল ফলাবার কাজে চাষীকে উদয়াস্ত মেহনত করতে হোত। এই সময় থেকেই শ্রেণীবিভক্ত সমাজের উদ্ভব হয়। সেই সমাজে একদল শোষক, আর একদল শোষিত, একদল প্রভু, আর একদল माम।

গোষ্ঠীতে গোষ্ঠীতে সংঘর্ষ ইরান, মেসোপটেমিয়া ও মিশরে মাটি খুঁতে যেসব নিদর্শন পাওয়া গেছে, তা দেখে মনে হয় গোষ্ঠীতে গোষ্ঠীতে মাঝে মাঝে সাংঘাতিক রকমের যুদ্ধবিগ্রহ হয়েছে। লোকসংখ্যা এক সময়ে খুবই বেড়ে গিয়েছিল। কাজেই বাড়তি লোকের
জন্মে নতুন জমির দরকার। এইসব যুদ্ধবিগ্রহ ছিল জমিদখলের
লড়াই। যেমন জমি নিয়ে লড়াই চলতে লাগল, তেমনি চলতে
লাগল লুটপাট। যুদ্ধে পরাজিত গোষ্ঠীর অনেকেরই প্রাণ গেল।
যারা বেঁচে রইল, তারা বিজয়ী গোষ্ঠীর দাস হয়ে খাটতে লাগল।
দাসত প্রথা এভাবেই কায়েম হোল। গোষ্ঠীবদ্ধ সমাজের স্বাই
মিলেমিশে কাজ করত; তাদের অধিকারও ছিল স্মান। তার
জায়গায় দেখা দিল নতুন একটা সামাজিক সম্পর্ক। একদল প্রভু
আর একদল দাস।

রাষ্ট্রের উদ্ভব ঃ গোড়ার দিকে যে-মানুষ যে-উপকরণটি তৈরী করত, সেই মানুষটিই তা ভোগ করত। কারিগর শ্রেণীর উদ্ভব এবং ব্যবসা-বাণিজ্যের শুরু হবার পর এ অবস্থাটা একেবারে পাল্টে গেল। পণ্য যারা তৈরি করত, তারা সেই পণ্য ভোগ করতে পারত না। পণ্যের মালিক ছিল অন্ম আর এক দল লোক। ব্যবসা-বাণিজ্যা করে পণ্যের মালিকরা বিত্তবান হতে লাগল। আর যাদের পরিশ্রেমে সেই পণ্য তৈরি হোত, তারা বিত্তহীন হতে লাগল। ব্যক্তিগত সম্পত্তি ফুলে-ফেঁপে উঠল এভাবেই। আর এমন একটা ব্যবস্থা বাঁচিয়ে রাখবার জন্মে নিয়মকান্থন তৈরি করা হোল। আবার সেই সব নিয়মকান্থন যাতে সকলে মেনে চলে তার জন্মে সৈত্ত মানুত্ত মজ্ত রাখা হোল। সব মিলিয়ে এই ব্যবস্থাটির নাম দেওয়া যেতে পারে রাষ্ট্র। নগর গড়ে ওঠার পরে এমন একটা অবস্থার স্থিটি হয়েছিল। আনেক সময় বিজয়ী কোনো দলের দলপতি রাজা হয়ে বসত। আবার মানুষের কুশংস্কারের সুযোগ নিয়ে কখনও কখনও বৃদ্ধিমান কোনও পুরোহিত রাজপদ লাভ করত।

## ভৃতীয় পরিচ্ছেদ নদী-উপত্যকায় সভ্যতার বিকাশ

পৃথিবীর বড়ো বড়ো কয়েকটি নদীর উপত্যকায় প্রথমে নগরের পত্তন হয়। নীলনদের দেশ মিশরে, টাইগ্রীস ও ইউফ্রেটিস নদীর



মধ্যবর্তী অঞ্চল মেসোপটেমিয়ায় এবং সিন্ধুনদের উপত্যকায় তাই মানব চীন দেশটিও হোয়াংহো আর ইয়াং-সিকিয়াং নদীর উপভ্যকা সভাতার আর একটি প্রাচীন কেন্দ্র ছিল এমনই উর্বরা

যে, সামাত পরিশ্রমেই সেখানকার জমিতে প্রচুর ফদল ফল্ড।
পশুদের চরে বেড়াবার মতো তৃণভূমিরও দেখানে অভাব ছিল না।
ফলে, শুধু কৃষকদের পক্ষেই নয়, পশুপালকদের পক্ষেও জায়গাগুলো
ছিল খুবই উপযোগী। ডাঙ্গার পথ ছাড়াও নদীর পথে যাতায়াভ
করা যেত। কাজেই নানা দলের মানুষ পরস্পরের সঙ্গে সহজেই
যোগাযোগ করতে পারত। এসব কারণেই নদীর স্নেহে পুষ্ট
মেলোপটেমিয়া, মিশর আর ভারতবর্ষের পাঞ্জাব এবং কিছুকাল পরে
চীনে সভ্যতার উন্মেষ ঘটে। নদীর কাছে প্রথমে ছোটো ছোটো গ্রাম
গড়ে ওঠে। পরে লোকসংখ্যা বেড়ে যাওয়ায় এবং লেনদেন-ব্যবস্থার
উন্নতি হওয়ায় গ্রামগুলো নগরে পরিণত হয়। প্রথমে ভোমাদের
মেলোপটেমিয়ার কথা বলব।

#### অমুশীলনী

- ১। নিচের প্রশ্নগুলোর উত্তর দাও:
- (ক) কোন্সময় থেকে মানুষ ধাতুর বাবহার করতে থাকে ? (খ) কোন্সময়টাকে লোহযুগ বলা হয় ? (গ) পাথরের হাতিয়ারের সঙ্গে তামার হাতিয়ারের তুলনা কর। (ঘ) ব্রোঞ্জ কী ? (ঙ) পৃথিবীর কোন্কোন্ অঞ্লে প্রথম নগর গড়ে ওঠে ?
  - ২। তামার আবিদ্ধারের ফলে কী ধরনের অর্থ নৈতিক ও সামাজিক পরিবর্তন ঘটেছিল ?
  - ত। আদিম মানুষ কী ভাবে লেনদেন করত। লেনদেনের ফলে; কা হয়েছিল।
  - ৪। পুরনো পাথর-যুগের মানুষের অর্থ নৈতিক ও সামাজিক জীবন সক্ষেকী জান ?
  - ে। নদী-উপত্যকাগুলোতে সভ্যতার উৎপত্তি হয়েছিল কেন !
  - ও। 'হাা' কি 'না' বলে ঠিক উত্তরটি বেছে দেখাও:
- (ক) নতুন পাথর-যুগের মানুষের খাওয়া-পরার খুব একটা চিন্তা ছিল কি ? (খ) পাথর-যুগের পরেই ধাতুর যুগ। (গ) সমাজে নানা শ্রেণীর উত্তব হয় পুরনো পাথর-যুগে। (ঘ) অনেকগুলো গোষ্ঠী মিলে ট্রাইব গড়ে ওঠে। (ঙ) জমিদখলের জন্যে গোষ্ঠীতে গোষ্ঠীতে মাঝে মাঝে লড়াই হোত।
  - ৭। কী অবস্থায় এবং কখন রাফ্রের উদ্ভব হয়েছে ?
  - ৮। গোষ্ঠীতে গোষ্ঠীতে সংঘর্ষের ফলে কী হোত !

#### চভুৰ্থ অধ্যায়

# পৃথিবীর প্রাচীনতম ক্ষেকটি সভ্যতা ( ৩০০০ এফিপ্রাক্ধেকে ১৫০০ এফিপ্রাক্ক)

# প্রথম পরিচ্ছেদ মেসোপটেমিয়া

অবস্থান: যীশুখ্রীস্টের জন্মের প্রায় তিন হাজার বৈছর আগে পৃথিবীর কোনো কোনো অঞ্চলে সভ্যতার বিকাশ হয়েছিল। এমনই একটি অঞ্চলের নাম মেসোপটেমিয়া। নামটি গ্রীকদের দেওয়া।



নামটির অর্থ দোয়াব বা ছটি নদীর মধ্যবর্তী অঞ্চল। আরবের মরুভূমির উত্তরে ছটি নদীর নাম টাইগ্রীস ও ইউফ্রেটিস। ছটি নদীর দোয়াব হল মেসোপটেমিয়া।

প্রাচীনকালের মেসোপটেমিয়াই হোল হালের ইরাক। মেসো-পটেমিয়ার উত্তরে তুরস্ক, পূর্বে এলবুর্জ এবং জ্যাগ্রস পর্বতশ্রেণী ও ইরানের মালভূমি, দক্ষিণে পারস্ত উপসাগর এবং পশ্চিমে সিরিয়ার মক্লভূমি।

প্রাচীনকালে মেসোপটেমিয়ার উত্তরাংশকে বলা হোত অস্তর বা আসিরিয়া; দক্ষিণাংশের নাম ছিল বাাবিলোনিয়া। বাারিলোনিয়ার

Library

Dete 7 - 7 - 89

উত্তর দিকের খানিকটা অংশ নিয়ে ছিল আকাদ রাজ্য। আর দক্ষিণ ভাগের নাম ছিল স্থমের।

- অনেকের মতে স্থুমেরের সভাতাই সবচেয়ে প্রাচীন। প্রায় পাঁচ হাজার বছর আগে এই সভাতার জন্ম হয়েছিল।

ভূ-প্রকৃতি ও জলবায়ু: পলিমাটির দেশ বলেই স্থমেরের জমি

ছিল খুবই উর্বর। জমিতে বীজ ফেললেই সোনা ফলত। কিন্তু
বৃষ্টিপাত ছিল খুবই কম, আর জলবায়ু ছিল মরুভূমির মতোই।
তা ছাড়া, গোটা দেশ জুড়ে ছিল অসংখ্য জলাভূমি, আর তাতে ছিল
কেবল নলখাগড়ার জঙ্গল। সেখানে কিছুই জন্মাত না। টাইগ্রীস
ও ইউফ্রেটিস নদীতে প্রতি বছরই ভয়ঙ্কর বক্সা হোত। আর সেই
বন্সায় মান্তবের ঘর-বাড়ি, গরু-বাছুর সব কিছু যেত ভেসে। স্থমেরের
মান্তব কিন্তু এইসব বিরুদ্ধ-শক্তির কাছে হার মানে নি। হার মানে নি
বলেই সেখানে সভ্যতা গড়ে উঠেছে। পৃথিবীর মধ্যে এখানেই মান্তব
প্রথম বাঁড়ের সাহায্যে লাঙ্গল দিয়ে জমি চাষ করেছে। এখানে
প্রথম গম ও বার্লির চাষ হয়। ক্ষেতে প্রচুর গম ও বার্লি ছাড়াও
জন্মাত নানা রকমের ডাল। বাগানে ফলত ডুমুর, আপেল, আখরোট,
পেস্তা, বাদাম, আঙ্গুর প্রভৃতি ফল। সবচেয়ে বেশি জন্মাত খেজুর
গাছ। স্থমেরীয়রা ছিল খুবই পরিশ্রমী।

বন্তা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থাঃ বন্তার জল নিয়ন্ত্রণের জন্তে তারা চমংকার ব্যবস্থা গ্রহণ করেছিল। নদীর মধ্যে জায়গায় জায়গায় পাথর দিয়ে তারা বাঁধ তৈরি করত। তাতে বন্তার জল আটকা পড়ে কয়েকটি হ্রদের স্পষ্টি হয়েছিল। তারপর অসংখ্য খাল কেটে সেই জল তারা নিয়ে গিয়েছিল দেশের চারদিকে। ফলে বন্তার জল নানা পথে বেরিয়ে য়েতে পারত। অজস্র নালা কেটে বন্তার জল নিয়ে য়াওয়া হোত ফসলের জমিতে। এ ব্যবস্থায় সারা বছরই চায়ের কাজ ভালভাবে চলত। র্প্তির জন্তে তাদের হা-পিত্যেশ করতে হোত না। জলসেচের এই সুন্দর পদ্ধতির সঙ্গে আধুনিক সেচ-বাবস্থার কোনো তফাং নেই। জলাভূমির জল নিকাশ করে এবং নলখাগড়ার জঙ্গল পরিষ্কার করে তারা বহু জমি চাম্যোগ্য করে নিয়েছিল। সেইজন্ত, সুমেরীয়দের খাতের কোনও অভাব ছিল না।

অন্যান্য পেশাঃ সুমেরীয়দের প্রধান জীবিকা ছিল কৃষি ও পশুপালন। গৃহপালিত পশুদের মধ্যে ছিল গোরু, ভেড়া, ছাগল প্রভৃতি।
কৃষির মতো অন্যান্ত কাজেও সুমেরীয়রা সমান দক্ষতার পরিচয়
দিয়েছিল। তারা পোড়ামাটির স্থন্দর স্থন্দর পাত্র তৈরি করতে
জানত। ঐসব পাত্রের ওপর নানারকম অলঙ্করণও করা হোত।
পশম আর পাটের স্থতো দিয়ে তারা কাপড় বৃনত; রোদে খ্ব শক্ত
করে শুকিয়ে নেওয়া ইট দিয়ে দালানকোঠা তৈরি করত; সোনারপা
ও মূল্যবান পাথর দিয়ে অলঙ্কার তৈরি করত এবং তামা ও ব্রোঞ্জ
দিয়ে নানা রকম যন্ত্রপাতি ও হাতিয়ার তৈরি করত। হাতির দাঁত,
দামী কাঠ এবং পাথরের স্ক্ষ্ম কাজেও তারা দক্ষ ছিল।

সুমেরীয়রা মাস ও বছর গণনা করতে জ্ঞানত। দেশের পুরোহিতরাই এ কাজে অগ্রণী ছিলেন। তাঁরা শুধু জ্ঞানের চর্চাই করতেন না, জ্ঞান বিতরণও করতেন। মন্দিরগুলো ছিল এক-একটি পাঠশালা। সুমেরের সৈনিকরা ছিল খুবই সাহসী। মাথায় তামার শিরস্তাণ পরে কুঠার, বর্শা আর ঢাল নিয়ে তারা যুদ্ধ করত।

নগর-বিপ্লবের জন্মভূমিও স্থমের ঃ স্থমের দেশে ছোটো ছোটো গ্রাম থেকে ক্রমশঃ শহর গড়ে উঠতে থাকে। উরুক, এরিছ, উর, লাগম, কিশ প্রভৃতি ছিল এরকম করেকটা শহর। প্রতিটি শহর ছিল এক-একটি স্থাধীন রাষ্ট্র, তাদের মধ্যে মোটেই সন্তাব ছিল না। যুদ্ধবিগ্রহ লেগেই থাকত। স্থমেরীয়রা তাদের উদ্ত কসল দিয়ে দেশ-বিদেশের সঙ্গে ব্যবসা-বাণিজ্য করত।

6

স্থুমেরীয়দের কৃতিত্ব ঃ স্থুমেরেই পৃথিবীর প্রাচীনতম সভ্যতা গড়ে উঠেছিল। সেথানকার লোক নানা রকম কারিগরি বিভা আয়ও করেছিল। নানা দেব-দেবীতে তারা বিশ্বাস করত। এনলিল ছিল পৃথিবীর দেবতা, অয়ু আকাশের দেবতা, এয়া জলের দেবতা, সামাস সূর্য দেবতা এবং নালার চল্র দেবতা। প্রত্যেকটি নগরের মাঝখানে তারা বিশাল বিশাল দেবমন্দির নির্মাণ করত। এরকম দেবমন্দিরের নাম জিগ্ গুরাট। এই নগরদেবতার মন্দিরগুলো দেখতে ছিল অনেকটা গমুজের মতো। দেবমন্দিরের মধ্যেই থাকত শস্তের গোলা, অস্ত্রাগার এবং কামারশালা।

দেবমন্দিরের বাইরে ছিল কাঁচা ইটের সব বসত-বাড়ি। তাতে কামার, কুমোর, তাঁতী, ছুতোর প্রভৃতি নানা রকমের কারিগর বাস করত।

ব্যবসা-বাণিজ্য ঃ স্থুমেরীয়রা ব্যবসা-বাণিজ্যের ক্ষেত্রে থুবই উন্নতি করেছিল। নগর-সভ্যতা গড়ে ওঠার পর থেকে সেখানে তামা, পাথর, এবং দামী কাঠের চাহিদা খুবই বেড়ে গিয়েছিল। অথচ এগুলার কোনটাই স্থুমেরে পাওয়া যেত না, আনতে হোত বাইরে থেকে। নানা পথে স্থুমেরীয়রা দেশ-বিদেশের সঙ্গে বাণিজ্য করত। পারস্থা উপসাগর দিয়ে তারা পশ্চিম ভারতের সঙ্গে ব্যবসা-বাণিজ্য করত, আবার আর্মেনিয়া, সিরিয়া এবং ভূমধ্যসাগরীয় অঞ্চলের সঙ্গেও তাদের ব্যবসা-বাণিজ্য চলত। ইউফ্রেটিস নদীর আদি নাম 'উরুত্র'। এর অর্থ তাত্রনদী। অর্থাৎ ইউফ্রেটিস এবং টাইগ্রীস নদীপথে বিপুল পরিমাণ পাইন কাঠ, সীডার কাঠ আর আকরিক তামা আসত মেসোপটেমিয়ায়। আরও যেসব জিনিস আমদানি করা হোত তার মধ্যে ছিল বিটুমেন আর নানা রকমের বিলাসজ্ব্য। এসব বিলাসজ্পব্যের মধ্যে থাকত দামী পাথর, প্রবাল, মুক্তো, হাতির দাঁতের

|   | शा      |      | 7-1    |           |
|---|---------|------|--------|-----------|
|   | গাবা    | 50   | Sex.   | 電         |
|   | পাখী    | W.   | 11 F   | 41%       |
|   | 到原      | R    | 大<br>子 | F.Fe      |
| - | তারা    | *    | *      | <b>►-</b> |
|   | ষাঁড়   | V    |        | 工         |
|   | সূৰ্য   | 0    | ⇒      |           |
|   | ACTE PT | 1112 | 1111   | 4         |

স্মেরীয় বাণমুখো লিপির ক্রমবিকাশ

1/19

চাকাওয়ালা গাড়ির প্রচলন হয়েছিল সুমেরে। এসব গাড়ির কোনটা ছিল যা ত্রী বা হী, আ বা র কোনোটা মালপত্রও বহন করত। নদীপথে সুমেরীয় বণিকরা যাতায়াতের জন্তে নৌকো ব্যবহার করত। ভারী জিনিসপত্র নিয়ে বহুদূরের পথ পাড়ি দেবার জন্তে ভারা বিশেষ এক ধরনের বাণিজ্যতরী নির্মাণ করেছিল। 0

সুমেরীয়দের সবচেয়ে বড়ো ক্বতিত্ব লেখা ও লিপির আবিকার। নরম টালির ওপর নরুণের মতো শক্ত এক রকমের কলম দিয়ে তারা লিখিত। লেখার পর টালিগুলো রোদে শুকিয়ে নেওয়া হোত। সুমেরীয়দের লেখা এই হরফগুলো দেখতে অনেকটা তীরের ফলার

মতো। সেইজন্তে এই লিপিকে
বলা হয় বাণমুখো লিপি,
কোণাকার লিপি বা কীলক লিপি।
লিপিও একরকমের চিত্রলিপি।
সুমেরীয়রা মাটির টালিতে
চিঠিপত্র লিখত, হিসেব রাখত,
এমন কি জ্যোতিষ, গণিত প্রভৃতি
কঠিন বিষয়ে বইও লিখত।



কঠিন বিষয়ে বইও লিখত। সুমেরীয় বাণমুখো বা কীলক লিপি স্থুমেরীয়দের ভাষা ও সভ্যতার অনেক কিছুই গ্রহণ করে পরবর্তী কালে ব্যাবিলনীয় সভ্যতা গড়ে ওঠে।

স্থমের থেকে ব্যাবিলনঃ স্থমেরীয়রাই পৃথিবীর প্রথমসভাতার জনক। তেমনি সেমিটিক যাযাবরদের ছোটো রাজ্য
আকাদের নেতৃত্বে পৃথিবীর প্রথম সাম্রাজ্ঞাটি গড়ে ওঠে। ২৫৫০
খ্রীস্টপূর্বান্দে আকাদে সারগণের জন্ম হয়। আকাদ রাজ্যের এই রাজা
ছিলেন মস্ত বড়ো বীর। এলাম, স্থমের প্রভৃতি প্রতিবেশী রাজ্য জয়
করে তিনি ছোটো আকাদ রাজ্ঞাটিকে একটি বিশাল সাম্রাজ্যে পরিণত
করেছিলেন। সারগণের মৃত্যুর পর স্থমেরীয়দের সঙ্গে সেমিটিকদের
আবার বিবাদ শুরু হয়ে যায়। কয়েকশো বছর ধরে এরকম বিবাদ
চলতে থাকে। এদিকে সেমিটিক জ্ঞাতির নতুন একটি শাখার নেতৃত্বে
ইউফ্রেটিস নদীর তীরবর্তী ব্যাবিলন শহরে একটি রাজ্য গড়ে ওঠে।
ব্যাবিলনের রাজা হামুরাবি আজ থেকে প্রায় চার হাজার বছর আগে
ব্যাবিলনের সিংহাসনে বসেন। গোটা দোয়াবটিই (মেসোপটেমিয়া)
তিনি দখল করে মস্ত বড়ো ব্যাবিলোনিয়া সাম্রাজ্য গড়ে তুলেছিলেন।
রাজা হামুরাবির কথা তোমাদের পরে বলব।

ব্যাবিলন এবং পরে আসিরীয়রাও সুমেরীয় লিপি গ্রহণ করেছিল।

স্থুমেরীয় সভ্যভার অনেক কিছুই গ্রহণ করে পরে ব্যাবিলনীয় সভ্যতা গড়ে ওঠে।

#### **बनू गै**ननी

- ১। কোন্ দেশটিকে মেসোপটেমিয়া বলা হয় १ মেসোপটেমিয়া শকটির অর্থ কী १ কারা নামটি দিয়েছিল १ কেন দিয়েছিল १
- ২। মেসোপটেমিয়ার ভূ-প্রকৃতি ও জলবায়ু সম্বন্ধে কী জান ?
- ৩। বন্যা নিমন্ত্রণের জন্যে সুমেরয়িরা কী কী করত ?
- ৪। প্রাচীন সুমেরের ভমিতে কোন্ কোন্ ভিনিসের চাষ হোত?
   বাগানে কী কী ফল ফলত?
- ে৷ সুমেরীয়রা কী কী কাজ জানত ?
- ৬। সুমেরীয়দের কৃতিত্ব সম্বন্ধে কী জান ?
- ৭। সুমেরীয়দের বাবদা-বাণিজা নিয়ে একটি ছোটো প্রবন্ধ লেখ।
- ৮। मूर्यवोग्रापत्र निशिष्क को निशि वना इत्र १ (कन वना इत्र १
- বন্ধনার মধ্যে ঠিক উত্তরটি দেওয়া আছে। সেটি বেছে নিয়ে নীচের বাক্যগুলোর শৃন্যস্থান প্রণ কর:
  - (ক) বর্তমানে যে-দেশটির নাম , প্রাচীনকালে তাকেই মেগোপটেমিয়া বলা হোত। (ইরান/ইরাক)
  - (খ) মেলোপটেমিয়ার উত্তরাংশের নাম 1

( वावित्नानिया/आंत्रिवीया )

- (গ) সভ্যতাই সবচেয়ে প্রাচীন। ( গিশরের/সুমেরের )
- (ঘ) সুমেরীয়রা ছিল ধুবই —। (অলস/পরিশ্রমী)
- (ঙ) উরের প্রধান নগরদেবতা ছিলেন —। (নালার/এয়া)
- (চ) চাকাওয়ালা গাড়ি প্রথম ব্যবহার করতে শিখেছিল —।
  ( সুমেরীয়রা/মিশরীয়রা )
- ১০। টাইগ্রাস ও ইউফেটিস নদী ছটি না থাকলে মেসোপটেমিয়ার কীঃ অবস্থা হোত ?
- ১>। সুমেরীয় পুরোহিতদের সম্বন্ধে কী জান ?
- > । मूरमजीय योकाता की तकम हिल ?
- ১৩। 'গিলগামেশ' কী १
- ১৪। সুমেরের কয়েকটি নগরের নাম কর।
- ১৫। কয়েকজন সুমেরীয় দেবতার নাম কর।
- ১৬। সুমেরীয়রা কিসের ওপর লিখত ? কী দিয়ে লিখত ?
- ১৭। সুমেরীয়রা প্রথমে কার কাছে পরাজিত হয়েছিল ?
- ১৮। সারগণ কে? তিনি কী করেছিলেন ?
- ১৯। সুমের-আকাদ রাজাটির পতন হয়েছিল কী ভাবে ?

### দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ

#### মিশৱ

এবার ভোমাদের যে-দেশটির কথা বলব তার নাম মিশর। মেসোপটেমিয়ার মতোই স্থূদ্র প্রাচীনকালে মিশরে একটি উন্নত সভ্যতা গড়ে উঠেছিল।

অবস্থানঃ লোহিত সাগরকে পেছনে ফেলে সুয়েজ থাল দিয়ে এগিয়ে গেলেই পড়ে ভূমধ্যসাগর। সুয়েজ থাল যেথানে ভূমধ্যসাগরে গিয়ে পড়েছে, ঠিক তার বাঁ-দিকে দাঁড়িয়ে আছে একটি দেশ। এই দেশটির নামই মিশর। মিশরের ছদিকে সমুদ্র; পুবে লোহিত

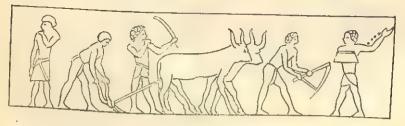


সাগর, পশ্চিমে ভূমধাসাগর। বাকি ছদিকে মক্তৃমি। মিশরের দক্ষিণে বা পশ্চিমে যে-দিকেই তাকাও, দেখবে শুধু বালি আরু

বালি। এদেশে বৃষ্টিপাত থুবই কম, তেমনি সূর্যের ভাপও থুব বেশি। নীলনদের জন্মই মরুভূমি মিশরকে গ্রাস করতে পারে নি।

নীলনদঃ পৃথিবীতে যত বড়ো বড়ো নদী আছে, নীলনদ তাদের মধ্যে একটি, দৈর্ঘ্যে প্রায় চার হাজার মাইল। দক্ষিণের আবিসিনিয়ার পাহাড় থেকে বেরিয়ে এঁকেবেঁকে গিয়ে পড়েছে ভূমধ্যসাগরে। প্রতি বছর গ্রীম্মকালে পাহাড়ের বরফগলা জল নীলনদের ছই কুল ছাপিয়ে গোটা মিশরকে ভাসিয়ে দিয়ে যায়। বক্তার জল সরে গেলে নদীর ছই পাশের জমিতে পলিমাটির একটি পুরু আস্তরণ পড়ে। এই পলিমাটির গুণেই মিশরের জমিতে আজও সোনা ফলে। পলিমাটির অফ্রন্ত উর্বরাশক্তি সেই স্ব্দূর প্রাচীন কালেই মিশরকে একটি সমৃদ্ধ দেশে পরিণত করেছিল। তাই নীলনদকে 'মিশরের প্রাণ' বলা হয়। মোহানার কাছে নীলনদ কতকগুলো শাখায় ভাগ হয়ে যাওয়ায় সেখানে একটি ব-দ্বীপের স্পৃষ্টি হয়েছে। এই অঞ্চলটির নাম নিয় বা উত্তর মিশর। এর দক্ষিণাংশকে বলা হয় উচ্চ বা দক্ষিণ মিশর।

ভূ-প্রকৃতি ও সেচ-ব্যবস্থাঃ মিশরে অসংখ্য জলাভূমি ছিল।
তা ছাড়া, নীলনদে প্রতি বছর বক্সা হোত। সে বক্সার চেহারা ছিল
ভয়ঙ্কর। মিশরীয়রা বক্সা নিয়ন্ত্রণের ব্যবস্থা করেছিল। তারা নীলনদের জায়গায় জায়গায় বাঁধ তৈরি করত। তারপর অসংখ্য খাল



মিশরীয়দের কৃষিকাঞ

কেটে সেই বক্সার জল নিয়ে যেত চাষের জমিতে। চাষের জমিতে কৃপ কেটে ঐ জল চাষীরা ধরে রাখত। ফলে চাষের জক্যে তাদের জলের কোন ভাবনা ছিল না। বালতির মতো দেখতে একরকম পাত্রের সঙ্গে দড়ি বেঁধে তারা জল তুলত এবং সেই জল জমিতে দিত। একে শাহ্নক বলা হয়। জলাভূমির জল সেচে ফেলে, নল-খাগড়ার জঙ্গল কেটে চাষীরা কসলের জমি বাড়াত। কঠোর পরিশ্রম করেই মিশরের লোক ক্ষেতে ফসল ফলাত। সেখানে প্রচুর পরিমাণে গম ও বার্লির চাষ হোত। শুকনো জমিতে জন্মাত অসংখ্য খেজুর গাছ।

গ্রাম ও নগর ঃ তোমাদের আগেই বলেছি যে, নীলনদ ছিল মিশরের প্রাণ। অর্থাৎ নীলনদের জলের ওপর মিশরবাসীদের জীবন নির্ভর করত। তাই, বিশেষ করে চাষের প্রয়োজনে অতি প্রাচীনকালেই নীলনদের ছই পাড়ে ছোটো ছোটো গ্রাম গড়ে ওঠে। পরে মিশরীয়রা ধাতুর যন্ত্রপাতি ও অন্তর্শন্ত তৈরি করতে শেখে, ব্যবসা-বাণিজ্য করতে শুক করে। এ সময় থেকেই গ্রামগুলো শীরে শীরে নগরে পরিণত হয়। পৃথিবীতে প্রথম নগর গড়ে ওঠে স্থমেরে, পরে মিশরে।

এ যুগে নীলনদের ছই তীর জুড়ে বেশ কয়েকটি ছোটোখাটো রাজ্য ছিল। এক রাজ্যের সঙ্গে আর এক রাজ্যের প্রায়ই যুদ্ধ-বিগ্রহত্যেত। কিছুকাল পরে মিশরের উত্তরে এবং দক্ষিণে ছটি শক্তিশালী রাজ্য গড়ে ওঠে। এরও বেশ কিছুকাল পরে, আজ থেকে প্রায় পাঁচ হাজার বছর আগে, উত্তর ও দক্ষিণ মিশর এক রাজার অধীনে আসে। এই রাজার নাম মেনেস। তিনি মিশরের বর্তমান রাজধানী কায়রোর কিছু দূরে একটি স্থন্দর নগর নির্মাণ করেন। এর নাম মেন্ফিস। মেন্ফিস ছিল মেনেসের রাজধানী।

মিশরের প্রাচীন রাজবংশ ঃ প্রাচীন মিশরে ত্রিশটি রাজবংশ রাজত্ব করেছিল। মেনেসের কয়েকশো বছর পরে মিশর একটি শক্তিশালী দেশে পরিণত হয়। প্রজারা তথন স্থা-শাস্তিতে বাস করত। দেশে শিল্প-বাণিজ্যেরও যথেষ্ট উন্নতি হয়। এ যুগের রাজাদের মধ্যে খুফু, খাপ্রে প্রভৃতির নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। মিশরের ইতিহাসে প্রায় তু হাজার বছরের এই কালকে বলা হয় 'পিরামিডের কাল'।

মেনেসের কয়েকশো বছর পরে আরব দেশ থেকে হিকসস নামে একটি যাযাবর জাতি এসে মিশর জয় করে। যুদ্ধবিভায় হিকসসরা মিশরীয়দের চেয়ে অনেক উন্নত ছিল। তারা ঘোড়ায়-টানা রথে:

তড়ে যুদ্ধ করত। কয়েকশো বছর ধরে হিকসসরা মিশরে রাজত্ব করে। ১৫৬৭ খ্রীস্টপূর্বান্ধে মিশর-রাজ প্রথম আমোসে হিকসসদের তাড়িয়ে দিয়ে মিশরে একটি নতুন রাজবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। এই সময় থেকেই মিশরের ইতিহাসে সাম্রাজ্য-যুগের শুরু হয়। আবার এ বিষয়ে তোমাদের বলব।

ফারাওঃ মিশরীয়রা তাদের রাজাকে ফারাও বলত। 'ফারাও'

শব্দটির অর্থ যিনি বড বাড়িতে বাস করেন। প্রজারা 'ফারাও'কে দেবতার মতো ভক্তি করত, মেনে চলত। ফারা-ওদের মধ্যে খুফু, খাপ্রে, তৃতীয় থুথমোস. ইখ্নাটন প্রভৃতির নাম বিশেষ উল্লেখ-যোগ্য। মিশরে ফারাও ছিলেন সর্বেস্বা। তিনি ছিলেন রাজা ও দেবতা। দেশের সব জমিজমার মালিক ছিলেন ভিনি। প্রজারা এবং অসংখ্য ক্রীতদাস তাঁর হয়ে যুদ্ধ করত, খাল কাটত, বাঁধ বাঁধত, ইমারত গড়ত।

পুরোহিতঃ সম্মান, প্রতিপত্তি বা ক্ষমতার দিক দিয়ে মিশরে কারাওদের কারাও টুটেন ধানেন

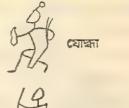


পরেই ছিল পুরোহিতদের স্থান। ফারাও নিক্ষেও তাঁদের যথেষ্ট সমীহ করে চলতেন। প্রজারা তাদের ফদলের একটি ভাগ পুরোহিতদের দিত। কাজেই পুরোহিতদের চাষের কাজ করতে হোত না। তাঁরা সব সময়ই লেখাপড়া নিয়ে থাকতেন, জ্ঞানের চর্চা করতেন। পুরোহিতরা ছাত্রদের <mark>লেখাপড়াও শেখাতেন। দেবমন্দিরের</mark> সঙ্গে একটি করে বিভালয় থাকত। পুরোহিতরা ঋতুর পরিবর্তন, আকাশের গ্রহ-নক্ষত্রের অবস্থান প্রভৃতি লক্ষ্য করতেন। আকাশে নক্ষত্রের অবস্থান লক্ষ্য করে তাঁরা বছর গণনা করতেও শিখেছিলেন। ফলে, সেই প্রাচীনকালেই মিশরে নানা জ্ঞানের উল্নেষ ঘটে। পুরোহিতরাই প্রথম লিপির বাবহার করেন।

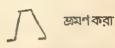
মিশরের লিপি ও লিপিকর: মিশরে খালবিল ও নদীনালার শারে প্রচুর প্যাপিরাস গাছ জন্মাত। এই প্যাপিরাসের ভাঁটা থেকে মিশরের লোক একরকমের জিনিস তৈরি করত। তার ওপর তারা

নিশরের লোক একর্মনের বিলিক বলা হয়
লিখত। মিশরের লিপিকে বলা হয়
চিত্রলিপি বা হাইরোগ্লিফিক। আসলে
এগুলো হচ্ছে নানা রকমের ছবি।
মিশরীয়রা প্রথম দিকে ছবি এঁকে
মনের ভাব প্রকাশ করত। পরে
এইসব ছবি থেকে অক্ষরের স্থাই হয়।
এ ছাড়া, মিশরের সমাধিমন্দিরগুলোর
গায়ে এবং পাথরের ফলকেও বহু লেখা
থোদাই করে রাখা হোত। ফরাসী
পণ্ডিত শাঁপোলিয়ঁ বহু চেষ্টা করে
এই লিপির পাঠোদ্ধার করেছিলেন। তার
পর থেকেই মিশরের প্রাচীন ইতিহাস
সম্বন্ধে অনেক কথা জানা গেছে।

মিশরের এই চিত্রলিপি ব্যবহার করতে জানত বিশেষ এক শ্রেণীর লোক। তাদের লিপিকর বলা হোত। সমাধি-মন্দিরের গায়ে, ফলকে ও সীলমোহরে এবং প্যাপিরাসের ওপর লেখার জন্ম বহু লিপিকরের দরকার হোত। রাজকোষ থেকে এদের ভরণ-পোষণের ব্যবস্থা করা হোত।















মিশরের হাইরোগ্লিফিক (বা চিত্রলিপি)

রাজন্ম সংগ্রাহক ও সৈনিকঃ রাজকোষ দেখাশোনার ভার ছিল হুইজন কর্মচারীর ওপর। এঁরা রাজন্ম থার্য করতেন এবং রাজন্ম আদায় করারও সব ব্যবস্থা করতেন। রাজন্ম আদায়ের জন্মে বহু কর্মচারী নিযুক্ত করা হয়েছিল। তখনও টাকা-পয়সার প্রোচলন ছিল না। কাজেই নানা রক্মের ফ্যল, ভেল, চামড়া প্রভৃতি রাজন্ম বা খাজনা বাবদ রাজকোষে জ্মা হোত।

ফারাও-এর স্থায়ী সৈম্মবাহিনী ছিল। পদাতিক সৈম্মের সংখ্যাই ছিল বেশি। যুদ্ধের সময় জোর করে কৃষকদের ধরে এনে সেনাবাহিনীতে ভর্তি করা হোত। সেনাদলকে কয়েকটি ভাগে ভাগ করে দেওয়া হয়েছিল। প্রতি ৫০০০ সৈনিকের ওপর একজন সেনাপতি থাকতেন। মিশরীয়রা হিকসসদের কাছ থেকে যুদ্ধের নতুন কৌশল শিখেছিল। ঘোড়ায়-টানা রথে চড়ে যুদ্ধ করতে শিখেছিল তারা হিকসসদের কাছ থেকেই।

যুদ্ধে সাধারণতঃ বর্শা, ঢাল, কুঠার প্রভৃতি ব্যবহার করা হোত। রাজার একটি নৌবাহিনীও ছিল। ফারাও ৩য় রামেশিসের রাজত্বকালে মিশরীয় নৌবাহিনী ভূমধাসাগরের কয়েকটি দ্বীপ অধিকার করেছিল।

বাণিজ্য: নিতাপ্রয়োজনীয় জিনিসের জন্মে মিশরীয়রা বৈদেশিক বাণিজ্যের ওপর নির্ভর করত না। মিশরে প্রচুর ফসল ফলত। মিশরে পাথরের অভাব ছিল না। কিন্তু রাজা বা দেবমন্দিরের প্রয়োজনে কতকগুলা জিনিস বিদেশ থেকে আনতেই হোত। সিনাই-এর খনি থেকে আনা হোত প্রচুর তামা আর নীলকান্ত মণি। লেবানন থেকে আনা হোত সীডার কাঠ ও রজন। ম্যালাকাইট, মণিমুক্তো, সোনা, মসলাপাতি, দামী পাথর প্রভৃতিও আমদানি করা হোত। এসব জিনিস নিয়ে আসার জন্মে কারাও রাজকোব থেকে অর্থ দিয়ে বাণিজ্যাদল পাঠাতেন বিদেশে। এইসক বাণিজ্যাদলের সঙ্গে একটি সেনাদলও থাকত। সেনাদলের কাজ ছিল বাণিজ্যাদলটিকে পাহারা দেওয়া। স্কুতরাং দেখা যাচ্ছে যে, মিশরে বাণিজ্যের প্রধান পৃষ্ঠপোষক ছিলেন স্বয়ং কারাও বা রাজা। মেসোপটেমিয়ার মতো বেসরকারী উন্তোগে ব্যবসা-বাণিজ্য মিশরে একরকম ছিল না বললেই হয়।

0

পিরামিড: পৃথিবীর আশ্চর্য জিনিসগুলোর মধ্যে মিশরের
পিরামিড একটি; মিশরকে বলা হয় পিরামিডের দেশ। সারা
মিশরে এখানে ওখানে ছড়িয়ে আছে মস্ত উচু সব পাথরে তৈরি
ক্রিকোণাকার পিরামিড। পিরামিড আসলে সমাধিমিনির।
মিশরের রাজা বা রাজবংশের কেউ যখন মারা যেডেন, তখন সেই মৃতদেহকে কবর দিয়ে রাখা হোত পিরামিডের ভেতরে। মিশরে প্রথম
পিরামিডটি তৈরি করিয়েছিলেন ফারাও দোসের। এটির নির্মাতা
ইম্হোতেপ মিশরবাসীদের কাছে আজও অমর হয়ে আছেন।
মিশরের সবচেয়ে বড়ো পিরামিডটি হচ্ছে ফারাও খুফুর সমাধি-মন্দির।

এই পিরামিডটি ৪৮/১ ফুট উচু। এক লক্ষ লোক দীর্ঘ বিশ বছর কঠোর পরিশ্রম করে এই পিরামিডটি গড়ে তুলেছিল। কায়রোর



মিশরের পিরামিড

কাছে গিজে নামে একটি জায়গায় প্রায় সাড়ে চার হাজার বছর আগেকার এই পিরামিডটি আজও দাঁড়িয়ে আছে।

পিরামিডের মধ্যে মৃত রাজার সঙ্গে নানারকমের মূল্যবান আসবাবপত্র, মণিমুক্তো, প্রচুর খাদ্য ও পানীয়, এমন কি, দাসদাসী পর্যন্ত সমাধিস্থ করা হোত। পিরামিডের ভেতরট। ছিল একেবারে রাজপ্রাসাদের মতোই। সেথানে দরবার-ঘর থেকে শুরু করে কি না ছিল।

ধর্মবিশ্বাস ঃ মিশবের লোক বিশ্বাস করত যে, মৃত্যুর পরেও মান্ত্রের জীবনের শেষ হয় না। তাই কেউ মারা গেলে তার মৃত-দেহকে যত্ন করে তারা রেখে দিত। একখণ্ড মিহি কাপড়ে অনেক-গুলো ভাঁজে জড়িয়ে এক ধরনের আরক মাখিয়ে মৃতদেহটিকে মামি করে রাখা হোত।

দেবদেবীঃ মিশরীয়রা বহু দেবদেবীর পুজো করত। রা,

•ওসিরিস, হোরাস, আইসিস প্রভৃতি ছিলেন শক্তিশালী দেবদেবী।
রা ছিলেন সূর্ধদেবতা। থিবস্ নগরে এরই নাম ছিল আমন। এ
ছাড়া, তারা বেড়াল, কুমীর প্রভৃতি জাবজন্তরও পুজো করত।

প্রধান প্রধান জীবিকাঃ প্রাচীনকালে মিশরীয় সভ্যতা যে

থুবই উন্নত ছিল তার অনেক প্রমাণ পাওয়া গেছে। ফারাওরা





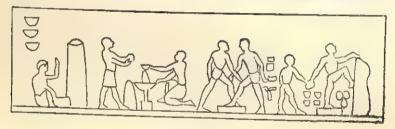


ওসিরিস



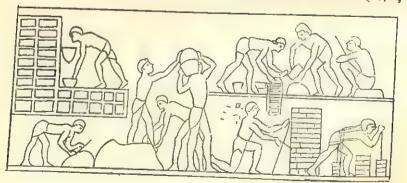
**হো**রাস

পিরামিড ছাড়াও বিশাল বিশাল দেবমন্দির, স্তম্ভ প্রভৃতি তৈরি



মিশরীয় কুমোর

করিয়েছিলেন। মিশরীয়রা ইট গেঁথে দালান তৈরি করত। স্থপতি,



মিশরের ইটখোলা

ভাস্কর, কামার, কুমোর, তাঁতী প্রভৃতি নানা শ্রেণীর কারিগর এসব
নির্মাণকার্য করত। মিশরীয়রা পাথর কেটে কেটে স্থন্দর স্থন্দর
মূর্তি গড়ত। মিশরে প্রচুর তৃলার চাব হোজ। সেই তৃলা থেকে
স্থতো কেটে তারা মিহি কাপড় ব্নত। মাটি, কাচ, সোনা ও তামা
থেকে তারা বাসনকোসন ও অলঙ্কার তৈরি করত। চামড়া ও স্থতো
বোনার কাজে তারা বিশেষ পটু ছিল। পাথর এবং কাঠের ওপর
খোদাই করার কাজেও মিশরীয়রা যথেষ্ট দক্ষতার পরিচয় দিয়েছে।
মিশরীয়রা স্থন্দর স্থন্দর জাহাজও নির্মাণ করেছিল।

## তানুশীলনী

- ১। (ক) মিশর দেশটি কোথার ? মিশরের ভূ-প্রকৃতি সম্বন্ধে কী জান ?
- (খ) মিশরের কোন্ কোন্ আংশকে নিমু মিশর এবং উচ্চ মিশর বলা হয় ?
- (গ) নীলনদ না থাকলে মিশরের অবস্থা কী হোত এবং কেন হোত ?
- (ঘ) মিশরের ওপর দিয়ে নীলনদ বয়ে যাওয়ার ফলে মিশরের কী কী লাভ হয়েছে ?
  - (৬) মিশরীয়রা বন্যার জল কী ভাবে কাজে লাগাত ?
  - (চ) প্রাচীন মিশরের সেচ-ব্যবস্থা সম্বন্ধে কী জান ?
  - (ছ) মিশরে কোন্ সময় থেকে নগর গড়ে ওঠে ?
- (জ) কোন্সময় উত্তর ও দক্ষিণ মিশর এক রাজার অধীনে আসে ? সেই রাজার নাম কী ?
  - ২। (ক) মেনেদকে ? তাঁর রাজধানীর নাম কি ?
  - (খ) হিকস্ম বলতে কাদের বোঝায়? মিশরে তারা কতদিন রাজত্ব করেছিল?
    - (গ) 'ফারাও' কাকে বলা হোত ? কথাটির অর্থ কী ?
    - (ঘ) মিশবীয় পুরোহিতদের সম্বন্ধে কী জান ?
    - (७) 'शहरताधिकिक' की ? 'भाभिताम' की ?
    - । বন্ধনীর মধা থেকে ঠিক উত্তরটি বেছে নিয়ে শূলস্থান প্রণ কর:
  - (ক) মিশরীয়রা মুদ্ধরথ ব্যবহার করতে শিখেছিল—কাছ থেকে।
    (আদিরীয়দেব/হিকসস্দের)
    - (খ) মিশরে পাথরের খুব অভাব-। (ছিল/ছিল না)
    - (গ। —পিরামিডের দেশ বলা হয়। (মিশরকে/মেসোপটেমিয়াকে)
    - (ঘ) মিশরের স্বচেয়ে বড়ো মিরামিডটি তৈরি করেছিলেন—।
      (খাপ্রে/খুফু)
    - (ঙ) —ছিলেন স্থলেবতা। (হোরাস/র।)

## ভৃতীয় পরিচেছদ সিন্ধু উপত্যকা

সভ্যতার প্রাচীনতম ছটি কেন্দ্র মেসোপটেমিয়া এবং মিশরের কথা তোমাদের বলেছি। এবার তোমাদের বলব পশ্চিম ভারতের সিন্ধু উপত্যকার কথা। মেসোপটেমিয়া এবং মিশরের মতো এথানেও স্থদূর প্রাচীনকালে একটি উন্নত সভ্যতা গড়ে উঠেছিল।

অবস্থানঃ আয়তনের দিক থেকে সিন্ধু উপত্যকাটি ছিল মেলোপটেমিয়া বা মিশর থেকে অনেক বড়ো। সিন্ধু নদের মোহানা থেকে পঞ্চনদের সমতলভূমি পর্যন্ত বিস্তীর্ণ এলাকাটি জুড়ে এই সভ্যতা গড়ে ওঠে। হরপ্পা ও মহেঞ্জোদারো নামে ছটি শহরের ধ্বংসাবশেষ মাটি খুঁড়ে পাওয়া যায়। এই ধ্বংসাবশেষ থেকেই প্রমাণ পাওয়া গেছে যে, আজ থেকে পাঁচ হাজার বছর আগে এই অঞ্চলে একটি



উন্নত সভ্যতা গড়ে উঠেছিল। হরপ্পা শহরটি পাঞ্জাবে, সিন্ধুনদের একটি শাখা ইরাবতীর তীরে। জায়গাটি বর্তমানকালের লাহোর থেকে প্রায় একশো মাইল দক্ষিণ-পশ্চিমে। মহেঞ্জোদারো সিন্ধু-নদের তীরে, পাকিস্তানের করাচী থেকে প্রায় ২০০ মাইল উত্তরে। হরপ্পা ও মহেঞ্জোদারোর মধ্যে দূরত্ব প্রায় চারশো মাইল। তবুও নগর হৃটির মধ্যে নানা দিক থেকে মিল আছে। পণ্ডিতেরা মনে করেন যে, নগর হৃটি ছিল একই রাজ্যের হৃটি রাজধানী, হরপ্লা উত্তরাঞ্চলের ও মহেঞ্জোদারো দক্ষিণাঞ্জের।

সিন্ধু সভ্যতার আবিকারঃ হরপ্পা ও মহেঞ্জোদারোতে যে-সভ্যতার চিহ্ন থুঁজে পাওয়া গেছে, তাকেই বলা হয় সিন্ধু সভ্যতা। এই সভ্যতা আবিকারের জন্মে বাজালী প্রত্নতত্ত্বিদ রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় এবং ভারতীয় প্রত্নতত্ত্ববিভাগের তথনকার অধিকর্তা জন মার্শালের নাম চিরম্মরনীয় হয়ে থাকবে। ১৯২১ খ্রীস্টান্দে রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় সিন্ধুপ্রদেশের মহেঞ্জোদারোতে মাটি খুঁড়ে একটি প্রাচীন শহরের ধ্বংসাবশেষ আবিকার করেন। 'মহেঞ্জোদারো' কথাতির অর্থ 'মড়ার চিবি'। মহেঞ্জোদারো ও হরপ্পার ধ্বংসাবশেষের মধ্যে পাওয়া জিনিসপত্রের আশ্চর্য মিল রয়েছে।

প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শনঃ হরপ্পা এবং মহেঞ্চোদারোতে মাটি খুঁড়ে যেসব জিনিসপত্র পাওয়া গেছে তার মধ্যে নানা আকারের কতকগুলো

সীলমোহর বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

এই সীলমোহরগুলোতে

জীবজন্ত ও বৃক্ষদেবতার ছবি
আছে। আর আছে একরকম

চিত্রলিপি যার পাঠ আজও
পর্যন্ত উদ্ধার করা সম্ভব হয় নি।

এখানে সোনা, রূপা ও নানা





দীল**ে**শহর

নারীমূর্ভি



মহেঞ্জোদারোর রঙীন মাটির পাত্র

রকম মূলাবান ধাতুর অলঙ্কার এবং
পদারাগমণি, নীলকাস্তমণি প্রভৃতি
মূলাবান পাথর পাওয়া গেছে। অস্ত্রশস্ত্রের মধ্যে পাওয়া গেছে কুডুল, ছোরা,
তীর-ধন্তক, গদা প্রভৃতি। এ ছাড়া,
পাওয়া গেছে, নানা রকম কারুকার্য
করা মাটির বাসনকোসন ও খেলনা।
দিল্লু উপত্যকার লোক পুঁতির গায়ে
জন্তু-জ্ঞানোয়ারের মূর্তি ফুটিয়ে তুলত।
এরকম বহু পুঁতি পাওয়া গেছে।

জন্তু-জানোয়ারের মৃতি দিয়ে বাচ্চাদের থেলনাও তৈরি হোত। আর পাওয়া গেছে মাটির তৈরি অজন্ত্র নারীমৃতি এবং তিনমুখবিশিষ্ট কয়েকটি শিবমৃতি। হরপ্লায় শিবলিক্লের মতো কতকগুলো পাথরও পাওয়া গেছে।

হরপ্পা এবং মহেজ্ঞাদারো ছাড়াও আশেপাশের কভকগুলো ঢিবি
থুঁড়েও গ্রাম-বসভির চিহ্ন খুঁজে পাওয়া গেছে। এরকম ঢিবি থোঁড়া
হয়েছে বোলান গিরিপথের করেকটি জায়গায়, সিন্ধু প্রদেশের
আমরিতে, বেলু চিস্তানের নাল নদীর উপত্যকায়, দক্ষিণ বেলু চিস্তানের
কুল্লিতে, মাশ্ কাই নদীর উপত্যকা মেহিতে এবং কেজ্ নদীর
উপত্যকা শাহী টুম্পে। এই বিস্তার্ণ এলাকার মানুষ মাটির পাত্র তৈরি
করে পুড়িয়ে নিত, সাধারণতঃ পাথরের হাতিয়ার ব্যবহার করত;
তবে, অল্পবিস্তর তামার ব্যবহার জানত। এরা পাথর বা কাদামাটি
দিয়ে ঘর-বাড়ি তৈরি করত।

নগর পরিকল্পনাঃ মহেজোদারো ও হরপ্পার ধ্বংসাবশেষ থেকে একটা জিনিস স্পষ্ট বোঝা যায় যে, সিম্মু ও পাঞ্জাবের লোক তথন নগরে বাস করতে বিশেষ অভান্ত ছিল। তুটি নগরই রীভিমতো পরিকল্পনা করে গড়ে তোলা হয়েছিল। আর এই তুই নগরের পাশে গড়ে উঠেছিল বেশ কয়েকটি আধা-শহর। ইরাবতী নদীটি হচ্ছে সিম্মু নদেরই একটি শাখা। এই ইরাবতী নদীর তীরেই প্রাচীনকালে হরপ্পা নগরটি গড়ে ওঠে। পণ্ডিতদের ধারণা যে, ৩০০০ খ্রীসটপূর্বাবেশ ইরাবতী নদীতে থ্ব বত্যা হোজ। সেই বত্যার হাত থেকে হরপ্পাকে বাঁচাবার জন্তে নগরের পশ্চিম দিকে একটি বড়ো বাঁধ তৈরি করা হয়। সেটিকে দেখতে অনেকটা তুর্গপ্রাকারের মতো। হেজোদারোর পশ্চিম দিকেও ঠিক এমনি একটি বাঁধ তৈরি করা হয়েছিল। প্রাচীনকালে মহেজোদারো নগরটি সিম্মু নদের প্লাবনে কয়েকবার ভূবে গিয়েছিল।

(3

হরপ্প। আর মহেঞ্জোদারোর রাস্তাঘাট ও ঘরবাড়ি নির্মাণ করা হয়েছিল একই রকমের পরিকল্পনা অনুদারে। রাজপথগুলো টানা-টানা ও দিখে এবং বেশ চওড়া। তুটি নগরই কয়েকটি এলাকাতে ভাগ করা হয়েছিল। মহেঞ্জোদারোও এরকম কয়েকটি এলাকায় বিভক্ত ছিল। এখনকার গ্রাম বা শহরে ষেমন পাড়া, এ যেন ঠিক তাই। শহর তুটিতে চওড়া রাস্তা তো ছিলই, তা ছাড়া ছিল অনেক অলিগলি।

তৃটি নগরের কোথাও পাথরের বাড়ি পাওয়া যায় নি, সবগুলো বাড়িই পোড়া ইট দিয়ে তৈরি করা হয়েছিল। রাস্তার ত্র'পাশে সারি সারি বাড়ি, বাড়িগুলোর কোনোটাই এলোমেলো ও খাপছাড়া নয়। প্রত্যেক বাড়ির সামনের দিকে একটি চৌকোণা উঠোন আর উঠোন পেরোলেই চারদিক থিরে কয়েকটি কোঠা। বাড়িতে ঢোকার পথটি সদর রাস্তা দিয়ে নয়, পাশের গলি দিয়ে। কোঠাগুলোর কোনোটাতেই রাস্তার দিকে জানালা নেই। দেওয়ালের ভেতর দিকটা মাটি দিয়ে লেপা। বাড়িগুলো শুরু একতলাই নয়, দোতলা, তেতলা, হয়তো আরও উচু ছিল। প্রত্যেক বাড়িতেই ছাদে ওঠার সিঁড়ি আছে।

সব বাড়িতেই রায়ার ঘর, স্নানের ঘর, বদার ঘর প্রভৃতির আলাদা আলাদা বাবস্থা। স্নানঘর থেকে ময়লা জল বাইরে রাস্তার নর্দমায় গিয়ে যাতে পড়ে, তার জত্যে স্নানঘরে নর্দমার ব্যবস্থা ছিল। রাস্তার বড় বড় নর্দমা দিয়ে শহরের ময়লা জল বেরিয়ে য়েত। এই নর্দমাথলো ছিল ঢাকা, তবে মাঝে মাঝে ইটে গাঁথা ম্যানহোল আছে।
নর্দমাগুলো নিয়মিভভাবে পরিকার করার জত্যে কি স্থন্দর ব্যবস্থা!
প্রত্যেক বাড়ির দেওয়ালে ইট দিয়ে ডাস্টবিন গেঁথে তোলা হোত।
বাড়ির মধ্যেও কেন্ত রেখানে সেখানে আবর্জনা ফেলত না, সব জড়ো
করত বাড়ির ডাস্টবিনে। আজকের দিনেও ক'টা শহরে আমরা
এটা দেথি ? হরপ্লা ও মহেজ্রোদারোর ধ্বংসাবশেষ থেকে বোঝা যায়,
একটি স্থন্দর পরিকল্পনা-অনুযায়ী শহর ছ'টিকে গড়ে তোলা হয়েছিল।
আর এই নগর পরিকল্পনা করেছিল বর্তমান কালের করপোরেশন বা
মিউনিসিপ্যালিটির মতো কোনো পৌরসংস্থা। তা ছাড়া, এমন
সাজানো-গোছানো শহর কোনোমতেই গড়ে উঠতে পারে না।

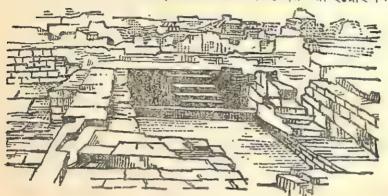
10

হরপ্পা ও মহেঞ্জোদারোতে বড়ো, মাঝারি, ছোটো প্রভৃতি নানা মাপের বাড়ি তৈরি হয়েছিল। মনে হয়, বড়ো মাপের বাড়িগুলোতে ধনীরা বাস করত, মাঝারি মাপের বাড়িতে মধ্যবিত্তেরা। তুই কামরার ছোটো ছোটো কুঠ্রিতে থাকত গরীবশ্রেণীর লোক।

নগরবাসীদের পানীয় জলের ব্যবস্থা করা হয়েছিল কুয়ো কেটে।

কুয়োর পাড় ইট দিয়ে বাঁধানো। কয়েকটি কুয়োর পাশে অসংখ্য খুরি ছড়ানো। মনে হয়, খুরিতে জল খেয়ে পরে সেটাকে ফেলে দেওয়া হোত।

মহেঞ্জোদারোতে মস্ত বড়ো একটি স্নানাগার তৈরি করা হয়েছিল।



मरहरक्षानारतात वृह९ श्रामाशाव

স্নানাগারটি দেখতে অনেকটা চৌবাচ্চার মতো। লম্বায় ৪০ ফুট,



রাস্তা ও রাস্তার নীচের পয়ঃপ্রণালী ( মহেঞ্জোদারো )

চওড়ায় ২৪ ফুট এবং ৮ ফুট গভীর। চৌবাচ্চাটির ভেতর দিকে চারপাশ ইট দিয়ে স্থলর করে বাধানো। জল যাতে বেরিয়ে যেতে না পারে তার জত্যে এই বাবস্থা। এক কোণে একটি ফুটোর সাহায্যে জল বের করে দেওয়ারও বাবস্থা ছিল। চৌবাচ্চাটিকে ঘিরে সারি সারি কামরা ছিল। অনেকের মতে, এসব কামরায় পুরোহিতরা থাকতেন। মহেঞ্জোদারোর লোক চৌবাচ্চার জলকে পবিত্র বলে মনে করত।

মহেঞ্জোদারোতে একটি মস্ত বড় দালানের নিদর্শন পাওয়া গেছে। দালানটি যেমন লম্বা, তেমনি চওড়া। অনেকের মতে, এটি ছিল রাজপ্রাসাদ। আবার দালানটি কতকগুলো কামরায় ভাগ করা বলে অনেকের মতে এটা একটা আশ্রম।

হরপ্লায় মস্ত বড়ো একটি শস্তভাগুার তৈরি করা হয়েছিল।
নগরটি মাঝে মাঝে বক্সার কবলে পড়ত। তাই ইট গেঁথে গেঁথে উচু
একটি ভিত তৈরি করে তার ওপরে এই শস্তাগারটি নির্মাণ করা
হয়েছিল।

শস্তাগারের কাছেই ছিল শস্তা পেষাই করার জন্মে ইটে-গাঁথা গোল গোল চত্ত্বর, আর এক দিকে কামারশালা। শহর তৃটির পরিকল্পনা দেখেই বোঝা যায় যে, তথন সিন্ধু উপত্যকার একটা সমৃদ্ধির যুগ চলছিল। অধিবাসীরা চাষবাস ও ব্যবসা-বাণিজ্য করে তাদের অর্থ নৈতিক অবস্থাকে উন্নত করে তুলেছিল।

0

খাগুদ্রব্য ও অন্যান্ত ব্যবহার্য দ্রব্য ঃ সেকালের সিন্ধু উপতাকার বিস্তীর্ণ অঞ্চল জুড়ে সিন্ধুনদের প্লাবন হোত। প্লাবনের জল সরে গেলেই জমির ওপরে পলিমাটি জমত। ফলে জমিতে মিশর ও মেসোপটেমিয়ার মতোই প্রচুর ফলন হোত। খাগুশস্তোর মধ্যে ছিল গম, বার্লি, ধান, তিল, মটর ও নানা রকমের শাকসজ্ঞি। অধিবাসীরা মাছ, মাংস, ডিম, তুধ প্রভৃতি খেত। ফলের মধ্যে খেজুর ও তরমুক্তই ছিল প্রধান। সিন্ধু উপত্যকার প্রধান উপজীবিকা ছিল কৃষি ও পশুপালন। গৃহপালিত পশুদের মধ্যে ছিল যাঁড়, মহিষ, শৃয়োর, ভেড়া, কুকুর, বেড়াল, গাধা, হাতি প্রভৃতি। হরপ্লাতেই প্রথম মুর্গী পালন হয়েছিল। হরপ্লা ও মহেজ্ঞোদারোর স্ত্রীলোকেরা খুবই সৌখিন

ছিল। তারা চুলে থোঁপা বাঁধত; কানে, গলায় ও হাতে নানা রকম অলঙ্কার পরত। পুরুষদের তুলনায় মেয়েরা থাটো পোশাক পরত। পুরুষরাও অলঙ্কার পরত এবং মেয়েদের মতে। লগা চুল রাখত। পুরুষদের অলঙ্কারের মধ্যে ছিল হার, আংটি ও বাজুবক। সোনা,



백건경11

রূপা, মূল্যবান পাথর, হাতির দাঁত ও ঝিকুক প্রভৃতি দিয়ে জত্রীরা অলঙ্কার তৈরি করত। সোনা, রূপা প্রভৃতি দিয়ে হরপ্পার লোক একরকম পুঁতি তৈরি করত। পুঁতিগুলার গান্তে জল্প-জানোগ্নারের ছবি আঁকা হোত। সিন্ধু উপত্যকার লোক প্রসাধন-সাম আও ব্যবহার করত। মেহির কবরখানা থেকে ব্যোজের তৈরি ডিখাকৃতি আয়না ও হাতির দাতের তৈরি নানা আকারের চিক্তনি পাওয়া গেছে।

আসাবাবপত্রের মধ্যে কাঠের চেয়ার, চৌকি প্রভৃতি পাওয়া গেছে। আর পাওয়া গেছে নানারকমের পাত্র, কোনোটা মাটির তৈরি, কোনোটা তামা বা ব্রোঞ্জের। তামা ও ব্রোঞ্জের হাতিয়ারের পাশাপাশি পাথরের হাতিয়ারও পাওয়া গেছে। তামা, ব্রোঞ্জ ও হাতির দাতের তৈরি মূচ ও তুরপুনও পাওয়া গেছে।

শিল্পঃ দিক্কু উপতাকায় প্রচুর তৃপার চাষ হোত। অধিবাদীরা তৃসা থেকে কাপড় ব্নত। স্থাতার কাপড় বোনার কাজে তারা যথেষ্ট পারদর্শী ছিল। কাপড়ে রং করতেও তারা জানত। সিন্ধু উপত্যকার কুমোর চাকের সাহায্যে নানা রকম মাটির বাসন-কোসন ও পাত্র তৈরি করত। পাত্রগু:লার ওপরে জীবজন্তুর ছবি আঁকা হোত। হরপ্পা রাজ্য থেকে ছ'হাজারেরও বেশি সীলমোহর পাওয়া গেছে। চৌকোণা নরম পাথরের ওপর ছবি ও লেখা খোদাই করে দীলমোহরগুলো তৈরি করা হোত। বণিকরা এসব সালমোহর বাবহার করত। স্ত্রাং পাথর থেকে দীলমোহর তৈরি করার কাজেও একদল মানুষ নিযুক্ত থাকত।

ছুতোরের কাজের নমুনাও মাটি খুঁড়ে পাওয়া গেছে, যেমন, কাঠের আসবাবপত্র। তুই চাকার গোরুর গাড়ি ছিল স্থলপথের যানবাহন। হরগ্লায় যে-করাত তৈরি হোত, তা ছিল সকলের সেরা।

ধাতুর কারিগরেরা তামা ও ব্রোঞ্জ দিয়ে নানা রকম জিনিস তৈরি করত। ব্রোঞ্জের কাজ জানত বলেই স্থারের থেকে সিন্ধু সভাতাকে আরও উন্নত বলে মনে করা হয়। সিন্ধু উপত্যকার কারিগর সীসার ব্যবহারও জানত। স্থতরাং দেখা যাচ্ছে যে, নানাবিধ শিল্পের কাজেও সিন্ধু উপত্যকাবাসীরা দক্ষতা অর্জন করেছিল। তবে মাটির বা ধাতুর পাত্রের নির্মাণ-কৌশল, স্ক্ষ্মতা ও সৌন্দর্যের দিক দিয়ে স্থামরের শিল্পীদের মান ছিল উচু।

0

বাণিজ্য: সিন্ধু উপত্যকার অধিবাসীরা ভারতের বিভিন্ন আংশের সঙ্গে লেনদেন করত, আবার দূর দূর দেশের সঙ্গে বাবসা-বাণিজ্য করত। একদিকে যেমন কৃষি, অপরদিকে তেমনি বাণিজ্যের মাধামে দেশে সমৃদ্ধি এসেছিল। সিন্ধু উপত্যকায় ঝিনুক ও কয়েক শোধামে দেশে সমৃদ্ধি এসেছিল। সিন্ধু উপত্যকায় ঝিনুক ও কয়েক শোধামে দেশে সমৃদ্ধি এসেছিল। সিন্ধু উপত্যকায় ঝিনুক ও কয়েক শোধাম দেশে সমৃদ্ধি এসেছিল। সিন্ধু উপত্যকায় বেকে; আর নীলকান্তমণি প্রভৃতি আসত পারস্থ ও আফগানিস্তান থেকে; আর নীলকান্তমণি প্রভৃতি আসত পারস্থ ও আফগানিস্তান থেকে; আর তামা আসত রাজস্থান বা পারস্থ থেকে। হয় তিব্বত, নয় মধ্য তামা আসত রাজস্থান বা পারস্থ থেকে। হয় তিব্বত, নয় মধ্য এশিয়া থেকে আসত জেড্ পাথর। স্থুমের, এলাম, মিশর, ক্রীট প্রভৃতি দূর দূর দেশের সঙ্গে বাবসা-বাণিজা চলত। সিন্ধু উপত্যকায় থেভিতি দূর দূর দেশের সঙ্গে বাবসা-বাণিজা চলত। সিন্ধু উপত্যকায় যে-স্থুতোর কাপড় তৈরি হোত, তা যেত দেশ-বিদেশে, বিশেষ করে মেগোপটেমিয়ায়।

নেবোরটোশরার।
দেবদেবী ও ধর্মবিশ্বাসঃ হরপ্পা বা মহেজোদারোর কোথাও
মন্দির পাওয়া যায় নি। তবে পশুপতি বা শিব এবং মাতৃকাদেবীর

মতো বহু মূর্তি পাওয়া গেছে। ফদল ফলাবার জন্মে নানা রকম আচার-অনুষ্ঠানের নিদর্শন সীলমোহরগুলোতে পাওয়া গেছে।



করেকটি সীলমোহরের ছবি থেকে দেখা যায় যেন বাঁড়কে উপাসনা করা হচ্ছে। হিন্দুধর্মে বাঁড় শিবের বাহন। হরপ্লার লোক বৃক্ষদেবভার ও আগুনের পুজোও করত।

মৃতদেহকে কবর দেবার প্রথা ছিল। এ ব্যাপারে মিশরীয়দের বিখাসের সঙ্গে অনেকটা মিল

দেখা যায়। হরপ্লায় কবরের মধ্যে মৃত ব্যক্তির গন্ধনাগাঁটি, প্রদাধনের সরঞ্জাম, খাত্যদ্রব্য প্রভৃতি রেখে দেওয়া হোত।

সমাজে বিভিন্ন শ্রেণীঃ সিন্ধু উপত্যকার মান্ত্রের লিখিত ইতিহাস বসতে বোঝায় সীলমোহরের চিত্রলিপি। এ ছাড়া, সে যুগের আর কোনো লিখিত দলিল নেই। ফলে তথনকার সমাজে বিভিন্ন শ্রেণী ছিল কিনা, এ বিষয়ে কোনোও প্রত্যক্ষ প্রমাণ নেই। তবে প্রত্তাত্ত্বিক নিদর্শনগুলো থেকে এ বিষয়ে অনুমান করা চলে।

পণ্ডিতদের ধারণা, হরপ্পা ও মহেঞ্জোদারোতে চার শ্রেণীর লোক বাদ করত। পুরোহিত, চিকিৎসক এবং জ্যোভিবিদরা ছিলেন সমাজের সবচেয়ে ওপরের তলায়। এদের নিচেই ছিল দ্বিতীয় শ্রেণী, যাদের পেশা ছিল যুদ্ধবিছা ও অন্ত্র চালনা করা। বণিক, তাঁতী, ছুভোর, কামার, কুমোর, রাজমিন্ত্রি প্রভৃতি নিয়ে ছিল তৃতীয় শ্রেণী। আর সকলের তলায় ছিল অসংখ্য মানুষ। চাষী, মজুর, জেলে, চাকর-বাকর, এরা সব ছিল চতুর্থ শ্রেণীর লোক। চামড়া দিয়ে যারা নানা রকম জিনিদ তৈরি করত, তাদেরও এই শ্রেণীতে কেলা যায়।

সীলমোহরের চিত্রলিপিগুলো কাদের রচনা ? লেখাপড়া-জ্ঞানা লোক ছাড়া একাজ করা সম্ভব নয়। সম্ভবত পুরোহিতরাই একাজ করতেন; তাঁরা রাজকার্ষেও অংশগ্রহণ করতেন। হরপ্পা এবং
মহেঞ্জোদারোর হুর্গপ্রাকারের ওপর ছোটো ছোটো কামরাগুলো কি
উদ্দেশ্যে তৈরি করা হয়েছিল? ওখান থেকে কি নগরকে পাহারা
দেওয়া হোত ? কারা দিত ? ভারী ভারী তরবারি আর গদা কারা
ব্যবহার করত ? অনুমান করা হয় যে, সৈনিক বা যোদ্ধারা নগর
প্রহরার কার্ষে নিষ্কু থাকত। পরবর্তী কালের বৈদিক সমাজে
ক্ষব্রিয় বা রাজন্যদের সঙ্গে এদের তুলনা করা যায়। এদের নিয়েই
ছিল দ্বিভীয় শ্রেণীটি। অসংখ্য মাটির পাত্র ও ক্লুদে ক্লুদে নারীমূর্তি,
গোক্রর গাড়ির চাকা, চৌকি আর আসবাবপত্র, তামা ও ব্রোপ্তের
হাতিয়ার, সীল্মাহর প্রভৃতি তৈরির কাজে জনসংখ্যার একটা মোটা
অংশই নিয়ুক্ত ছিল। এরাই ছিল সমাজের তৃতীয় শ্রেণীর লোক।
বৈদিক ষ্গের বৈশ্যদের সঙ্গে এদের সাদৃশ্য আছে। আর সকলের
তলায় ছিল থেটে-খাওয়া গরীব মানুষ।

### অনুশীলনী

- ১। নীচের প্রশ্নগুলোর উত্তর দাও:
- (ক) পিন্ধু উপতাকা বলতে কোন্ জায়গাটিকে বোঝায় ?
- (খ) হরপ্লা ও মহেজ্ঞোদারে কোথায় অবস্থিত ?
- (গ) সিন্ধু সভাতার আবিস্কার করেছিলেন কে বা কারা ?
- (খ) হরপ্পা এবং মহেজ্ঞোদারো থেকে কী কী প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন পাওয়া গেছে ?
- (७) गरहरक्षानारतात्र नगत-পतिकल्लना महस्त की जान ?
- (চ) দিলু উপতাকায় কী কী চাষ ংগত ?
- (ছ) সিকু উপতাকার লোক কী কী খেত ?
- (জ) সিয়ু উপত্যকার কারিগরর। কোন কোন জিনিস তৈরি করত ?
- (ঝ) সিদ্ধু উপতা**কার** লোক কোন্কোন্দেশের সঙ্গে বাবসা-বা**ণিজ্য** করত ?
- (ঞ) দিন্ধু উপতাকাবাদীদের দেবদেবী সম্বন্ধে কী জান ?
  - (ট) সিন্ধু উপত্যকার অধিবাসীদের ক টি শ্রেণীতে ভাগ করা যায় ? কী কী শ্রেণী ?

- ২। শুদ্ধ করে লেখ:
- (क) আয়তনের দিক থেকে সিন্ধু উপত্যকাটি ছিল মিশর থেকে অনেক ছোটো।
- (খ) মহেঞ্জোদারো নগরটি ছিল ইরাবতী নদীর তীরে।
- (গ) পিন্ধু উপতাকায় দালমোহর দালানকোঠার ছবি আছে।
- (ঘ) সিরু সভাতার জনা হয়েছিল ৬০০০ খ্রীফিপ্রান্দে।
- (ও) হরপ্পা এবং মহেজোদারোর রাস্তাঘাটগুলো ছিল সরু সরু।
- (চ) মতেজাদারো নগরটিতে গরীবের বাস ছিল না।
- (ছ) সিন্ধু উপত্যকার লোক অলম্বার পরত ন।।
- (জ) সিরু উপতাকার লোক বোঞ্জের ব্যবহার জানত না।
- ৩। শৃন্যস্থান পুরণ কর:
- ক) দিয়ু উপতাকার লোক ওপরে জন্তু-জানোয়ারের ছবি ফুটিয়ে
  তুলত। (হাতিয়ারের/পুঁতির)
- (ব) সিন্ধু উপতাকা থেকে যে-জিনিসটি সবচেয়ে বেশি বিদেশে রপ্তানি হোত তা হোল —। (খেলনা/সুতোর কাপড়)
- -(গ) প্রথম মুরগী-পালন শুরু হয় —। (মিশরে/সিন্ধু উপতাকায়)
- (ঘ) সিন্ধু উপতাকায় স্থলপথের যানবাহন ছিল —। (গোরুর গাড়ি/ ঘোড়ার গাড়ি)
- (ভ) ব্রোঞ্জের ব্যবহার আবে হয়েছে —। (মেদোপটেমিয়ায়/সিকু উপতাকায়)

## চভুৰ্থ পরিচেছদ চীন

হোয়াংহো ও ইয়াংসিকিয়াং নদীর উপত্যকাঃ এবার তোমাদের প্রাচীন সভাতার আর একটি কেন্দ্র চীনের কথা বলব। চীন একটি বিশাল দেশ। সভাতার আর তিনটি কেন্দ্রের মতো এখানেও সভাতার জন্ম হয়েছিল বড় নদীর কৃলে। চীনে ছটি নদী হোয়াংহো ও ইয়াংসিকিয়াং খুবই বড়। এই ছই নদীর উপত্যকায় আজ থেকে প্রায় চার হাজার বছর আগে নগরের উদ্ভব হয়।

আজ থেকে হাজার হাজার বছর আগেই চীনে মানুষ বাস করত।
চীনের চাউ-কাউ-তিয়েন গ্রামে আদিম মানুষের অস্তিছের প্রমাণ
পাওয়া গেছে। এদের বলা হয় পিকিং-মানুষ। এদের আবির্ভাব
হয়েছিল পুরনো পাথর-যুগে। আবার উত্তর চীনের একটা বিস্তীর্ণ
অঞ্চলে নতুন পাথর-যুগের বহু প্রত্নতান্তিক নিদর্শন পাওয়া গেছে।
ব্রোঞ্জ যুগে এখানেই নগর গড়ে উঠেছিল। তবে স্থমেরীয় বা মিশরীয়
অথবা সিন্ধু উপত্যকার সভ্যতার মতো চীনের সভ্যতা অত পুরনো
নয়।

হোয়াংহো নদীতে ভয়য়র বতা হোত। প্রচুর বর্ষণের পরে রৃষ্টির জল নদীর হটি কৃল ছাপিয়ে আশেপাশের বিস্তীর্ণ এলাকা ভাসিয়ে দিত। এতে মালুষের কত যে ক্ষতি হোত, তা বলে শেষ করা যায় না। বতার জলে মালুষের ঘরবাড়ি, ক্ষেত্থামার, গরুবাছুর সবই ভেসে যেত। বতার পরে হোয়াংহো কথনও কথনও গতি পরিবর্তন করে নতুন খাতে বইতে শুরু করত। নদীর এই খামখেয়ালীর সঙ্গেপাল্লা দিতে পারা কি সহজ কথা। হোয়াংহো নদী ভাই চীনাদের অশেষ তৃঃথের কারণ হয়ে দাঁড়িয়েছিল।

প্রাচানকাল থেকেই চীনারা কিন্তু বন্থা রোধ করার জন্মে নানা চেষ্টা করেছে। সভ্যতার আর তিনটি কেন্দ্রের মতো চীনের মানুষও জঙ্গল কেটে সাফ করে, বাঁধ বেঁধে, খাল কেটে বন্থার জলকে চাষের কাজে লাগিয়েছিল। চীনে বন্থা রোধের কাজে সফল হয়ে 'উ' খুবই জনপ্রিয় হয়ে উঠেছিলেন। চীনারা বলে, "উ না থাকলে আমরা মাছ হয়ে ঘূরতাম।" 'উ' হোয়াংহো নদীতে বাঁধ তৈরি করে বস্থার কবল থেকে তাঁর দেশকে বাঁচিয়েছিলেন। এজন্মে নানা পৌরাণিক কাহিনীর মধ্যে তাঁর কীর্তি অক্ষয় হয়ে আছে।

চীনের প্রাচীন ইতিহাসঃ ভারতের মতো চীনেও প্রাচীন যুগে ইতিহাস লেখার রেওয়াজ ছিল না। কাজেই চীনের প্রাচীন ইতিহাস সম্বন্ধ বিশেষ কিছুই জানা যায় না। সেখানে প্রকৃত ইতিহাস লেখা হয়েছে অনেক পরে। ফলে, প্রাচীন ইতিহাসের মধ্যে অনেক আজগুবি কাহিনীও স্থান পেয়েছে। চীনের আদি মানুষ পান-কুর কাহিনীটিও এমনিতরো আজগুবি। পান-কু আঠারো হাজার বছর পর্যন্ত বেঁচেছিলেন। তিনিই নাকি পৃথিবী, বায়ু, মেঘ, বজ্র, নদী, মানুষ প্রভৃতি সৃষ্টি করেছেন।

পান-কুর পরে ফুসি, শেন-মুড, ত্য়াং-তি, ইয়া-ও এবং সুন্ নামে পাঁচজন সাধু রাজা পর পর চীনে রাজত করেন। চীনাদের মাছ ধরা, রেশমের কাপড় বোনা, গান গাওয়া, ছবি আঁকা, লেখাপড়া শেখা প্রভৃতি শিথিয়েছিলেন ফুসি। লাক্ষল দিয়ে জমি চায়, ব্যবসাবাণিজ্য প্রভৃতি করতে শিথিয়েছিলেন রাজা শেন-মুড্। চীনারা গোরুর গাড়ি আর চুম্বকের ব্যবহার শিথেছিল ত্য়াংতির কাছ থেকে। প্রথম ইটের দালান ও মানমন্দির তৈরি হয়েছিল তাঁরই আমলে। চতুর্থ রাজা ইয়া-ও ছিলেন খ্বই ধার্মিক। পঞ্চম রাজা সুন্ তাঁরই এক যোগ্য কর্মচারীকে রাজপদে মনোনীত করলেন। এঁর নাম 'উ'। ইনি সিয়া নামে একটি নতুন রাজবংশের প্রতিষ্ঠা করেছিলেন। আসলে সিয়া (সভ্য) হোল চীনের প্রথম রাজবংশ।

রাজা 'উ'-এর কথা ছড়িয়ে আছে চীনের বহু পৌরাণিক কাহিনীতে। হোয়াংহো নদীতে বাঁধ বেঁধে তিনি তাঁর দেশবাসীকে অশেষ তৃঃধক্ষ্টের হাত থেকে বাঁচিয়েছিলেন। অসাধারণ উদ্ভাবনী শক্তির দারা তিনি কয়েকটি পাহাড় কেটে হ্রদ নির্মাণ করেন। বহার জল তারপর থেকে হুদে এদে আট্কা পড়ে যেত, মান্তুষের ক্ষতি করতে আর পারত না। চীনের মানুষ এজন্মে আজও 'উ'-কে শ্রানার সঙ্গে শ্বরণ করে। 'উ'-এর পর থেকেই রাজপদ বংশানুক্রমিক হয়ে পড়েছিল। অর্থাৎ কোনো রাজার মৃত্যু হলে তাঁর ছেলেই সিংহাসনে বসতেন। প্রায় সাড়ে চারশো বছর ধরে সিয়া বংশের রাজারা রাজত করেন। চীনের দ্বিতীয় রাজবংশের নাম শাং বংশ। এই বংশের প্রতিষ্ঠা করেছিলেন তাঙ্। এই শাং (বা য়িন) বংশের্ কথা তোমাদের পরে বলব।

প্লাবনঃ চীনাদের জীবনে প্লাবন একটা উল্লেখযোগ্য অংশ অধিকার করে আছে। প্লাবন যেমন এক দিকে তাদের হুর্দশার কারণ, অন্থ দিকে তেমনি তাদের জীবনধারণের উপায়ও বটে। প্লাবনের জলে ভেজা হোয়াংহো উপত্যকার লোয়েস মাটিতে কসল খুব ভাল ফলে। এসব কারণে চীনে প্লাবন নিয়ে বহু পৌরাণিক কাহিনী রচিত হয়েছে। এরকম অনেক কাহিনী বা অতিকথার মধ্যে একটি মানুষের কথা বিশেষ করে বলা হয়েছে। তিনি হলেন 'উ'। তাঁর বাবার নাম কুন। তা হলে কাহিনীটি তোমাদের বলি।

একবার বন্থা রোধ করার দায়িত পড়েছিল কুনের ওপর। অনেক ভেবে-চিন্তে কুনে চলে গেলেন স্বর্গে আর সেখান থেকে চুরি করে নিয়ে এলেন এক তাল জীবন্ত মাটি। তারপর সেই মাটি দিয়ে নদীতে বাঁধ তৈরি করলেন। কিন্ত বাঁধ যতই উচু করলেন, জলও তত উচু হোল। স্বর্গের মাটি দিয়েও কুন বাঁধ তৈরি করতে পারলেন না। ওদিকে দেবলোক থেকে মাটি চুরি করার অপরাধে তাঁর হোল প্রাণদণ্ড। তিন-তিনটে বছর তাঁর সেই মৃতদেহ পড়ে রইল এক পাহাড়ের উপর; তা এতটুকু বিকৃত হোল না। শেষে একদিন তাঁর দেহ তরবারি দিয়ে কাটা হলে, দেহ থেকে বেরিয়ে এল তাঁর পুত্র 'উ'।

বড়ো হয়ে 'উ' তাঁর পিতার অসম্পূর্ণ কাজে হাত দিলেন। ভূত-প্রেত-পরী আর জলজন্তদের সাহায্য নিয়ে বহু বছরের চেষ্টায় তিনি নদীতে মস্ত বড়ো বাঁধ বাঁধলেন। বছাও নিয়ন্ত্রিত হোল। 'উ'-এর এই প্রশংসনীয় কাজের ফলে পৃথিবী মানুষের বাসযোগ্য হোল। মানুষ কৃষিকাজ করতেও শিখল। অতিকথার বাইরের দিকটা বাদ দিয়ে যদি আমরা বলি যে 'উ' দেবতা বা অতিমানব নন, তা হলে ক্ষতি কি ? তাঁর উদ্ভাবন করার শক্তি ছিল অসাধারণ। বাঁধ বাঁধার কাজে তাঁকে কোন ভূত, প্রেত বা পরী সাহায্য করে নি। তিনি একদল

(t)

0

মান্ত্রকে সংগঠিত করে বতা রোধ করার কাজে নিযুক্ত করেছিলেন। তারপর বহু বছরের চেষ্টায় একটি মজবৃত বাঁধ নির্মাণ করে বতার গতি রোধ করেছিলেন।

### অনুশীলনী

- >। নিচের প্রশ্নগুলোর উত্তর দাও:
- (ক) চীনে যে পুরনো পাধর-যুগের মানুষ বাদ করত, তার প্রমাণ কী ?
- (य) दशाशांरहा ननीय रन्धा प्रश्रदक्ष प्र- हात कथा रन।
- (গ) চীনের প্রাচীন ইতিহাস সম্বন্ধে কী জান ?
- (ঘ) পান-কুকে ? তার সম্বন্ধে কী জান ?
- (ঙ) চীনের পাঁচজন সাধুরাজার নাম বল। তাঁদের সংক্ষিপ্ত পরিচয় দাও।
  - ২। ফুসি কে? চীনারা তাঁর কাছ থেকে কী কী জিনিস শিখেছিল?
  - ৩। 'উ' কে ? তিনি কোন্ বংশের প্রতিষ্ঠা করেন ?
  - ৪। শৃকুত্বান পূরণ কর:
- (ক) দিয়া বংশের প্রতিষ্ঠাতার নাম—। (খ) —ছিলেন শাং বংশের প্রতিষ্ঠাতা। (গ) ভারতের মতো চীনে—লেখার রেওয়াজ ছিল না। (ঘ) স্বর্গ থেকে একতাল—মাটি চুরি করে নিয়ে এসেছিলেন। (৬) কুনের ছেলের নাম—।

É

## পঞ্চম পরিচেছদ নদী-উপত্যকার সভ্যতাগুলোর সাধারণ বৈশিষ্ট্য

মেসোপটেমিয়া, মিশর, সিদ্ধু উপত্যকা ও চীন—সভ্যতার এই প্রাচীন চারটি কেন্দ্রের কথা তোমাদের বলেছি। এবার চারটি সভ্যতার মধ্যে সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলোর কথা তোমাদের সংক্ষেপে বলব।

প্রথমে আমরা আলোচনা করব চারটি দেশের অর্থনৈতিক জীবনের সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলো নিয়ে।

অর্থ নৈতিক জীবনঃ মেসোপটেমিয়া, মিশর, হরপ্লা ও চীনে মানুষের সমস্ত কর্মভংপরতার পেছনে দেখতে পাই প্লাবন বা ব্যার

সর্বনাশা শক্তিকে। দেশগুলোর ভূ-প্রকৃতি ও জলবায়ু এবং নদীনালার প্রকৃতিই এমন ছিল যে, দেখানকার মানুষকে প্রচুর মেহনত করতে হয়েছে। জঙ্গল কেটে চাষের জমি বার করা, জলাভূমির জল নিকাশ করা, খাল কেটে ও বাঁধ বেঁধে বন্থার জলকে চাষের কাজে লাগানো প্রভৃতি কাজ করতে হয়েছে বহু মানুষকে একতা হয়ে। এরই ফলে নদীর ধারে ধারে গড়ে উঠেছে ছোটো ছোটো গ্রাম বসতি। বজা রোধ করার পরে পলিমাটিতে প্রচুর ফসল ফলেছে, আর সেই উদ্বত্ত ফসল দিয়ে চাষবাস করে না এমন একদল লোকের খাছের সংস্থান করা সম্ভবপর হয়েছে। এই নতুন শ্রেণীটি নানা কারিগরি বিছা আয়ত্ত করার অবকাশ পেয়েছে। এর মধ্যে ধাতুর আবিফারও হয়েছে। কলে, সমাজে কামার, কুমোর, ছুতোর, তাঁতী, রাজমিন্তি প্রভৃতি কারিগরদের উদ্ভব হয়েছে। গোড়ার দিকে, সমাজের অর্থনৈতিক কর্মোছোগ ছিল কৃষি ও পশুপালন নিয়ে। পরবর্তী কালে নানা শিল্পপৃষ্টির কাজেও মানুষ তৎপর হয়ে উঠেছে। শিল্পজাত দ্রব্যাদির চাহিদা বাড়ার সঙ্গে সঙ্গে ব্যবসা-বাণিজ্যের প্রসার হয়েছে। আবার উন্নত ধরনের যানবাহনও ব্যবসা-বাণিজ্যের পক্ষে খুব সহায়ক হয়েছে। শিল্প ও বাণিজ্যের প্রয়োজনেই এর পরে নগরের উদ্ভব হয়েছে। তামা ও ব্রোঞ্জের আবিষ্ণারের পর থেকে প্রাচীন সভ্যতার চারটি কেন্দ্রেই পরিণত নগর-সভ্যতার প্রকাশ দেখতে পাই।

আবার কৃষিনির্ভর গ্রামজীবন থেকে শিল্প-বাণিজ্য-নির্ভর নগরজীবনে এই যে রূপান্তর, তা মারুষের অর্থনৈতিক জীবনেও একটা
বড়ো রকমের পরিবর্তন ঘটিয়েছিল। সহযোগিতা ও সমান অধিকারের
ভিত্তিতে হাজার হাজার বছরের পুরনো গোষ্ঠীজীবন ভেঙে
গিয়ে একটা নতুন অর্থনৈতিক কাঠামো ধীরে ধীরে তৈরি হয়েছিল।
ক্রমল বা শিল্পজাত জব্যে উৎপাদনকারীর এতদিন যে-অধিকার ছিল,
সে অধিকারও আর রইল না। এদিকে ব্যক্তিগত মালিকানাও
সামাজিক স্বীকৃতি পেল। একদল লোকের হাতে প্রচুর সম্পদ
মজ্ত হওয়ার ফলেই এমন একটা অবস্থার স্পষ্টি হয়েছিল। বাড়তি
ক্রমল আর বাড়তি জিনিস উৎপাদন করার দায়িত্ব পড়ল যাদের
ওপর, সেই বাড়তি ক্রমল আর বাড়তি জিনিসে তাদের অধিকার

রইল না এতটুকু। এইভাবে গোষ্ঠী-জীবনের শোষণহীন, শ্রেণীহীন সমাজের জারগায় জন্মলাভ করল শোষক ও শোষিতের সমাজ। দেশের মানুষের মধ্যে বিপুলসংখ্যক ক্রীভদাস এরকম একটা অবস্থা ভৈরি করতে থুবই সাহায্য করেছিল। ক্রীভদাসদের মধ্যে অধিকাংশই ছিল যুক্তবলী। অনেকে ঋণ শোধ করতে না পেরেও বাধ্য হয়ে ক্রীভদাস হোত। এই ক্রীভদাসের মালিকরা ক্রমেই বিত্তশালী হয়ে উঠেছিল। যার যত ক্রীভদাস, সে ভত ধনী—এরকম একটা অর্থ নৈতিক অবস্থা চারটি নদী-উপভাকাতেই দেখতে পাই।

নতুন অর্থনৈতিক কাঠামোর প্রভাব সামাজিক জীবনের ওপরেও পড়েছিল। এবার তোমাদের সামাজিক জীবনের কথা বলব।

সামাজিক জীবনঃ চারটি দেশেই সমাজের স্বচেয়ে ওপরের ভলায় দেখতে পাই রাজা ও পুরোহিতদের। সভ্যতার আদিকালে মান্ব্য প্রাকৃতিক শক্তিকে ভয় করত; আর এর কলে তারা জাতুশক্তিতে থুব বিশ্বাদ করত। এ কারণেই মানুষের ওপর পুরোহিতদের প্রচণ্ড প্রভাব ছিল। স্থমেরীয় ও মিশরীয় সমাজে উচ্চপদস্থ রাজকর্মচারী ও দেনাপতিরাও ছিলেন প্রথম সারির লোক। তাঁদের নিচেই ছিল বণিক, কারিগর, কৃষক প্রভৃতি। সমাজের একেবারে নিচে ছিল অসংখ্য ক্রীতদাস। ক্রীতদাসদের কোনও মানবিক অধিকারই ছিল না। অথচ এদেরই অমানুষিক পরিশ্রমে বড়ো বড়ো বাঁধ নির্মিত হয়েছে, গড়ে উঠেছে অতিকায় পিরামিড, উৎপন্ন হয়েছে নানা শিল্পজাত জব্য। সিন্ধু উপত্যকা ও চীনের সমাজে চার শ্রেণীর লোকের দেখা পাই। সিন্ধু উপত্যকার সমাজের সবচেয়ে উচু তলার লোক বলতে বোঝায় পুরোহিত, দৈবজ্ঞ এবং চিকিৎসকদের। চীনে মান্দারিন বা লেখাপড়া-জানা মানুষ ছিল এই শ্রেণীর লোক। যোদ্ধা, বণিক ও কারিগর নিয়ে গড়ে উঠেছিল সমাজের দ্বিভীয় শ্রেণীটি। আর সকলের নিচে ছিল ক্রীভদাস। স্থমের ও মিশরের রাজারা যুদ্ধ জয় করে যে-অসংখ্য ক্রীতদাস, ধনরত্ব ও জমিজমা লাভ করতেন, তার একটা মোটা অংশ উপহার দিতেন দেবমন্দিরকে, আর ছিঁটেফোঁটা অশুদের। ফলে ঐ হুই দেশের মন্দিরে ক্রীতদাস ও সম্পদ্ ফুলে-ফেঁপে উঠেছিল। এই

ধন-সম্পদ ভোগ করতেন পুরোহিতরা। জ্ঞানচর্চার জত্মে পুরোহিতরা যথেষ্ট অবকাশও পেতেন। মানুষের সভ্যতায় সুমেরীয় ও মিশরীয়দের যত কিছু অবদান, তার বেশির ভাগই সৃষ্টি করেছিলেন পুরোহিতরা।

. প্রত্নতাত্ত্বিক নিদর্শন থেকে বোঝা যায় যে, প্রাচীন মেসোপটেমিয়া, মিশর, সিন্ধু উপত্যকা ও চীনে এক একটি উন্নত নগর-সভ্যতা গড়ে উঠেছিল। নারী-পুরুষ সকলেই অলঙ্কার পরত। অলঙ্কারও নানারকমের ছিল; ধাতুর, ঝিমুকের, মূল্যবান্ পাথরের, তামা, ব্রোঞ্জ, সোনাও রূপোর। নানা রকম প্রসাধনসামগ্রী, আসবাবপত্র প্রভৃতি যা এক'টি পলিমাটি অঞ্চল থেকে পাওয়া গেছে, তা থেকেও বোঝা যায় যে, মামুষ খুব সৌধিন ছিল। নানা রকমের কারুকার্য করা বাসনকোসন ও যন্ত্রপাতির মধ্যে তাদের সৌন্দর্যপ্রিয়তার পরিচয় পাওয়া যায়।

ধর্মবিশ্বাসেও চার্টি অঞ্লের মান্তুষের মধ্যে কয়েকটি বৈশিষ্ট্য খুঁজে পাওয়া যায়। পরলোকে বিশ্বাসের ফলে তারা মৃতদেহকে যত্ন করে কবর দিত এবং মৃতদেহের কাছে মৃতব্যক্তির আসবাবপত্র, গয়নাগাঁটি ও খাত্যস্ব্যাদি সাজিয়ে রাখত।

惊

যেমন সুমের ও মিশরে, তেমনি সিন্ধু উপত্যকার ও চীনে দেখতে পাই মানুষ বহু দেব্-দেবীতে বিশ্বাস করত। মানুষ তথনও প্রাকৃতিক শক্তিগুলোকে ভয় করত, ভয় করত হিংস্র জন্ত-জানোয়ারকেও। গাছপালা ও জীবজন্তকে দেবতাজ্ঞানে তারা যেমন পুজো করত, তেমনি করত আকাশ, বায়, সূর্য, চল্র, জল প্রভৃতি প্রাকৃতিক শক্তিকে। মাতৃকা-দেবীর পুজোও ছিল খুব জনপ্রিয়। সুমেরীয় ও মিশরীয়দের কল্পনায় এক-একটি দেবতা ছিলেন এক-একটি প্রাকৃতিক শক্তির আধার। সুমেরে অন্ধু, এনলিল, সামাস ( সূর্য দেবতা ), নায়া ( চল্র দেবতা ), ইনায়া প্রভৃতি দেব-দেবী। মাতৃকা-দেবীর নাম নিয়া; জলের দেবতা এক্টি। মিশরে হোরাস, ওসিরিস, আইসিস ও সূর্য-দেবতা 'রা' বা আমন। সিন্ধু উপত্যকায় পশুপতি শিব ও মাতৃকা-দেবীর পুজো প্রচলিত ছিল। চীনদেশের মানুষও নানা জীবজন্ত ও প্রাকৃতিক শক্তির পুজো করত।

#### প্রাচীন সভাতা

### <u>षात्रभील</u> भी

- সভাতার প্রাচীন কেন্দ্রগুলোতে নদীর ধারে গ্রাম-বসতি গড়ে উঠেছিল কেন ?
- । মেলোপটেমিয়া, মিশর, সিয়ু উপতাকা ও চানে সমাজের একেবারে
   নিচু তলার লোক কারা 
   গ্রাদের সম্বন্ধে কাঁ জান 
   ।
- ৩। সমাজে কাদের বেশি প্রভাব ছিল এবং কেন ?
- 8। করেকজন সুমেরীয় ও মিশরীয় দেব-দেবীর নাম কর।

## পঞ্চম অশ্যায় লোহযুগের সমাজ

লোহার আবিকার ও তার ফল: লোহা কবে এবং কারা আবিদার করেছিল, তা আমরা আজও জানি না। চকমকি পাথরের মতো লোহা দীর্ঘদিন থাকে না; জঙ্গে-বৃষ্টিতে লোহা নষ্ট হয়ে যায়। মানুষ যখন থেকে লোহার ব্যবহার শুরু করেছিল তখন থেকেই লোহ-যুগের শুরু। পৃথিবীর ভিন্ন ভিন্ন অংশে ভিন্ন ভিন্ন সময়ে মানুষ লোহার যন্ত্রপাতি ও অস্ত্রশন্ত্র ব্যবহার করেছে। স্থতরাং, কোথাও লৌহযুগ শুরু হয়েছে আগে, কোথাও পরে। লোহাকে ঢালাই করে নিয়ে যন্ত্রপাতি এবং অন্তর্শস্ত্র তৈরি করার কৌশলটি আর্মেনিয়ার পার্বত্য অঞ্জের হিটাইটরা জানত। প্রায় সাতশো বছর ধরে (১৯০০ খ্রীস্টপূর্বান্দ থেকে ১২০০ খ্রীস্টপূর্বান্দ পর্যন্ত) হিটাইটরা লোহার অস্ত্রের জোরে এশিয়া মাইনরে একাধিপত্য করে। হিটাইট সামাজ্যের প্তনের পরে এশিয়া মাইনরের বিভিন্ন অঞ্লে লোহার ব্যবহার শুরু হয়েছিল। আসিরীয়রা লোহার হাতিয়ার আর যুদ্ধর্থ ব্যবহার করে যে-সামাজাটি গড়ে তুলেছিল, সে যুগে তা ছিল সবচেয়ে বড়ো। এশিয়া মাইনর এবং নিকট প্রাচ্যের দেশগুলোতে ধীরে ধীরে লোহার ব্যবহার শুরু হয়। ইয়োরোপের দেশগুলোর মধ্যে প্রথম গ্রীদেও ইতালিতে লোহা দিয়ে মানুষ যন্ত্রপাতি ও অন্ত্রশস্ত্র গড়তে শুরু করে। গ্রীকদের কাছ থেকে রোমানরা লোহার ব্যবহার শিখেছিল। লোহার ব্যবহার জানত ফিনিসীয়রা। সীডন, বিব্লস্,

টায়ার, কার্থেজ প্রভৃতি ফিনিসীয় বন্দরে লোহার জিনিসপত্র নিয়মিত বেচাকেনা হোত। টাইবার নদী আর ইতালির পশ্চিম উপ-কুলের মাঝামাঝি একটা জায়গায় এট্রাসকানরা বাস করত। তারাও লোহার ব্যবহার জানত। মিশরে এবং ইয়োরোপে লোহার ব্যবহার শুরু হয় প্রায় একই সময়ে, ৭০০ গ্রীস্টাব্দের পরে। ভারত থেকে এক সময়ে তাল তাল লোহার খণ্ড রোমে রপ্তানি হোত। তবে দৈনন্দিন জীবনে লোহার ব্যবহার শুরু হয়েছিল বোধ হয় ৫০০ গ্রীস্টপূর্বাব্দের পর থেকে। এর কিছুকাল পরে চীনদেশেও লোহার ব্যবহার শুরু হয়।

লোহা আবিদারের ফলঃ এশিয়া ও ইয়োরোপের কয়েকটি জায়গায় আকরিক লোহার সন্ধান পাওয়া গিয়েছিল। তারপর থেকেই লোহা ঢালাই করে নানা রকম যন্ত্রপাতি এবং অন্ত্রশন্ত্র তৈরি হতে থাকে। তামা বা ব্রোপ্তের তুলনায় লোহার যন্ত্রপাতি ও হাতিয়ার অনেক বেশি মজবৃত। লোহার হাতিয়ারের জারের ছিটাইট, আসিরীয় প্রভৃতি জাতি প্রাচীন পৃথিবীতে বড়ো বড়ো সাম্রাজ্য গড়ে তুলেছিল। গ্রীকরা লোহার বর্ম পরে হাজার হাজার পারসিক সৈক্যকে যুদ্ধে হারিয়ে দিয়েছিল। লোহার যন্ত্রপাতি সন্তাও। লোহার যন্ত্রপাতি তৈরি হবার পর থেকে ছোটখাটো কারিগরদের খুবই স্থবিধে হয়েছিল। আগের তুলনায় তারা অনেক বেশি জিনিসপত্র তৈরি করতে লাগল। লোহার লাক্ষল দিয়ে চাষ করা শুক্ত হতেই ক্ষেত্তেও আগের তুলনায় বেশি পরিমাণে কসল ফলতে লাগল। কৃষি ও শিল্পের ক্ষেত্রে যেমন উৎপাদন বাড়ল, তেমনি চলাচলের ব্যবস্থা উন্নত হওয়ার ফলে আগেকার তুলনায় পরিবহণবায়ও অনেক কমে গেল।

সামাজিক জীবনঃ ব্রোঞ্জযুগের মতো লৌহযুগের সমাজও কয়েকটি শ্রেণীতে বিভক্ত ছিল। সমাজের একেবারে ওপরের তলার রাজা এবং সম্রান্তবংশীয়রা, তাঁদের নিচে মধ্যবিত্ত একটি শ্রেণী। সাধারণ শ্রমিক, কৃষক প্রভৃতিকে নিয়ে ছিল তৃতীয় একটি শ্রেণী। সকলের নীচে ক্রীভদাস। লৌহযুগের সমাজে মধ্যবিত্তশ্রেণী বলতে বোঝায় বণিক, কারিগর, লিপিকর, শিল্পী, শিক্ষক প্রভৃতিকে। লৌহযুগে

সম্ভ্রান্তবংশীয় লোকেরা মধ্যবিত্তশ্রেণীর এই মানুষদের পৃষ্ঠপোষকতা করতেন। কলে জীবনধারণের জন্মে একমাত্র রাজার অনুগ্রহের ওপর তাদের নির্ভর করতে হোত না। লোহযুগে মস্ত বড়ো বড়ো সাম্রাজ্য যেমন গড়ে উঠেছে, তেমনি অসংখ্য মানুষ ক্রীতদাসে পরিণত হয়েছে। ঋণের দায়েও মানুষকে ক্রীতদাসত্ব করতে হোত। লোহযুগের স্বাধীন নাগরিক অর্থাৎ সাধারণ মানুষের জীবন ক্রীতদাসের তৃলনায় খুব একটা ভাল ছিল না। গ্রীকরা তো ক্রীতদাসদের দিয়েই সব কাজ করিয়ে নিত। গ্রীক-সভ্যতার একটি অপরিহার্ধ অঙ্গ ছিল ক্রীতদাস-প্রথা। এথেকা নগরে নাকি এক সময়ে ১,১৫,০০০ ক্রীতদাস ছিল, অর্থাৎ নগরের মোট লোকসংখ্যার প্রায় এক-তৃতীয়াংশ। ক্রীতদাস প্রথা গ্রীস থেকে রোমে চালান হয়। তবে রোমের ক্রীতদাসদের জীবন অপেক্রা গ্রীসের ক্রীতদাসদের জীবন অনেক্র ভাল ছিল।

অর্থ নৈতিক জীবনঃ লোহার যন্ত্রপাতি আবিন্ধারের পর থেকে কৃষি ও শিল্পে উৎপাদন বেড়ে গিয়েছিল এবং কৃষক ও কারিগরের কাজের পক্ষেও খুব স্থবিধে হয়েছিল, এ কথা তোমাদের আগেই বলেছি। লোহযুগে চলাচল-ব্যবস্থারও খুব উন্নতি হয়। ফলে, শিল্প-বাণিজ্যের খুব প্রসার হয়। বাণিজ্যে ফিনিসীয়রা খুবই পারদর্শী ছিল। তারা কাঠ দিয়ে স্থন্দর স্থন্দর নৌকো তৈরি করত। পাল এবং



ফিনিসীয় জাহাজ

দাঁ ড়ের সাহায্যে নৌকোগুলো চলত। ক্রী ভ দা স রা দাঁড় টা ন ত। সে যুগে ফিনিসীয়দের মতো ফুঃসাহসী ও ফুদাস্ত আর কেউ ছিল না। তারা সমুদ্রে জল-দস্মাতা করত। সীতন,

টায়ার, কার্থেজ প্রভৃতি শহর ফিনিদীয়রাই নির্মাণ করেছিল। ব্রোঞ্জযুগে মিশরের ফারাওরা নানা রকম কাঁচা মাল ও বিলাসজব্য আনাতেন বাইরে থেকে। কোনো কোনো ক্লেতে, যেমন, সিনাই থেকে তামা আনার জন্মে ফারাওদের সৈক্ত পাঠাতে হোত। লোহযুগের পারসিক
সমাটদের বা ৩য় থুথমোস, আমেনহোতেপ, ২য় রামেশিসের মতো
মিশরীয় রাজাদের এ অসুবিধে ছিল না। তাঁদের সাম্রাজ্যে মোটামুটি
সব রকম কাঁচা মাল এবং বিলাসদ্রব্য পাওয়া যেত। পারস্থ-সমাট
দারায়ুস সুসায় তাঁর রাজপ্রাসাদটি নির্মাণ করার জন্মে সীভার ও ওক
কাঠ, সোনা, রূপো, তামা, ব্রোজ্প ও হাতির দাঁত প্রভৃতি সবই
আনিয়েছিলেন তাঁরই সাম্রাজ্যের বিভিন্ন অঞ্চল থেকে। লোহযুগে
জিনিসপত্রের পরিমাপ ও ওজনের ব্যবস্থাও আগেকার তুলনায় উন্নত
হয়েছিল। ৬০০ খ্রীস্টপ্রান্দের পর থেকে এথেন্স, করিম্থ প্রভৃতি
নগর-রাষ্ট্রগুলোতে অল্লমূল্যে রূপো ও তামার মুদ্রার প্রচলন হয়।
ফলে বিনিময়ের মাধ্যমে ব্যবসা-বাণিজ্য করার অসুবিধেও অনেকটা
দূর হয়। ফিনিসীয় বণিকরা সুমেরীয় ও মিশরীয় লিপি সহজে

| ফিনিসীয় | প্রাচীন<br>গ্রীক | পরবর্তী<br>গ্রীক | ল্যাটিন | ইংরেজী |
|----------|------------------|------------------|---------|--------|
| X        | A                | A                | A       | A      |
| 3        | 58               | B.               | В       | В      |

#### ফিনিসীয় লিপি

বোধগন্য করার জন্মে এক রক্ম অক্ষরের প্রবর্তন করেছিল। গ্রীকরা ফিনিসীয় ভাষা থেকেই গ্রীক ভাষার সৃষ্টি করে। ভোমরা হয়তো জানো না যে, গ্রীক ভাষা থেকেই পরে ইয়োরোপের নানা ভাষার জন্ম হয়। ফিনিসীয়দের এবং পরে গ্রীকদের চেষ্টায় সহজে বোধগম্য লিপির আবিষ্কারের ফলে ব্যবসা-বাণিজ্যের খুব স্থবিধে হয়েছিল।

রাজতন্ত্রের ধারণাঃ আদিরিয়া, ব্যাবিলোনিয়া, মিশর প্রভৃতি দেশে ব্রোঞ্জযুগের মতোই রাজার শাসন বা রাজতন্ত্র প্রচলিত ছিল। ইজরায়েল, লিডিয়া, ফ্রিজিয়া, আর্মেনিয়া, মীডিয়া, পারস্থ প্রভৃতি রাজ্যেও ছিল রাজার শাসন। তবে পার্রসিক সম্রাটরা স্থানীয় শাসনকর্তাদের ওপর শাসনের ভার ছেড়ে দিয়েছিলেন। সামাজ্যের বিভিন্ন অংশ থেকে নিয়মিত রাজস্ব পেলেই তাঁরা খুশি থাকতেন। চীনে চৌ-বংশের রাজারা তাঁদের রাজ্যে সামন্ত-প্রথার প্রবর্তন করেন। তাঁরা রাজ্যের জমিজমা কয়েকজন জমিদারের মধ্যে ভাগ করে দিয়েছিলেন। জমিদাররা রাজাকে নিয়মিত কর দিতেন এবং যুদ্ধের সময়ে রাজাকে সৈত্য দিয়ে সাহায্য করতেন। এথেলা, স্পার্টা, থিবস্, করিন্থ প্রভৃতি ছোটো ছোটো নগর-রাইগুলোর কোনোটাতে ছিল রাজার শাসন, কোনোটাতে জনগণের শাসন। যেখানে যেখানে রাজতন্ত্র ছিল, সেধানেও জনতার প্রতিনিধিদের পরামর্শ নিয়ে রাজা শাসন করতেন।

মিশর, ব্যাবিলন, ফিনিসিয়া এবং নানা সেমিটিক জাতি ও উপজাতির মানুষ ব্রোঞ্জযুগের সভ্যতাকে বহন করে নিয়ে এসেছে পোহযুগে। ইন্দো-ইয়োরোপীয় গ্রীকজাতি এই সভ্যতায় সভ্য হয়েছে। গ্রীকদের কাছ থেকে সভ্যতার আলো গিয়ে পৌছেছে ব্রোমে। গড়ে উঠেছে মস্ত বড়ো রোম সাম্রাজ্য। তারপর থেকেই ইয়োরোপের দিকে দিকে সভ্যতা ছড়িয়ে পড়ল। আমরাও এই সভ্যতার উত্তরাধিকারী।

### অনুশীলনী

- ১। কোন্ সময়টাকে লোহঘুগ বলে? কোধায় কোধায় এবং কখন লোহার ব্যবহার শুরু হয় ?
  - ২। লোহা আবিদ্ধারের ফল কী ?
  - । লোহযুগের সামাজিক জীবন কেমন ছিল ?
  - ৪। লোহযুগের অর্থ নৈতিক জীবন-সম্বন্ধে কী জান ?
  - ৫। লোহযুগের রাষ্ট্রগুলোর শাসন-ব্যবস্থা কেমন ছিল ?
  - ও। ভুল শুদ্ধ কর:
  - (ক) এশিয়া মাইনরে লোহার বাবহার শুক্ত করে মিশরীয়র।।
  - (গ) রোমানর। লোহার ব্যবহার শিখেছিল মিশরীয়দের কাছ থেকে।
- (গ) লোহার যন্ত্রপাতি আবিদ্ধারের ফলে কৃষি ও শিল্পের ক্ষেত্রে উৎপাদন কমে গিয়েছিল।
  - (ঘ) সীডন, টায়ার, কার্থেছ প্রভৃতি নগর তৈরি করেছিল গ্রীকরা।
- (ও) চীনের চৌ-বংশের রাজারা তাঁদের রাজ্যে গণতন্ত্রের প্রবর্তন করেছিলেন।

৭। শৃন্যস্থান পূরণ কর:

- (क) নদী আর ইতালির পশ্চিম উপকূলের মাঝামাঝি একটা জায়গায় এট্রাস্কানরা বাস করত। (টাইগ্রীস/টাইবার)
- (খ) এথেন্সের মোট লোকসংখ্যার এক—( চতুর্থাংশ/তৃতীয়াংশ ) ছিল ক্রীতলাস।
- (গ) দারায়ুস এক জন—( মিশরীয়/পারসিক ) সমাটের নাম।
- (ঘ) (মিশরীয়/পারসিক) স্থানীরা স্থানীয় শাসনকর্তাদের ওপর শাসনের ভার ছেড়ে দিয়েছিলেন।

# ষষ্ঠ অধ্যার লোহযুগের কয়েকটি সভ্যতা প্রথম পরিচ্ছেদ ব্যাবিলন



ব্যাবিলনের প্রাচীন ইতিহাস: মুমেরের উত্তর-পশ্চিম দিকে
ইউফ্রেটিস নদীর তীরে ছিল ব্যাবিলন নামে ছোটো একটি শহর।
এই ব্যাবিলনকে কেন্দ্র করে একটি শক্তিশালী সাম্রাজ্য গড়ে তুলেছিল
সিরিয়ার মরুভূমি অঞ্চলের একটি উপজাতি। রাজধানী ব্যাবিলনের
নাম অনুসারে রাজ্যটির নাম হয় ব্যাবিলোনিয়া। ব্যাবিলনের রাজা
হামুরাবির নামটি আজও স্মরণীয় হয়ে আছে। হামুরাবি তাঁর বংশের
ষষ্ঠ রাজা। আজ থেকে প্রায় চার হাজার বছর আগে তিনি
ব্যাবিলনে রাজত্ব করে গেছেন। তিনি ছিলেন মস্ত বড়ো এক
বোদ্ধা। সমগ্র মেসোপটেমিয়া তিনি অধিকার করেন। কিন্তু
বিজয়ী হামুরাবির চেয়ে আইন-প্রণেতা হামুরাবিকে পরবর্তী কালের
মামুষ বেশি করে মনে রেখেছে। বাস্তবিকই হামুরাবি ছিলেন প্রাচীন
পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ রাজাদের মধ্যে একজন। তিনি গোলাকার একটি
পাথরের স্তন্তে কতকগুলো আইন খোদাই করে রেখে গিয়েছেন।
১৯০২ খ্রীস্টাব্দে সুসার একটি জায়গায় মাটি খুঁড়ে স্তম্ভটি পাওয়া
গেছে।

ব্যাবিসনের ঠিক উত্তরেই ছিল অস্তর নামে একটি নগর। এক সময়ে অস্তর ব্যাবিলনের অধীনে ছিল। কিন্তু পরে অস্তরকে কেন্দ্র করে মস্ত বড়ো আদিরীয় সাম্রাজ্য গড়ে ওঠে। আদিরীয়ার রাজা প্রথম তিলগথ পিলেজার ব্যাবিলন ও মিশর অধিকার করেন।



আসিরীয়রা ছিল ছর্ধর্ব যোদ্ধা। তারা লোহার হাতিয়ার নিয়ে রথে চড়ে যুদ্ধ করত। একরকম মুদার-যন্তের সাহায্যে তারা শক্রপক্ষের প্রাচীর ভেঙে ফেলত। এ কৌশলটি ভারাই প্রথম আবিদ্ধার করে। আসিরীয়দের সঙ্গে যুদ্ধ কেউই পেরে উঠত না। আসিরীয় সম্রাট অস্থরবানিপাল রাজধানী নিনেতে নগরে একটি প্রকাণ্ড পাঠাগার নির্মাণ করেছিলেন। অস্থরবানিপালের মৃত্যুর পর কিছুদিন যেতে না-যেতেই আসিরীয় সাম্রাজ্যের পতন হয়। কাল্ডি রাজবংশের অধীনে ব্যাবিলনের ইতিহাসেও আর একটি গৌরবময় যুগের স্ফুলা হয়। এই নতুন ব্যাবিলোনিয়া সাম্রাজ্যের এক রাজার নাম নেব্কাদনেজার। তিনি মীডিয়ার রাজকুমারী এমাইটিসকে বিয়ে করেছিলেন। এই রানীকে খুশি করার জ্বে নেব্কাদনেজার ব্যাবিলনে একটি ঝুলস্ক উত্যান তৈরি করেছিলেন। ব্যাবিলনের এই শৃত্য-উত্যানটি প্রাচীন পৃথিবীর সাতটি আশ্চর্যের অস্থতম। সে

যুগে ব্যাবিলনের মতে। নগর আর ছিল না। ৬৩৯ খ্রীস্টপূর্বাব্দে পারস্থ সম্রাট দ্বিতীয় সাইরাস ব্যাবিলন অধিকার করেন।

কুষিঃ স্থুমেরের মতো ব্যাবিলনেও প্রধানত জলসেচের সাহায্যে কৃষিকাজ করা হোত। যুদ্ধ-জয়, মন্দির-নির্মাণ, সেচখাল খনন করা, পুরনো খালের সংস্থার করা প্রভৃতিকে ব্যাবিলনের রাজারা খুব গৌরবের কাজ বলে মনে করতেন। হামুরাবির বহুকাল আগে একটি মস্ত বড়ো খাল কাটিয়েছিলেন লাগসের এক শাসনকর্তা। হামুরাবি সেই খালটি আবার নতুন করে কাটিয়েছিলেন। সেচখাল-গুলোর মুথ বক্সার সময়ে পলিমাটিতে বৃদ্ধে যেত। প্রতি বছরই খালের মুখ থেকে সেই মাটি সরিয়ে দিতে হোত। চাষের কাজ করত কৃষকরা আর ক্রীতদাসরা। কৃষকরা শাহুফের সাহায্যে জমিতে জল দিত। তারা লাঙ্গল দিয়ে চাষ করত। জমি চষা এবং বীজ বোনা হয়ে গেলে চাষীরা দেবী নিনকিলিমের কাছে প্রার্থনা জানাত যাতে ইত্র ও পোকামাকড়ের হাত থেকে মাঠের ফদল রুক্ষাপায়। শভোর মধ্যে বার্লি, গম ও যব ছিল প্রধান। ক্ষেতে কুমড়ো, তরমুজ, পেঁয়াজ, রস্থন, সরষে প্রভৃতি জন্মতে। বাগানে ফলত ডুমুর, আঙুর, পীচ, জলপাই প্রভৃতি ফল। সবচেয়ে বেশি ফলত খেজুর।

বাণিজ্যঃ ব্যাবিলনে ধাতু, মূল্যবান্ পথির এবং দামী কাঠ
পাওয়া যেত না। এসব আনতে হোত বাইরে থেকে। নানা রকম
বিলাস্ত্রব্যপ্ত আমদানি করতে হোত। ব্যাবিলনে শিল্প ও বাণিজ্যের
থুবই প্রসার হয়েছিল। বণিকরা চড়া স্কুদে মহাজনদের কাছ
থেকে জিনিসপত্র, ফসল ইত্যাদি ধার নিত। স্কুদের সর্বোচ্চ হার
হামুরাবি আইন করে বেঁধে দিয়েছিলেন। ব্যাবিলনের সঙ্গে তথন
পৃথিবার নানা দেশের ব্যবসা-বাণিজ্য চলত। সিন্ধু-উপত্যকা, পারস্থ
আফগানিস্তান, আর্মেনিয়া, আনাতোলিয়া, সিরিয়া এবং ভূমধ্যসাগরের
তীরবর্তী দেশগুলো থেকে হাজার হাজার বাণিজ্যতরী কত না জব্যসামগ্রী নিয়ে আসত। একদিকে পারস্থ উপসাগর, অক্তদিকে
টাইগ্রীস ও ইউফ্রেটিস নদীপথ দিয়ে এই বাণিজ্য চলত। আবার
মক্ষভূমির ওপর দিয়ে ভারবাহী পশুর পিঠে মালপত্র চাপিয়ে

সওদাগবেরা আসত ব্যাবিলনে। ব্যাবিলনের বণিকদের নিজেদের সজ্ম ছিল। সে-যুগের যে-সমস্ত লেখা পাওয়া গেছে তাতে বিক্রয়, ঋণ, চুক্তি, অংশীদারী ব্যবসা, দম্ভরি, বিনিময়, ছাওনোট প্রভৃতির উল্লেখ আছে। শিল্ল ও বাণিজ্যে ব্যাবিলনের-যে খুবই সমৃদ্ধি হয়েছিল, এসব তারই প্রমাণ। ব্যাবিলনে শেকেল, মীনা, ট্যালেণ্ট প্রভৃতি মুদ্রার প্রচলন ছিল। ৬০টি শেকেল ছিল ১টি মীনার সমান, আবার ৬০টি মীনার সমান ছিল ১টি ট্যালেণ্ট।

মন্দির ও পুরোহিত: ব্যাবিলনের মানুষের কাছে রাজা ছিলেন দেবতার প্রতিনিধি। প্রজারা কর দিত দেবতাকে; কর জমাও হোত দেবমন্দিরে। সমাজে পুরোহিতদের অসাধারণ প্রভাব ছিল। রাজা-যে দেবতার প্রতিনিধি, জনমনে এ ধারণা গড়ে তোলার কাজটি পুরোহিতরাই করতেন। নগরদেবতা মার্হ ককে নিয়ে পুরোহিতের পোশাক পরেই রাজা পথে শোভাযাত্রায় বের হতেন। ব্যাবিলনীয়রা দেবতার পুজো ও নানা রকম যাগযজ্ঞে বিশ্বাস করত। তা ছাড়া, তারা জাতুশক্তিতেও বিশ্বাস করত। এর ফলে তাদের ওপর পুরোহিতদের প্রভাব ছিল রাজার চেয়েও বেশি। রাষ্ট্র-ব্যবস্থায়ও সেধানে বরাবরই পুরোহিতদের প্রাধাস্ত ছিল। পুরোহিতরাই বিচার করতেন, বিচারসভা বসত দেবমন্দিরে।

যুদ্ধজরের মতো নতুন নতুন দেবমন্দির-নির্মাণ এবং পুরনো মন্দিরের সংস্কার করাকে রাজারা গৌরবের কাজ বলে মনে করতেন। যুদ্ধজর করে নতুন দেশ থেকে রাজা যেসব ধনরত্ব ও ক্রীতদাস-ক্রীতদাসী নিয়ে আসতেন, তার একটা মোটা ভাগ তিনি দেবমন্দিরকে উপহার দিতেন। ধনী ও সম্রান্ত বংশের লোকেরা এবং সাধারণ গরীবত্বঃখীও নিজ নিজ সাধামত কসল ও নানা রকম জব্যসামগ্রী দেবমন্দিরকে উপহার দিত। এভাবেই দেবমন্দিরগুলো বিপুল সম্পদের অধিকারী হয়েছিল। এক দিকে যেমন দেবমন্দিরে বিপুল পরিমাণ সোনা-রূপাও ধনরত্ব, দামী দামী আসবাবপত্র জমা হয়েছিল, তেমনি ছিল অসংখ্য দাসদাসী। দেশের মোট জমিজমার একটা বিরাট অংশ ছিল দেব-মন্দিরের নিজম্ব সম্পত্তি। সেই জমিতে ক্রীতদাসনের দিয়ে চাষ করানো হোত। কসল জমা হোত দেবমন্দিরে। ক্রীতদাসরা নানা

রকম কারিগরি বিভা জানত। তাদের খাটিয়ে পুরোহিতরা নানা রকম জিনিস তৈরি করাতেন।

পুরোহিতরা মন্দিরের এসব ধন-সম্পদ্ সরাসরি ভোগ করতেন না বটে, তবে এগুলো দিয়ে তাঁরা মহাজ্ঞনী কারবার করতেন। অনেকে পুরোহিতদের কাছে ধন-সম্পত্তি গচ্ছিত রাখত। দেব-মন্দিরগুলো সেকালে ব্যাঙ্কেয় মতোই কাজ করত।

ব্যাবিলোনিয়ায় প্রত্যেক নগরের জ্ঞেছিল আলাদা আলাদা দেবতা; যেমন, লারসার সামাস, উরুকের ঈশ্তার, উরের নায়ার এবং ব্যাবিলনের মার্ফ ।

জ্ঞান ও সংস্কৃতি: ব্যাবিদনের পুরোহিতরা সেই স্বুদূর প্রাচীন-কালেই জ্ঞান-বিজ্ঞানের চর্চা করতেন। তাঁরা মাটির টাঙ্গির ওপর লিখতেন। সমাট অসুরবানিগালের রাজধানী নিনেভে নগরে একটি প্রকাণ্ড পাঠাগার আবিভূত হয়েছে। তাতে ইটের ওপরে লেখা প্রায় কুড়ি হাজার বই পাওয়া গেছে। বইগুলোর মধ্যে আছে অভিধান ও ব্যাকরণ, জ্যোতির্বিজ্ঞান, গণিত, চিকিৎসাবিজ্ঞান প্রভৃতি। ব্যাবিলনের পুরোহিতরা বাণিজ্যের প্রয়োজনে গণিতের চর্চা করতেন। তাঁরা বৃত্তকে ৩৬• ডিগ্রিতে বিভক্ত করেছিলেন। বর্তমানে প্রচলিত দাদশ রাশি তাঁদেরই আবিষ্কার। পুরোহিতরা ভবিগ্রদ্বাণী করতেন। এর জ্বন্থে তাঁরা আকাশের গ্রহ-নক্ষত্রাদির অবস্থান প্রভৃতি লক্ষ করতেন। এভাবেই তখন থেকে জ্যোতির্বি-জ্ঞানের চর্চা গুরু হয়। ব্যাবিলনীয়রা মঙ্গল, বুধ, বৃহস্পতি, গুক্ ও শনি এই পাঁচটি গ্রহের সঙ্গে পরিচিত ছিল। প্রত্যেকটি গ্রহ ছিল এক-একজন দেব-দেবী, যেমন—মঙ্গল নারগল, বৃধ নাবু, বৃহস্পতি মাতু ক, শুক্র ঈশ ভার, শনি নিনিব, সূর্য সামাস, চম্র সীন ইত্যাদি। ব্যাবিলনীয়রা বছরকে বারো মাসে এবং মাসকে চার সপ্তাহে ভাগ করেছিলেন। প্রত্যেক দিনকে তাঁরা বারো ঘণ্টার ভাগ করেছিলেন। বিষ্বরেখাকে ৩৬০ ডিগ্রিতে বিভক্ত করাও তাঁদেরই কীর্তি। তাঁদেরই চেষ্টার ফলে গণিত, জ্যোতির্বিজ্ঞান, চিকিৎসা-বিজ্ঞান, দর্শন, অভিধান-সঞ্চলন, ব্যাকরণ, ভূগোল, ইতিহাস লেখা প্রভৃতি নানা জ্ঞান-বিজ্ঞানের ভিত্তি স্থাপিত হয়।

7

হামুরাবির আইনঃ প্রাচীন পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ রাজাদের মধ্যে ব্যাবিলনের রাজা হামুরাবি একজন। তুর্বর্ধ যোদ্ধা, দিখিজয়ী বীর এবং বিচক্ষণ আইন-প্রণেতা এই রাজার নাম আজও স্মরণীয় হয়ে



হানুকাৰির আইন প্রাণ্ডি

আছে। তিনি রাজ্যে শান্তি-শৃদ্ধলা ও সুশাসনের জন্যে প্রাচীন আইন-গুলোকে সঙ্কলন করে একটি আট ফুট লম্বা গোলাকার পাথরের স্তন্তের ওপর খোদাই করে রে খে গিয়েছেন। হামুরাবির পরেও বহুকাল ধরে তাঁর আইন-অমুসারে ব্যাবিলনে শাসনের কাজ পরিচালিত হোত। হামুরাবির লেখা ৫০ খানা চিঠি থেকেও বোঝা যায়, তিনি প্রজার মঙ্গলের জন্যে কি রকম পরিশ্রাম করতেন।

আধুনিক পণ্ডিতরা হামুরাবির আইনগুলোকে ২৮২টি অনুচ্ছেদে ভাগ করেছেন। মিখা। সাক্ষা দেওয়া, চুরি ও ডাকাতি করা, দ্রীলোকের অসং জীবন যাপন করা, চুরি করা জিনিসপত্র রেখে দেওয়া, পালিয়ে যাওয়া ক্রীতদাসকে আশ্রয় দেওয়া প্রভৃতি অপরাধের জন্যে প্রাণদণ্ড হোত। প্রাণদণ্ড দেওয়া হোত কখনো আগুনে পুড়িয়ে অথবা জলে ডুবিয়ে, আবার কখনও অঙ্গচ্ছেদ করে। হামুরাবি আইন করে কারিগরদের সর্বোচ্চ বেতন ও মজুরি বেঁধে দিয়েছিলেন। জনসাধারণের স্থবিধার জন্যে স্থদের সর্বোচ্চ হারও তিনি নির্দিষ্ট করে দিয়েছিলেন। আইনে ধনী ও সম্রান্ত লোকদের প্রতি পক্ষপাতিয় দেখানা হয়েছে। চুরি-ডাকাতি করার পরে চোর বা ডাকাত ধরা না পড়লে সেটা রাষ্ট্রের অযোগ্যভা বলে গণ্য করা হোত। ক্ষতিগ্রস্ত বাক্তিকে রাষ্ট্র ক্ষতিপূর্ণ দিত। এরকম

আইন আজকের দিনেও পৃথিবীর কোনও জনকল্যাণকর রাষ্ট্রে বোধ হয় নেই। হামুরাবি ধন-সম্পত্তিতে ব্যক্তিগত অধিকার বিধিবদ্ধ করেন। মৃত স্বামীর ঘরবাড়ি ও ভূসম্পত্তিতে বিধবা স্ত্রীর অধিকারকেও তিনি স্বীকৃতি দেন।

হামুরাবির বিভিন্ন আইন থেকে তখনকার ব্যাবিলনের সমাজ-জীবনের একটা ছবি এঁকে নেওয়া যায়।

সমাজ ঃ ব্যাবিলনীয় সমাজকে মোটামুটি তিনটি শ্রেণীতে ভাগ করা যায়। ধনী ও অভিজাত বংশের লোক, যোদ্ধা ও রাজ-কর্মচারীরা ছিলেন সমাজের সবচেয়ে ওপরের তলার মানুষ। তার পরের ধাপে ফেলা যায় সাধারণ মানুষ, বণিক, কৃষক ও কারিগরদের। সকলের নিচে ছিল অসংখ্য ক্রীভদাস। সমাজে সম্রান্ত পরিবার-শুলোর এবং পুরোহিতদের প্রভাবই ছিল সবচেয়ে বেশি। শিল্পবাণিজ্যে সমৃদ্ধি ওপর তলার মানুষের স্থ্য-স্থ্য-স্থাবিধা বাড়িয়েছিল; কিন্তু খেটে খাওয়া সাধারণ মানুষের ভাগোর থুব একটা হেরফের হয় নি। পুরোহিতরা ধর্মাচরণ ও অর্থোপার্জন একই সঙ্গে করতেন এবং তাতে তাঁদের ওপরে জনসাধারণের বিশ্বাস ও শ্রাদ্ধা এতটুকু কমে নি। সাধারণ মানুষ তার ধর্মবিশ্বাসটুকু সম্বল করে ক্রেন্স্টে জীবন যাপন করত।

0

### অনুশীলনা

- ১। হামুরাবি কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ২। বাাবিলনের প্রাচীন ইতিহাস সংক্ষেপে বল।
- ৩। ব্যাবিলনের কৃষি ও বাণিজ্য নিয়ে সংক্ষেপে একটি প্রবন্ধ লেখ।
- 8। বাাবিলনের পুরোহিতদের সম্বন্ধে কী জান ?
- ৫। মানব-সভাতায় বাাবিলনীয়দের অবদান কী १
- । হামুরাবির আইন সম্বন্ধে কী জান ?
- ৭। বাাবিলনের সমাজ কেমন ছিল ?
- ৮। নিচের প্রশ্নগুলোর উত্তর দাও:
- (क) আসিরীয়দের সম্বন্ধে কী জান ? (খ) নেবুকাদনেজার কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ? (গ) ব্যাবিলনের কয়েকটি মুদ্রার নাম কর। (ঘ) ব্যাবিলনীয়রা ক'টি গ্রহের সঙ্গে পরিচিত ছিলেন ? গ্রহগুলো কী কী ?

#### ১। শুদ্ধ করে লেখ:

(ক) ব্যাবিলন শহরটি ছিল টাইগ্রীস নদীর তীরে। (খ) আসিরীয় রাজোর প্রতিষ্ঠা করেন অসুরবানিপাল। (গ) অসুরবানিপালের রানীর নাম এমাইটিস। (ঘ) ব্যাবিলনের ষাটটি শেকেল ছিল একটি ট্যালেন্টের সমান। (ঙ) ব্যাবিলনীয়রা বিষুবরেখাকে ৩০০ ডিগ্রিতে বিভক্ত করেছিল।

## দ্বিভীর পরিচ্ছেদ সাম্রাজ্যবাদী মিশুর

প্রায় হ'হাজার বছর ধরে ত্রিশটি রাজবংশ প্রাচীন মিশরে রাজত্ব করে। ২৭৫০ খ্রীস্টপূর্বাব্দ থেকে ২৪০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দ পর্যন্ত প্রায় সাড়ে তিনশো বছর তৃতীয়, চতুর্থ, পঞ্চম ও ষষ্ঠ রাজবংশের রাজারা মিশর শাসন করে। এর পরের কয়েকটি রাজবংশের ইতিহাস জানা যায় নি। বাদশ রাজবংশের শাসনকাল শুরু হয় ২০০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দে এবং শেষ হয় ১৭৫০ খ্রীস্টপূর্বাব্দে। পরবর্তী দেড়শো বছরের ইতিহাস বিশ্বর হাকা। এই সময়ে যাযাবর হিকসসরা মিশরে রাজত্ব করে। অষ্টাদশ রাজবংশের প্রতিষ্ঠাতা প্রথম আমোসের সময় থেকেই মিশরের গৌরবের যুগের শুরু হয়। ১৬০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দ থেকে ১১০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দ, এই পাঁচশো বছরকে মিশরের সামাজা-বিস্তারের যুগ বলা হয়। প্রথম আমোসে হিকসসদের বিতাড়িত করেন। তিনিই অষ্টাদশ রাজবংশের প্রতিষ্ঠাতা।

মিশরীয় উপনিবেশঃ মিটানিয়ান, হিটাইট এবং আসিরীয়দের
সামাজা-বিস্তারের ফলে মিশরীয়দের মনেও দেশ-জয়ের আকাজফা
প্রবল হয়। এদিকে হিকসসদের সঙ্গে যুদ্ধ করে মিশরীয়রা যুদ্ধবিভায়
রীতিমতো পরদর্শী হয়ে উঠেছিল। আমোসের পরে প্রথম থূথমোস
আসিরীয়দের পরাজিত করে ব্যাবিজন অধিকার করেন। তিনি
প্যালেস্টাইন ও সিরিয়ার বিজক্তেও অভিযান করেন। ঐ ছটি স্থানের
কয়েকটি নগরও তাঁর হস্তগত হয়। এর ফলে মিশরের খুবই লাভ
হয়। ঐ সব অঞ্চল থেকে মিশরীয়রা বহু দাস-দাসী, যুদ্ধান্ত্র লাভ করে
এবং প্রচুর সোনা-রূপো এনে তাদের রাজকোধের সম্পদ বৃদ্ধি করে।

পরবর্তী ফারাওরা পশ্চিম এশিয়ায় একটির পর একটি দেশ জয় করতে থাকেন। এইসব দিখিজয়ী রাজাদের মধ্যে তৃতীয় থুথমোসের নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। তিনি নানা দেশ জয় করে একটি সাম্রাজ্য গভে তলেছিলেন। আবিসিনিয়া থেকে ইউফ্রেটিস নদী পর্যন্ত বিস্তীর্ণ অঞ্চল জুড়ে ছিল তাঁর সাম্রাজ্য। কার্ণাকের মন্দিরের উৎকীর্ণ লিপিতে তাঁর দিখিজয়ের বর্ণনা আছে। সিংহাসনে বসেই তিনি সিরিয়ায় বিদ্রোহ দমন করে সিরিয়াকে মিশরীয় সাম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করেন। এ ছাড়াণ্ড, তিনি পশ্চিম এশিয়ার আরও কয়েকটি জায়গা অধিকার করেন। তাঁর নৌবাহিনী ভূমধ্যসাগরের কয়েকটি দ্বীপ দখল করে। মোট কথা, তৃতীয় থুথমোদের চেষ্টায় মিশর ভূমধ্যসাগরের পূর্ব-উপক্লের ওপর প্রভুত্ব স্থাপন করে। দিতীয় আমেনহোতেপের আমলে সিরিয়ায় বিদ্রোহ দেখা দিলে তিনি কঠোর হত্তে সেই বিদ্রোহ সমন করেন। সিরিয়া থেকে ফেরার সময়ে তিনি সাতজন রাজাকে বন্দী করে এনেছিলেন। ফারাও তৃতীয় আমেনহোতেপের সময়ে মিশর একটি সামাজাবাদী শক্তিতে পরিণত হয়েছিল। তার দীর্ঘ রাজত্বকালে ঐধর্যে আর প্রতিপত্তিতে মিশর ছিল অদিতীয়। রাজধানী থিবস্ এথর্বে আর জাঁকজমকে ছিল অতুলনীয়। তার পথে পথে নানাদেশী সওদাগরদের ভীড়, তার বাজারে বাজারে পৃথিবীর নানাদেশের জবাসামগ্রী, তার প্রাসাদত্ব্য সারি সারি অট্রালিকার অপূর্ব সৌন্দর্য। সাম্রাজ্য-বিস্তারের ফলে করদরাজ্য-গুলো থেকে প্রচুর ধন-সম্পদ মিশরকে ঐশ্বর্যশালী করে তুলেছিল। কারাওরা সেই সম্পদ দিয়ে যেসব প্রাসাদ, মন্দির ও পিরামিড নির্মাণ করেছেন, স্থাপত্য ও ভাস্কর্ব শিল্লের ইতিহাসে আজও তা অতুলনীয়। মিশরের ফারাওরা পশ্চিম এশিয়ায় নতুন নতুন উপনিবেশ স্থাপন না করলে এরকম শিল্প সৃষ্টি করা কখনও সম্ভব হোত না।

ন্ধিতীয় রামেশিসই ছিলেন মিশরের শেষ ক্ষমতাশালী ফারাও।
তারপর থেকেই মিশর ছর্বল হয়ে পড়ে। কিছুদিন আসিরীয়ার
অধীনে থাকার পর মিশর আবার স্বাধীন হয়। পরবর্তী কালে মিশর
পর পর পারস্তা, গ্রীস ও রোমের অধীন হয়। প্রাচীন মিশরের শেষ
রানীর নাম ক্লিওপেটা।

পুরে।হিতদের ক্ষমতাঃ মিশরের লোক ছিল জাতুতে বিশ্বাসী। জাতুবিশ্বাসী লোকের ওপর পুরোহিতদের প্রভাব খুবই বেশি। পুজে। মন্ত্রতন্ত্র, নানা যাগযজ্ঞের মধ্য দিয়ে পুরোহিতরাই মানুষের প্রার্থনা পৌছে দিতেন দেবতার কাছে। প্রাচীন যুগের সমাজে তাই পুরোহিতদের অসাধারণ ক্ষমতা ছিল। সাম্রাজ্ঞাবিস্তারের যুগে মিশরের দেবমন্দিরগুলোর সম্পদ যতই ফুলেফেঁপে উঠতে থাকে পুরোহিতদের ক্ষমতা ও আর্থিক স্বচ্ছসতাও ততই বাড়তে থাকে। কোনো দেবমন্দিরের পুরোহিতরা বিপুল সম্পদের অধিকারী হয়েছিলেন। পুরোহিতরা জ্ঞানচর্চা করতেন। মন্দিরসংলগ্ন বিভালয়ে তাঁরা জনসাধারণকে লেথাপড়া শেখাতেন। কলে জনসাধারণের ওপর তাঁদের প্রভাব খুব কম ছিল না।

তবে ব্যাবিলনের পুরোহিতদের মতো মিশরীয় পুরোহিতরা কখনো ক্ষমতাশালী হয়ে উঠতে পারেন নি। মিশরে ফারাও ছিলেন একাধারে দেবতা ও রাজা। জনসাধারণের কাছে দেবতা আমন-রা-এর পুত্র রূপেই তিনি পরিচিত। তিনিই ছিলেন সাবার প্রধান পুরোহিত। রাজপথে দেবমূর্তিকে নিয়ে উংসবের যে-শোভাষাত্রা বেরোড, ভার পুরোভাগে থাকভেন ফারাও। পুরোহিতরাই ফারাওয়ে<mark>র</mark> দেবতকে জনসমক্ষে প্রচার করতেন। মিশরের পুরোহিতরা ছিলেন রাজতন্ত্রের একটি আবিশ্যিক অঙ্গ। এক সময় আমনের পুরোহিতরা থুব ক্ষমভাশালী হয়ে ওঠেন। চতুর্থ আমেনহোতেপ তাঁদের ক্ষমতা থর্ব করার জন্মে ঘোষণা করলেন যে, আতোনই হচ্ছেন একমাত্র আরাধ্য দেবতা। এই দেবতার প্রতীক ছিল সূর্য। প্রজাদের তিনি আতোনের পুজো করতে বললেন। তার নতুন ধর্মকে আমনের পুরোহিতদের হাত থেকে রক্ষা করার জক্যে তিনি থিবস্ থেকে রাজধানী সরিয়ে নিয়ে গেলেন আমার্ণায়। ফারাও নিজের নামটিও পরিবর্তন করে নতুন 'আথেনাজোন' বা ইখ্নাটন (অর্থাৎ, যে আতোনকে সুখী করে) নামটি গ্রহণ করলেন। কিন্তু আখেনাভোনের মৃত্যুর পরেই আবার আমনের পুরোহিতরা তাঁদের ক্ষমতা পুনরুদ্ধার করেন।

### অনুশীলনী

- ১। কোন্ সময়কে মিশরের সামাজ্য-বিন্তারের যুগ বলা হয় ?
- ২। প্রথম আমোদে কে? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ७। প্রথম পুথমোস কী করেছিলেন ?
- ৪। তৃতীয় থুথমোসের কৃতিত্ব-সম্বন্ধে কী জান ?
- ৫। সামাজ্য-বিস্তারের ফলে মিশরের কী কী লাভ হয়েছিল ?
- ও। মিশরে পুরোহিতদের ক্ষমতা কিরূপ ছিল?
- ৭। আখেনাতোন কে? তাঁর সম্বন্ধে কী জান?

## ভৃতীয় পরিচ্ছেদ ইরান

পারস্থের উত্থানঃ আফগানিস্তান ও বেলুচিস্তানের পশ্চিমে যে দেশটি, তার নাম ইরান। প্রাচীনকালে আর্যদের একটি শাখা ইরানে বসতি স্থাপন করে। পরে মীড নামে একটি জাতি ইরান অধিকার করে। এক সময়ে মীডরা খুবই শক্তিশালী হয়ে উঠেছিল। তাদের এক রাজা আসিরীয়দের পরাজিত করে রাজধানী নিনেভে ধ্বংস করেছিলেন। এ সময়ে পারস্থও ছিল মীড-সাম্রাজ্যের অধীন। কিন্তু গ্রীস্টপূর্ব ষষ্ঠ শতাকীতে পারস্থের আন্শান্ প্রদেশের শাসনকর্তা সাইরাস মীড-রাজা এ্যাস্টায়েজেসকে সিংহাসনচ্যুত করেন। এ সময় থেকেই মীডিয়া পারস্থের অধীন হয়। পারসিকদের নাম অরুসারেই প্রাচীন ইরানের নাম হয় পারস্থ। এই পারস্থই এক সময়ে সমগ্র এশিয়া মাইনর এবং আরও অনেক দেশ জয় করে এক বিশাল সাম্রাজ্য স্থাপন করে। পারসিকদের আগে আর কেউ এত বড়ো সাম্রাজ্য গড়ে তুলতে পারে নি।

সাইরাস পারস্থে আখমেনীয় রাজবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। গ্রীক বীর আলেকজাণ্ডারের আগে সাইরাসের মতো এত বড়ো দিখিজয়ী বীর আর ছিল না। তিনি আসিরিয়া, ব্যাবিলোনিয়া, লিডিয়া এবং এশিয়া মাইনর জয় করে সিদ্ধুনদের তীর থেকে ভূমধ্যসাগর পর্যন্ত বিস্তীর্ণ অঞ্চল পারস্থ সামাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করেন। সাইরাস পরাজিত শক্রর

প্রতি সদর ব্যবহার করতেন। তাঁর বিশাল সাম্রাজ্যে নানা ধর্মমতের লোক বাদ করত। তিনি কারুর ধর্মাচরণে বাধা দিতেন না। সাইরাসের পুত্র ক্যাস্বাইসেস মিশরকে পারস্ত-সাম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করেন। দারায়ুসকে পারস্ত-সম্রাটদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বলা হয়। বেহিস্তান নামে একটি জারগার সমাট দারায়্সের একটি লিপি আবিষ্কৃত হয়েছে। লিপিতে পারসিক, আসিরীয় ও ব্যাবিলনীয় এই তিনটি ভাষায় দারায়ুসের রাজ্য-জয়ের গৌরবময় কাহিনী খোদাই করে রাখা হয়েছে। সিন্ধুনদের পশ্চিমে উত্তর-পশ্চিম ভারত ছিল পারস্ত-সামাজ্যের একটি প্রদেশ। পারস্থ সম্রাট এখান থেকে প্রতি বংসর ৪৬৮০ ট্যালেন্ট কর হিসেবে আদায় করতেন। এত বেশি পরিমাণ অর্থ কর হিসেবে আর কোনও প্রদেশ থেকেই পাওয়া যেত না। দারায়ুস একটি শক্তিশালী নৌবাহিনী গঠন করেছিলেন। তাঁর নৌ-সেনাপতি স্বাইলাস্ক সিন্ধুনদের তীর থেকে সুয়েজ উপসাগর পর্যস্ত জলপথ জরিপ করিয়েছিলেন। রাশিয়ার ভল্গা নদী পর্যন্ত তিনি সাত্রাজ্যের সীমা প্রসারিত করেন। শেষজ্ঞীবনে দিখিজয়ের বাসনায় তিনি গ্রীস আক্রমণ করেন। এই প্রদঙ্গে ঐতিহাসিক হেরোডোটাসের লেখা একটি গল্পের কথা তোমাদের বলছি। হেরোভোটাদের মতে, গ্রীস আক্রমণ করার ইচ্ছা দারায়ুসের আদে ছিল না। তিনি সিথিয়ানদের বিরুদ্ধে যুদ্ধযাত্রা করতে চেয়েছিলেন। কিন্তু এ্যাটোসা নামে তাঁর এক রানী নাকি সমাটকে বলেছিলেন, "আমি গ্রীস দেশের মেয়েদের দাসীরপে চাই।" রানীকে খুশি করার জক্তে দারায়্স গ্রীস আক্রমণ করেন। হেরোভোটাশের বিবরণ কতখানি সত্য, আজ তা বলা কঠিন। দারায়ুসের গ্রীস অভিযানের প্রধান কারণ অহা। তিনি গ্রীকদের ওপর কোনোদিনই সম্ভষ্ট ছিলেন না। তা ছাড়া, গ্রীস জম্ব করতে না পারলে ইয়োরোপ পর্যস্ত তিনি তাঁর সামাজ্যের সীমা কেমন করে প্রসারিত করবেন।

O

O

যাই হোক, দারায়ুদের গ্রীস অভিযান সফল হয় নি। ম্যারাথনের যুদ্ধে অল্পসংখ্যক গ্রীক সৈন্তের কাছে তাঁর বিশাল বাহিনী পরাজিভ হয়। এই যুদ্ধে গ্রীকদের সেনাপতি ছিলেন মিলটিয়াভিস্ নামে এথেন্সের একজন নাগরিক। পারসিকরা কিন্তু পরাজয়ের এই অপমান ভুলতে পারল না। ইতিমধ্যে দারায়ুসের মৃত্যু হলে তাঁর পুত্র জেরাকসেস এক বিশাল বাহিনী নিয়ে আবার গ্রীস আক্রমণ করলেন। থার্মোপাইলি নামে একটি সঙ্কীর্ণ গিরিপথে স্পার্টার লিওনিডাসের নেতৃত্বে অল্পসংখ্যক গ্রীক সৈক্ত পারসিক বাহিনীর গতি রোধ করল। লিওনিডাস এবং তাঁর সাহসী অন্তচরগণ যুদ্ধ করতে করতে বীরের মতো প্রাণ দিলেন। পঁচান্তর হাজার পারসিক সৈন্তোর বিরুদ্ধে কিছুই করা সম্ভব ছিল না। পারসিকরা এথেলো প্রবেশ করে নগরটি জালিয়ে দিয়েছিল। এর পরেও গ্রীসের সঙ্গে পারসিকদের একটি বড় রকমের জলযুদ্ধ হয়। সালামিস দ্বীপের প্রণালীতে গ্রীক নোবাহিনী পারসিক নোবাহিনীকে সম্পূর্ণ বিধ্বস্ত করে। এর পরে পারসিকরা আর কখনও গ্রীসে প্রবেশ করে নি। গ্রীস্টপূর্ব চতুর্থ শতকে গ্রীকবীর আলেকজাণ্ডার পারস্তা সমাট তৃতীয় দারায়ুসকে পরাজিত করে পারস্তকে গ্রীক-সামাজ্যের অন্তভু জি

জরথুস্ট্রের কথাঃ বৈদিক আর্যদের মতো ইরানীরাও বহু দেবতার পুজো করত; তারা জীবজন্ত ও পিতৃপুক্ষমেরও পুজো করত। এইসব দেব-দেবীর মধ্যে ছিলেন সূর্যদেবতা মিথু, পৃথিবীর দেবী অনায়িতা এবং বাঁড়-দেবতা হেওমা। আজ থেকে কয়েক হাজার বছর আগে প্রাচীন ইরানীদের মধ্যে এক মহাপুক্ষমের আবির্ভাব হয়। এর নাম জ্বরথুস্ট্র। জরথুস্ট্রের মৃত্যুর পর তাঁর উপদেশ ও বাণী যে-গ্রন্থে সঙ্কলিত হয়েছে, তার নাম 'আবেস্তা'। আমাদের কাছে বেদ যেমন পবিত্র গ্রন্থ, ইরানীদের কাছে আবেস্তাও তেমনি পবিত্র। বৈদিক স্থোত্রের মতো আবেস্তার স্থোত্রগুলিও থ্ব স্থানর।

. 10

ø

জরথুস্ট্রের ধর্মের মূলকথা থুব সহজ। জগতে ভালো আর মন্দ, আলো এবং অন্ধকার, স্থ এবং কু এই চু'রকম শক্তি আছে। একটি শক্তি মানুষের কল্যাণ সাধন করে, অপরটি হচ্ছে অকল্যাণের, অমঙ্গলের শক্তি। এই চু'রকম শক্তির মধ্যে অহরহ সংগ্রাম চলছে। জগতের স্টিকর্তা ঈশ্বর হলেন কল্যাণের শক্তি, আলোর দেবতা। জার নাম আহুর-মজদা। আর অকল্যাণের, কপটতার, অন্ধকারের দেবতার নাম অহিমান। অহিমানের সঙ্গে আহুর-মজদার সর্বদাই

দল্ব চলছে। মানুষ যদি স্থায়ের পথে থাকে, সদাচরণ করে, অসত্য না বলে, তা হলে আহুর-মজদারই পুজা করা হয়। এতে পৃথিবীর কল্যাণ হয়। জর্থুস্ট্রের মতে ভক্তি হচ্ছে শ্রেষ্ঠ ধর্ম, আর অবিশ্বাস হচ্ছে সবচেয়ে বড়ো পাপ। মানুষের তিন প্রকারের কর্তব্য আছে, যথা, শক্রকে মিত্র করা, ছষ্টকে সংপথে নিয়ে আসা এবং অজ্ঞকে জ্ঞান দান করা। আলোর দেবতা মিথু হলেন আহুর-মজদার সহায়। বেদেও 'মিত্র' নামে দেবতার উল্লেখ আছে। পার্শীরা অগ্নির উপাসনা করে না; তারা অগ্নিকে পবিত্র বলে মনে করে। অগ্নি হোল আলোকের এবং কল্যাণের উৎস। সেজন্মে তারা সব সময়ই আগুন জালিয়ে রাখত, কখনও নিবতে দিত না। প্রাচীন গ্রীসে, প্রাচীন রোমে এবং আমাদের দেশে আগুনকে অনির্বাণ রাখার এই প্রথা ছিল। পার্শীরা মৃতদেহ দাহ বা সমাহিত না করে লোকালয় থেকে দ্রে কোনও খোলা জায়গায় রেখে দেয়, যাতে পশুপাথিরা শবদেহ

পারস্থ সম্রাট দারায়ুস (১ম) শুধ্ জরথুস্ট্রের ধর্মই গ্রহণ করেন নি, তিনি একে রাষ্ট্রীয় ধর্মের মর্যাদা দিয়েছিলেন। সাসানীয় রাজাদের আমলেও পারস্থে জরথুস্ট্রের ধর্মের প্রভাব অক্ষুণ্ণ ছিল। কিন্তু পরবর্তী কালে তাতারদের আক্রমণের ফলে এই ধর্ম পারস্থ থেকে একেবারেই লোপ পায়। তবে ভারতবর্ষে যে-অল্পসংখ্যক পার্শী বাস করেন, তাঁরা জরথুস্ট্রের ধর্মের নিয়মকান্ত্রন আজ্রও মেনে চলেন।

## **जनू भी म**नी

- >। ইরানের প্রাচীন ইতিহাস-সম্বন্ধে কী জান ?
- ২। সাইরাস কে ? তাঁর সম্বন্ধে কাঁ জান ?
- ও। সম্রাট দারায়ুসের লিপিটি কোথায় পাওয়া গেছে ? লিপিটিভে কী লেখা আছে ?
- 8। দারায়ুসের গ্রীস অভিযান-সম্বন্ধে কী জান ?
- ৫। জরগুস্ট্র কে ? তিনি কখন জন্মগ্রহণ করেন ?
- । জরথ্স্ট্রের ধর্মের মূলকথা কী ?

৭। নিচের বাকাগুলোতে শৃন্যস্থান পূরণ কর:

(ক) — নাম অনুসারে প্রাচীন ইরানের নাম হয় পারস্য। (খ) — পরাজিত শক্রর প্রতি সদয় বাবহার করতেন। (গ) পারস্য সম্রাটদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ ছিলেন —। (ঘ) অন্ধকারের দেবতার নাম —। (৬) পার্শীরা — উপাসনা করে না; তারা — পবিত্র বলে মনে করে।

# চতুর্ব পরিচ্ছেদ ইত্রদিদের রাজ্য

এবার তোমাদের ইহুদি জাতির কথা বলব। তোমরা খ্রীস্টানদের ধর্মগ্রন্থ বাইবেলের নাম নিশ্চয়ই জান। বাইবেলের ওল্ড্ টেস্টামেণ্টে ইহুদিদের সম্বন্ধে অনেক কথাই আছে।

হিকসসদের মতো ইহুদিরাও পশ্চিম এশিয়ার সেমিটিক যাযাবার জাতির একটি শাখা। এরা প্রথমে মেষপালকের সরল যাযাবর জীবন যাপন করত। পরে (ইহুদিদের মতে, ২২০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দে) তারা জুড়া রাজ্যের প্রতিষ্ঠা করে। এই জুড়া রাজ্যটি ছিল প্যালেস্টাইনে।

মিশরে ইগুদিদের প্রবেশ ঃ ইগুদিরা কিন্তু তাদের মাতৃভূমিতে বেশিদিন বসবাস করতে পারে নি। মিশর, ব্যাবিলোনিয়া প্রভৃতি বড়ো বড়ো রাজ্যগুলোর লোভের শিকার হয়ে তারা বার বার আক্রান্ত হয়েছে। ফলে তাদের দেশ-দেশান্তরে ঘুরে বেড়াতে হয়েছে।

O

O

কারো কারো মতে, তারা ১৬৫০ খ্রীন্টান্দের কাছাকাছি সময়ে মিশরে প্রবেশ করে। সম্ভবত, জীবিকার অন্বেষণেই তারা মিশরে গিয়েছিল। সেখানে কিছুকাল বসবাস করার পরে হিকসসরা মিশর অধিকার করে। হিকসসরা ছিল ইত্দিদেরই একরকম জ্ঞাতি, যাযাবার সেমিটিক জাতির আর একটি শাখা। স্ক্তরাং, মিশরে হিকসসদের আধিপতা তাদের কাম্য ছিল। যতদিন হিকসসরা মিশর শাসন করেছে, ইত্দিরা ততদিন মোটামুটি স্থা-শাস্তিতে জীবন যাপন করেছে। কিন্তু মিশরের রাজা আমোসে মিশর থেকে হিকসসদের তাড়িয়ে দেবার পর থেকেই মিশরে ইত্দিদের ছ্র্ভাগ্যের

শুরু হয়। হিকসসদের সঙ্গে ইত্দিদের সম্প্রীতির কথা ফারাওয়ের অবিদিত ছিল না। তিনি এবার ইত্দিদের ওপর তার প্রতিশোধ নিলেন। ইত্দিমাত্রকে ক্রীতদাসে পরিণত করে তাদের দিয়ে অমানুষিক পরিপ্রমের কাজ করাতে লাগলেন। এভাবে ইত্দিদের ওপর চলল অত্যাচার আর নির্ধাতন। ইত্দিদের সংখ্যাও এক সময়ে অস্বাভাবিক রকম বেড়ে যায়। মিশরের কারাও নাকি এই জনবলবৃদ্ধিতে খুব ভয় পেয়ে তাদের ওপর নির্ধাতন শুরু করেছিলেন। যাই হোক, তিনশো বছরের বেশি কাল ইত্দিদের এরকম তুঃখের জীবন কাটে।

মিশর থেকে প্রস্থানঃ এবার তোমাদের ঈথর বা জেহোবার দূত মোজেদের কথা বলব। মোজেস বা মুসাকে ইহুদিরা ঈশ্বরের দূত বলেই মনে করে। কথিত আছে, জেহোবার আদেশে মোজেস ইহুদিদের নিয়ে মিশর ছেড়ে চলে যাবার অনুমতি চাইতে গেলে <mark>কারাও প্রথমে অসম্মতি জানান, কিন্তু পরে তিনি সম্মত হন। মোজেস</mark> ইহুদিদের নিয়ে লোহিত সাগরের তীরে উপস্থিত হয়ে ভাবতে লাগলেন কেমন করে সমুদ্র পার হবেন। হঠাৎ তিনি জেহোবার আদেশ শুনতে পেয়ে তাঁর হাতের লাঠিখানা সমুদ্রের জলের ওপর রাথলেন। মুহুর্তের মধ্যে সমুদ্রের জল ছ-পাশে সরে গিয়ে ইহুদিদের পথ করে দিল। তারা হেঁটে হেঁটে সমুদ্র পার হয়ে <mark>অনেক দূর এগিয়ে</mark> যেতেই দেখতে পেল ফারাও দৈল্লদামন্ত নিয়ে সমুজের তীরে এসে হাজির হয়েছেন। ইহুদিদের পেছনে তিনিও সদৈত্তে সমুদ্রে নেমে পড়লেন। জেহোবার আদেশে এবার মোজেস জলের ওপর তাঁর হাতখানা রাথতেই কল কল শব্দে ত্-পাশ থেকে জল ছুটে এদে পথ নিশ্চিক্ করে দিল। ফারাও তাঁর সেনাবাহিনী নিয়ে স্প্রিল সমাধি লাভ করলেন। ততক্ষণে মোজেস ইহুদিদের নিয়ে নিরাপদেই সমুদ্রের অপর তীরে গিয়ে পৌছেছেন। মিশর থেকে ইহুদিদের চলে আসাকে বলা হয় প্রস্থান (বা Exodus)। <mark>ঈথরের অনুগ্রহে ইহুদিরা এফ চরম বিপদের হাত থেকে রক্ষা পেল।</mark> ইত্দিদের নিয়ে মোজেদ দিনাই মরুভূমিতে প্রবেশ করলেন। তিনি সিনাই পর্বতে কিছুদিন থাকেন। এই সমগ্ন একদিন জেহোবা তাঁকে দশটি আদেশ দিলেন। দশটি আদেশ হল: (১) আমি প্রভূ এবং 
ঈশ্বর, (২) মূর্ভিপুজো করবে না, (৩) ঈশ্বরের নামে শপথ করবে না,
(৪) রবিবারকে পবিত্র মনে করবে, (৫) পিতামাতাকে সম্মান করবে,
(৬) নরহত্যা করবে না, (৭) চুরি করবে না, (৮) ফ্রীলোককে অসম্মান
করবে না, (৯) প্রভিবেশীর বিরুদ্ধে মিখ্যা সাক্ষ্য দেবে না, (১০)
প্রভিবেশীর কোন জিনিস বা সম্পত্তির প্রভি লোভ করবে না।
মোজেস ইহুদিদের এই দশটি আদেশ শোনালেন। দীর্ঘকাল পরে
নানা কষ্ট ভোগ করে অবশেষে একদিন ইহুদিরা গিয়ে ক্যানান বা
প্যালেস্টাইনে উপস্থিত হোল। জেহোবা নাকি বহুকাল আগে
তাদের এই স্থানটি দেবার প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন। প্যালেস্টাইনে
পৌছাবার আগেই পথে মোজেসের মৃত্যু হয়।

প্রতিশ্রুত দেশে: প্যালেস্টাইনে থাকার সময় ইত্দিদের সঙ্গে ফিলিস্টাইনদের অনেক যুদ্ধ-বিগ্রহ হয়। ফিলিস্টাইনরা যুদ্ধবিভায় ফিনিসীয়দের মতোই দক্ষ ছিল। তা ছাড়া, তারা যুদ্ধে লোহার অস্ত্রশস্ত্র ব্যবহার করত। সে সময়ে ইত্দিদের রাজা ছিলেন সল। তিনি ফিলিস্টাইনদের সঙ্গে যুদ্ধে প্রাণ হারান। ইত্দিদের পরবর্তী

রাজা ভেভিড ছিলেন প্রকৃতই বীর।
তিনি ফিলিস্টাইনদের সম্পূর্ণ পরাস্ত
করেন। তিনিই রাজধানী জেরুজালেমের
প্রতিষ্ঠা করেন। সলের পুত্র সলোমন
ছিলেন ইহুদিদের শ্রেষ্ঠ রাজা। তাঁর
ঐশ্বর্ধের সীমা ছিল না। বিচারক
হিসেবে তাঁর নাম আজও স্মরণীয় হয়ে
আছে। তিনি রাজধানী জেরুজালেমে



সলোমন

একটি স্থন্দর মন্দির নির্মাণ করান। ৯৩০ গ্রীস্টপূর্বাব্দে সলোমনের
মৃত্যুর প্রায় সঙ্গে সঙ্গে ইহুদিদের রাজ্ঞাটি হু-ভাগে ভাগ হয়ে যায়।
উত্তর খণ্ডটির নাম হয় ইজরায়েল। এই রাজ্ঞাটির রাজ্ঞধানীর নাম
সামারিয়া। দক্ষিণ খণ্ডটি নিয়ে জুডা নামে একটি নতুন রাজ্ঞা গড়েওঠে। জুডার রাজ্ঞধানীর নাম জেরুজ্ঞালেম। ৭২১ গ্রীস্টপূর্বাব্দে-

আসিরীয়ার রাজা ৩য় সারগণ ইজরায়েল অধিকার করেন। ৫৮৬ খ্রীস্টপূর্বান্দে ব্যাবিলন-রাজ ২য় নেবৃকাদনেজার জ্ডা দখল করেন। এরপর জেফজালেম পারসিক সামাজ্যের অস্তর্ভুক্ত হয়। পরে রোমসমাট টাইগ্রাস জেফজালেম দখল করেন।

হাজার হাজার বছর ধরে ইহুদিদের জীবন কেটেছে নানা ভাগা-বিপর্যরের মধ্য দিয়ে। বিভিন্ন রাষ্ট্রশক্তির আক্রমণে তারা বার বার লাঞ্ছিত ও নির্মাতিত হয়েছে, কিন্তু তাদের জাতীয় ঐক্যবোধ কখনও নষ্ট হয় নি। ইহুদিরা ধর্মপ্রাণ জাতি। তারা গভীরভাবে বিশ্বাস করে যে, ইশ্বর এক এবং অন্বিতীয়। অস্থান্ম জাতি থেকে তাদের-যে একটা স্বাভন্ত্র্য আছে এটা তারা মনে-প্রাণে বিশ্বাস করে। বোধ হয় এ কারণেই কোনো রাজনৈতিক বিপর্যয় তাদের জাতীয় ঐক্যবোধ নষ্ট করতে পারে নি। পশ্চিমী সভ্যভায় তাদের যথেষ্ট স্ববদান আছে।

### **अनुनी** मनी

- > 1 মিশরে ইছদিরা কখন প্রবেশ করে ? সেখানে তারা কিরূপ জাবন যাপন করত ?
- ২। মোজেস কে ? তাঁর সম্বন্ধে কি জান ?
- ত। মোজেসের নেতৃত্বে মিশর থেকে ইহুদিদের প্রস্থান—এ-বিষয়ে তুমি কী জান ?
- <sup>8</sup>। ইহুদিদের সঙ্গে ফিলিন্টাইনদের যে-যুদ্ধবিগ্রহ হয়, সে বিষয়ে তুমি সংক্ষেপে একটি প্রবন্ধ লেখ ?
- শ্বি কিছেল। কে । তিনি মোজেসকে যে-দশটি আদেশ দিয়েছিলেন,
   তার মধ্যে কয়েকটি আদেশ লিখে দেখাও।
- ৬। সলোমন কে । তাঁর সহক্ষে কী জান ।
- ৭। ইহুদিদের জাতীয় ঐক্যবোধ নষ্ট হয় নি কেন ?
- ৮। শৃন্যস্থান পূরণ কর:
- (ক) জুড়া রাজা ছিল —। (ব) মিশর থেকে চলে আসাকে বলা হ্য় —। (গ) ফিলিফাইনরা যুদ্ধে — অস্ত্রশস্ত্র ব্যবহার করত। (ঘ) জুড়ার ব্যাজধানীর নাম —। (ঙ) রোমসম্রাট — জেরুজালেম দখল করেন।

## পঞ্ম পরিচ্ছেদ গ্রীস

এখন তোমাদের যে-দেশটির কথা বলব, তার নাম গ্রীস।
বর্তমান সভ্যতায় গ্রীসের অনেক দান আছে। আবার গ্রীক সভ্যতাও
মিনোয়ানদের ধর্ম, শিল্প, শাসন-ব্যবস্থা প্রভৃতি দারা প্রভাবিত
হয়েছিল। কাজেই মিনোয়ানদের কথা না জানলে গ্রীসের ইতিহাসকে
পুরোপুরি জানা যাবে না।

ক্রীট দ্বীপের মিনোয়ান সভ্যতা: গ্রীসের দক্ষিণে ঈজিয়ান উপসাগরের বৃকে ক্রীট দ্বীপটি অবস্থিত। এখানে আজ থেকে কয়েক



হাজার বছর আগে মিনোয়ান সভ্যতার জন্ম হয়। মিশরের রাজাদের উপাধি ছিল ফারাও; তেমনি ক্রীটের রাজার উপাধি ছিল মিনোস। মিনোসের নাম অমুসারেই ক্রীটের লোকদের বলা হয় মিনোয়ান এবং ক্রীটের সভ্যতাকে মিনোয়ান সভ্যতা।

মিনোয়ানরা পাথর ও ব্রোঞ্জ দিয়ে নানারকম যন্ত্রপাতি তৈরি করত, সোনা-রূপো দিয়ে অলঙ্কার বানাত এবং স্থুন্দর স্থুন্দর মাটির পাত্র তৈরি করত। পরে ভারা অনেক নগর নির্মাণ করে। ২০০০ খ্রীস্টপূর্বাব্দ থেকে প্রায় সাড়ে চারশো বছর পর্যন্ত কালকে মিনোয়ান সভ্যতার গৌরবের যুগ বলা যেতে পারে। এ সময়ে রাজধানী নসস্ ছাড়াও ফিস্টাস, হার্জিয়া, মোচ্লস্ প্রভৃতি নগর নির্মিত হয়। এ সময়েই মিনোয়ানরা বিশাল বিশাল প্রাসাদ এবং অনেক অট্টালিকা নির্মাণ করে। তারা এক রকমের অক্ষরও আবিষ্কার করেছিল। ক্রীটের শাসন-বাবস্থা ছিল থুবই উন্নত। হোমার তাঁর ইলিয়ড মহাকাব্যে ক্রীটের গুণগান করেছেন। ক্রীটের সম্পদ আর সৌনদর্যের কথাও তিনি উল্লেথ করেছেন। ক্রীটের নাকি নববইটি শহর ছিল।

ঈজিয়ান উপসাগরের বাণিজ্যকে এক সময়ে ক্রীটের রাজা নিয়ন্ত্রণ করতেন। রাজা মিনোস মিশর, সিক্কু উপত্যকা প্রভৃতি দেশে<mark>র</mark> সঙ্গে ব্যবসা-বাপিজ্য করে অপরিমিত ধনরত্নের অধিকারী হয়েছিলেন। স্কিয়ান উপসাগরের বহু দ্বীপ এবং এথেন্সের মতো গ্রীসের আরও কয়েকটি অঞ্চল নিয়ে মিনোস একটি সাম্রাজ্য গড়ে তুলেছিলেন। রাজ। মিনোসকে নিয়ে গ্রীক সাহিত্যে অনেক গল্প রচিত হয়েছিল। একটি গল্প তোমরা অনেকেই পড়েছ। রাজা মিনোসের প্রাসাদের ভেতরে একটি গোপন স্থড়ঙ্গ ছিল। সেখানে তিনি একটি অদ্ভুত জীব পুষতেন। জীবটির নাম মিনোটার। তার দেহটা ছিল মানুষের, আর মাথাটা বাঁড়ের। মিনোটার মানুষের মাংস খেত। এক সময়ে এথেনে ঈজিয়াস নামে এক রাজা রাজত্ব করতেন। ক্রীটের রাজা মিনোস এথেন্স নগরটি অবরোধ করেছিলেন। নগরবাসীদের অমুরোধে মিনোস এথেন্সকে ধ্বংস না করে তাদের উপর একটা ভর্ত্বর শর্ত আরোপ করলেন। এই শর্ত অনুসারে, প্রতিবছর এথেনের সাত জন তরুণ আর সাত জন তরুণীকে ক্রীটে পাঠানো হোত। ঐ ভক্ল-ভক্নীদের মাংদে মিনোটার ভুরিভোক্ত করত। কিস্তু এক বছর এথেন্সের যুবরাজ থীসিয়াস নিজেই ক্রীটে গেলেন। ক্রীটের রাজকুমারী আরিয়াদ্নির সাহায্য নিয়ে একাই মিনোটারকে হত্যা করে তিনি এথেন্সের কলঙ্ক ঘোচালেন। গল্পটি পড়ে তোমাদের কি অনে হয় না যে, এক সময়ে এথেন্স ক্রীটের অধীনতা স্বীকার করেছিল ?

O

নসসের রাজপ্রাসাদের ধ্বংসাবশেষ থেকে মিনোয়ান সভ্যতার

কথা জানা গেছে। প্রাসাদের ভেতরে অসংখ্য ঘর—কোনোটা স্নানের, কোনোটা রান্নার। প্রাসাদের ভেতরেই আবার দরবার-কক্ষ। জল স্বরবরাহের ব্যবস্থা একেবারে আধুনিক কালের মতো।

ক্রীটে একটি পুরোপুরি নগর-সভাতা গড়ে উঠেছিল। কামার, কুমোর, ছুতোর, স্থাক্রা, স্থপতি, ভাস্কর প্রভৃতি নানা শ্রেণীর কারিগর বিভিন্ন শিল্প গড়ে তুলেছিল। রাজপ্রাসাদ ছাড়াও রাজধানী নসসে পাথর আর ইট দিয়ে বহু অট্টালিকা নির্মাণ করা হয়।

মিনোয়ানরা নাচ, গান ও আমোদ-প্রমোদ পছন্দ করত।
তারা যাঁড়ের লড়াই দেখতে খুবই ভালবাসত। নারী-পুরুষ সকলেই
অলঙ্কার পরত।

মিনোয়ানরা পাহাড়-পর্বত, গাছপালা, চন্দ্র-সূর্য প্রভৃতির পু<mark>জো</mark> করত। তারা মাতৃকাদেবীরও পুজো করত। তারা যাঁড়কে থুব শ্রুদ্ধার চোখে দেখত।

প্রীদ্টপূর্ব বোড়শ শতকে মাইসিনির প্রীকরা এসে ক্রীট দখল করে। তারা নসসের রাজপ্রাসাদটি জালিয়ে দেয়। মাইসিনীয়রা মিনোয়ানদের অন্থকরণে পাইলস, টিরিন, এথেন্স প্রভৃতি নগর গড়ে ভোলেন এসব নগরে ভারা স্থলর স্থলর অট্টালিকাণ্ড নির্মাণ করে। কিন্তু প্রীদ্টপূর্ব এয়োদশ শতকে একিয়ানরা মাইসিনির নগরগুলোতে লুঠপাট চালায়। এরা ক্রীট দ্বীপটি অধিকার করে। এরা, ছিল প্রীক জাতিরই একটি শাখা। একিয়ানরা কয়েকটি শক্তিশালা রাজ্যও গড়ে তুলেছিল। তার মধ্যে আর্গস ছিল একটি। এদের ওপরে ১১০০ খ্রীদ্টপূর্বাব্দের কাছাকাছি কোন সময়ে আক্রমণ আসে। আক্রমণকারীরা ছিল ডোরিয়ান গ্রীক। এরা ছিল অর্থসভা। কিন্তু ধীরে ধীরে এরা বিজিত্তদের সঙ্গে মেলামেশা করে তাদের সভ্যতা গ্রহণ করে। এভাবে মিনোয়ান, মাইসিনীয়, একিয়ান ও ডোরিয়ানদের সংমিশ্রণে গ্রীক জাতি ও গ্রীক সভ্যতার জন্ম হয়।

হোমারের যুগে গ্রীস ় মান্চিত্রে গ্রীস দেশটিকে দেখতে পাবে ভূমধাসাগরের উত্তর-পূর্ব তীরে। বর্তমানে এই দেশটির উত্তর-পূর্বে আলবানিয়া, উত্তরে যুগোল্লাভিয়া এবং উত্তর-পশ্চিমে বৃলগেরিয়া। পূর্বদিকে গ্রীস এবং তুরস্কের মাঝখানে ঈজিয়ান উপসাগর। গ্রীস

দেশের অধিবাসীদের বলা হয় গ্রীক। ইয়োরোপীয় সভ্যতার জন্ম গ্রীসের মাটিতে।

প্রাচীনকালে অর্ধসভ্য গ্রীকরা বন্ধান দেশের উত্তর-পশ্চিমাংশে

বাস করত। তারা পশুপালন করত। বহুকাল আগে তারা গ্রীদে এসে উপস্থিত হয়। নতুন জায়গায় আসার পর পুরনো বাসিন্দাদের সঙ্গে গ্রীকদের যুদ্ধ-বিগ্রহ হয়। এ রকম যুদ্ধবিগ্রহের কাহিনী নিয়েই রচিত হয়েছে ইলিয়ড ও ওডিসি নামে গ্রীক কবি হোমার এই মহাকাব্য হুথানি রচনা করেন। হোমার অন্ধ ছিলেন।



হোমার

ইলিয়ডের কাহিনীঃ আর্গদের রাজা এগামেমননের ভাই মেনিলাউস স্পার্টার রাজত করতেন। সে যুগে মেনিলাউসের রানী হেলেনের মতো সুন্দরী আর ছিল না। তথন এশিরা মাইনরের উপকৃলে ট্রয় নামে একটি সুন্দর রাজ্য ছিল। প্রিয়াম ছিলেন ট্রয়ের রাজা। একবার ট্রয়ের রাজক্মার প্যারিস স্পার্টায় এসে স্থন্দরী হেলেনকে চুরি করে নিয়ে যান। এতে গ্রীকদের খুবই অপমান হয়। তারা রাজা এগামেমননের নেতৃত্বে ট্রয় আক্রমণ করে। ট্রয় নগরী ছিল উচু পাঁচিল দিয়ে ঘেরা। দীর্ঘ দশ বছর পরে কৌশল অবলম্বন করে গ্রীকরা নগরীতে প্রবেশ করে। এরপর ট্রয়ের পতন হয়। হেলেন তাঁর স্থামীর কাছে কিরে যান। ট্রয়ের যুদ্ধে নেস্টর, একিলিস, ওডিসিয়ুস বা ইউলিসিস প্রভৃতি গ্রীকবীরেরা অপূর্ব বীরত্বের পরিচয় দেন।

ওভিসির কাহিনীঃ গ্রীক বীর ওভিসিয়ুস বা ইউলিসিসের আশ্চর্য ভ্রমণ-কাহিনী নিয়েই 'ওডিসি' মহাকাবাটি রচিত হয়েছিল। ওডিসিয়ুস ছিলেন ইথাকা রাজোর রাজা। ট্রয়-যুদ্ধের পরে তিনি স্বদেশের দিকে রওয়ানা হন। পথে সমুদ্রে তাঁর জাহাজ ডুবে যায়; এর পর থেকে তিনি একটার পর একটা বিপদের সম্থীন হন। কিন্তু অসাধারণ বৃদ্ধিবলে সব বিপদ কাটিয়ে উঠে তিনি দীর্ঘ কুড়ি বছর পর নিজের রাজ্যে ফিরে যান। তারপর নিজের সিংহাসন এবং স্ত্রী পেনিলোপকে শত্রুদের হাত থেকে মৃক্ত করে বাকি জীবন স্থাবে-শান্তিতে রাজত্ব করেন।

হোমারের যুগে গ্রীকদের জীবনযাতাঃ কৃষি ও পশুপালন ছিল সে যুগের গ্রীকদের প্রধান উপজীবিকা। প্রথমে তারা গ্রামেই বাস করত। পরে ছোট ছোট নগর গড়ে ওঠে এবং তারা নগরে বাস করতে থাকে। এক-একটা নগর নিম্নে গড়ে ওঠে আলাদা রাষ্ট্র। তথন রাজা ছিলেন বটে, তবে সমাজের আর দশজনের মতো তিনিও প্রমের কাজ করতেন। তিনি ছিলেন নগরের প্রধান পুরোহিত এবং প্রধান বিচারকর্তা। আবার যুদ্ধের সময় তিনিই সেনাবাহিনীকে পরিচালনা করতেন। গ্রীকরা ডাকাতি ও লুঠতরাজ করে বিদেশ পেকে ধন-সম্পত্তি নিয়ে আসত, লোকজনও ধরে আনত। তারপর তাদের হাটে-বাজারে বেচে দিত, অথবা বাড়িতে ক্রীতদাস করে রাখত। যাঁদের প্রচুর জমিজমা ছিল, তাঁরাই ছিলেন সম্ভ্রাস্ত। শাসনক্ষমতাও ছিল তাঁদেরই হাতে। তাঁদের নিচে ছিল স্বাধীন নাগরিক, স্বাধীন শ্রমিক প্রভৃতি। এই দ্বিতীয় শ্রেণীর স্বোকদের আর্থিক অবস্থা ভালো ছিল না। সকলের নিচে ছিল অসংখ্য ক্রীভদাস। চাষের কাজ, নানা রকম শিল্পের কাজ ক্রীভদাসরাই করত।

গ্রীক সমাজ গড়ে উঠেছিল পরিবারকে কেন্দ্র করে, আর পরিবারের কর্তাই ছিলেন সর্বেস্বা। পরিবারের আর সকলে কর্তার স্তুকুম মেনে চলত। মেয়েরা চরকা কাটত, তাঁত ব্নত, সেলাই করত।

গ্রীকদের ধর্মবিশ্বাস ও দেবদেবী: গ্রীকরা বিশ্বাস করত যে, তারা আদিপুরুষ ডিউক্যালিয়নের পুত্র হেলেনের বংশধর। এজত্যে তারা 'হেলেনীজ' বলে নিজেদের পরিচয় দিত আর নিজেদের দেশকে বলত হেলাস। গ্রীকরা বহু দেবদেবীতে বিশ্বাস করত। গুলিম্পাস নামে এক পাহাড়ের চূড়ায় তাদের দেবদেবীরা নাকি বাস করতেন। দেবতাদের রাজা ছিলেন জিউস; আপোলো তাঁর ছেলে আর এথেনা



মেয়ে। জিউসের স্ত্রীর আর একটি মেয়ে আ টেমিল ছিলেন শিকারের দেবী। আাপোলো সূর্যের দেবতা, আবার গীতবাদ্য এবং শিল্প-কলায়ও ভিনি দক্ষ। বর্তমান, অতীত আর ভবিষ্যং—এই তিন কালে এমন কিছু নেই যা তাঁর অজানা। প্রাচীনকালে গ্রীকরা ভবিশ্বং জানার জ্ঞাে দলে দলে ডেলফি নগরে দেবতা আপোলাের

0

এথেনা পদিতন

মন্দিরে গিয়ে ধরনা দিত। এথেনা একাধারে জ্ঞান ও যুদ্দের দেবী।

গ্রীদের বর্তমান রাজধানী এথেরে নামটি এসেছে এথেনার নাম থেকে। দেবরাজ জিউসের এক ভাই পসিডন হলেন সাগরের অধিপতি; অন্মজন হেড্স্ হলেন পাতালের রাজা। হার্মে হলেন দেবতাদের দৃত। গ্রীকরা যাগযজ্ঞ করত। দেবতাকে খুশি করার জন্মে তারা পশুবলিও দিত।

গ্রাসের নগর-রাষ্ট্রঃ ভালো করে লক্ষ করলেই দেখতে পাবে,
গ্রীস দেশের চেহারাটাই কেমন যেন ভাঙাচোরা, এবড়ো-পেবড়ো।
পাহাড় আর সমৃদ্র দেশটিকে খণ্ড খণ্ড করে দিয়েছে। তাই প্রাচীনকাল থেকেই এক-একটি খণ্ড নিয়ে এক-একটি রাজ্য গড়ে উঠেছে।
প্রত্যেকটি রাজ্যই আলাদা; রাষ্ট্রের গঠনও ছিল আলাদা। এথেল,
স্পার্টা, করিন্থ, থিবস্ প্রভৃতি রাজ্যের ইতিহাসই হোল গ্রীসের
ইতিহাস। এরকম একটা অবস্থায় সাধারণত যা ঘটে থাকে, গ্রীসেও
তাই ঘটেছিল। রাজ্যগুলোর মধ্যে সন্তাব তো ছিলই না, ছিল বরং
রেবারেরি আর প্রতিদ্বিতা। প্রায়ই এই রেবারেষি নিয়ে শেষ পর্যন্ত যুদ্ধবিগ্রহ হোত। নগর-রাষ্ট্রগুলোর মধ্যে কোথাও ছিল রাজার শাসন,
আবার কোথাও ছিল সাধারণতন্ত্র, অর্থাৎ জনগণের শাসন। রাজার
শাসনও যেখানে ছিল, সেখানে রাজা ছটি উপদেষ্টা পরিষদের পরামর্শ
নিয়ে রাজ্য শাসন করতেন।

প্রীক উপনিবেশঃ প্রীসের প্রধান ভূখণ্ডে ছোট ছোট নগরে
একটা সময়ে জনসংখ্যা খুব বেড়ে গিয়েছিল। নগরের সীমানার মধ্যে
বাড়িতি লোকের স্থান সন্ধুলান হোত না। তা ছাড়া, যেসব নগরে
জভিদ্নাতদের শাসন ছিল, সেখানে স্বাধীন নাগরিক, কারিগর প্রভৃতি
স্ববিচার পেত না। অভিদ্নাতরা নিজেদের স্বার্থে শাসনকার্য
পরিচালনা করতেন, আইন প্রয়োগ করতেন। তাঁদের বিরুদ্ধে
অভিযোগ করে কোনও ফল হোত না। বাড়তি লোকের কর্মসংস্থানের কোনো ব্যবস্থাও ছিল না। স্বাধীন নাগরিক ও কারিগরদের
মধ্যে অনেকেই ঋণের দায়ে মহাজনদের ক্রীতদাসে পরিণত হয়েছিল।
এসব কারণে গ্রীসের বিভিন্ন নগর থেকে দলে দলে লোক নতুন
নতুন উপনিবেশের সন্ধানে বেড়িয়ে পড়েছিল। এর ফলে কয়েক
শতাকীর মধ্যেই আফ্রিকা থেকে থেল গুল জিব্রাল্টার প্রণালী থেকে

কৃষ্ণসাগরের পূর্ব-সীমান্ত পর্যন্ত বিস্তীর্ণ অঞ্চল বাইজেন্টিয়াম, সাইরাকিউস, স্থামোস, প্রিয়েন, এফেসাস, সিয়োস, নেজ্রোস, মাইলেটাস এবং এমনি আরো বহু উপনিবেশ গড়ে ওঠে। এইসক উপনিবেশগুলোতে গ্রীসের বহু জ্ঞানীগুণী লোক জন্মগ্রহণ করেছেন। বিখ্যাত গ্রীক বিজ্ঞানী থেল্সের জন্মভূমি মাইলেটাস এবং দার্শনিক হেরাফ্রিটাসের জন্ম হয়েছিল এফেসাসে। করিন্তের অধিবাসীরা বিসিলির সাইরাকিউসে একটি উপনিবেশ গড়েছিল। গ্রীক বিজ্ঞানী আর্কিমিডিস এখানে জন্মগ্রহণ করেন (গ্রীস্টপূর্ব ২৮৭ অকে)।

প্রীকরা যে-নগরে বাস করত, সেই নগরের অমুকরণে তাদের নতুন উপনিবেশটি গড়ে তুলত। কেবল আচার-অমুষ্ঠান এবং ধর্মবিশাসের ক্ষেত্রেই নয়, এমন কি, শাসন-ব্যবস্থার ক্ষেত্রেও প্রপনিবেশিকরা তাদের পুরনো সংস্কৃতিকে বজায় রেখে চলত। প্রথম দিকে পুরনো নগর থেকেই তাদের খাত্য এবং অত্যাত্য প্রয়োজনীর জিনিসপত্র আসত। পরে প্রীকরা তাদের উপনিবেশগুলোতে নতুন নতুন শিল্প গড়ে তোলে। উপনিবেশগুলোর বাজারে প্রীসে উৎপত্ন শিল্পজাত অব্যের চাহিদা ক্রেমেই বাড়তে থাকে। আর্থিক দিক দিয়ে গ্রীস খ্বই লাভবান হয়। এথেক্যের পাথুরে জমিতে তেমন ক্সল কলত না। এথেক্যকে বরাবরই খাত্যশন্ত বাইরে থেকে আমদানি করতে হোত। শিল্পের জত্যে প্রয়োজনীয় খনিজ অব্যেরও যথেই অভাব ছিল। প্রীক উপনিবেশগুলো গড়ে উঠার পর থেকে এ-তৃটি অভাব মিটে যায়। উপনিবেশিকরা ভাবা, ধর্ম, রীতিনীতি প্রভৃতি সব কিছুরই মধ্য দিয়ে তাদের মাতৃভূমি প্রীসের সঙ্গে যোগাযোগ রক্ষা করে চলেছিল।

এখন তোমাদের গ্রীসের যে-ছটি নগর-রাষ্ট্রের কথা বলব, তার একটির নাম এথেন্স, অপরটির নাম স্পার্টা। গ্রীক-সভ্যতায় এ-ছটি নগরের অবদান বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

এথেনাঃ একটা মস্ত বড়ো ঢিবির পাদদেশ ঘিরে প্রাচীন এথেনা নগরটি গড়ে উঠেছিল। গ্রীকরা ঐ ঢিবিটাকে বলত অ্যাক্রোপোলিন। গ্রীকরা অ্যাক্রোপোলিসের চূড়ায় নগরীর অধিষ্ঠাত্রী দেবী এথেনার একটি স্থন্দর মন্দির নির্মাণ করেছিল।

রাজনৈতিক জীবন: এথেনো বড়ো বড়ো জমিদার ব

অভিজাতদের শাসনে সাধারণ মামুষ অভিষ্ঠ হয়ে উঠেছিল। এথেন্সে তথন নয় জন আর্কন শাসনকার্য পরিচালনা করতেন। সে সমরে স্বাধীন শ্রমিক এবং কারিগরদের হর্দশা চরমে উঠেছিল। বহু শ্রমিক, কুষক এবং কারিগর মহাজনদের দেনার দায়ে ক্রীতদাসের জীবন গ্রাহণ করতে বাধ্য হয়। ৬২০ খ্রীস্টাব্দে ড্রাকো নামে এক জন স্থার্কন পুরনো আইনের সংস্কার এবং কিছু কিছু নতুন আইন প্রণয়ন করেন। জ্ঞাকোর আইন কোনো কোনো ক্ষেত্রে থুবই কঠোর ছি**ল**। একটা বাঁধাকপি চুরি করার শাস্তি ছিল প্রাণদণ্ড। এ ধরনের আইন কাৰ্যত প্ৰয়োগ করা সম্ভৰ হয় নি। জ্যাকোর আইনে খেটে খাওয়া গরীব মানুষের কোনো সুবিধে হয় নি। ৫৯০ খ্রীস্টপূর্বানে সোলন নামে অভিজ্ঞাতবংশীয় এক ব্যক্তিকে আইন প্রণয়নের ভার দেওয়া হয়। সোলন আইন করে দেনার দায় থেকে সব মামুষকে মুক্তি দিলেন; সব বন্ধকী জমিও তিনি ছাড়িয়ে দিলেন। আগের থেকে বেশি সংখ্যক নাগরিককে শাসনকার্ধে অংশ গ্রহণ করার স্থ্যোগ দেওয়া হোল। সোলনই প্রথম জুরীদের বেতন দেবার ব্যবস্থা করেন। সোলনের পরে এথেন্সবাদীরা পিদিস্টেটাস নামে এক ব্যক্তিকে শাসনের চূড়ান্ত ক্ষমতা দান করে। পিসিক্টোস প্রায় কুড়ি বছর এথে<del>ল</del> শাসন করেন। এথেন্সে গণভন্ত্রের প্রতিষ্ঠা করেছিলেন ক্লিস্থিনিস নামে অভিজাতবংশীয় একটি লোক (৫০৭ খ্রীস্টপূর্বাব্দে)। তিনি ৫০০ জন সভোর একটি কাউলিলের ওপর এথেন্স শাসনের চূড়ান্ত ক্ষমতা স্থাস্ত করেন। জনসাধারণ এই প্রতিনিধিদের নির্বাচিত করত। কাউন্সিলের নির্দেশ অমুযায়ী আর্কনরা শাসনের কাজ চালাতেন। জনসাধারণের মধ্য থেকে দশজন সোককে সেনাপতি হিসেবে নির্বাচিত করা হোত। ক্লিস্থিনিসের আমল থেকেই নাগরিকেরা আগের ভূলনায় শাসনের কাজে বেশি অংশগ্রহণ করতে থাকে। পরবর্তী কালে পেরিক্লিসের আমলে এথেন্সে গণতত্ত্বের পরিপূর্ণ বিকাশ ঘটে। এতক্ষণ পর্যস্ত ভোমাদের এথেন্সের রাজনৈতিক অবস্থা সম্বন্ধে কিছু বলা হোল। এখন শোন এথেন্সবাসীদের সমাজ-জীবনের কথা।

সমাজ-জীবন ঃ এথেন্সের ছাত্ররা ছয় বছর থেকে যোল বছর বয়স পর্যন্ত পেশাদার শিক্ষকদের কাছে ইতিহাস, কাব্য, গান-বাজনা, ছবি আঁকা প্রভৃতি শিখত। একজন শিক্ষকই সব বিষয় পড়াতেন।
লেখাপড়ার সঙ্গে সঙ্গে নানা রকম ব্যায়াম ও শরীর চর্চারও ব্যবস্থা
ছিল। কোনো কোনো শিক্ষক এথেন্স নগরের পথে পথে ঘুরে
তরুণদের নানা শাস্ত্রের বিষয়ে শিক্ষা দিতেন। যোল বছর বয়স
পূর্ণ হলে ছাত্ররা শিবিরে গিয়ে জিমন্সান্টিক শিখত; শত্রুর আক্রমণ
থেকে নগরকে রক্ষা করার নানা রকম কৌশলও আয়ত্ত করত।
মেয়েরা বাড়িতে মায়ের কাছে স্কুতো কাটা, কাপড় বোনা, নানা রকম
নক্শার কাজ এবং গান-বাজনা শিখত। তেইশ বছর বয়স হলেই
এথেন্সের তরুণদের নাগরিক বলে গণ্য করা হোত।

এথেন্দের নাগরিক জীবন ছিল থুবই সরল। পুরুষরা বেশির ভাগ সময়ই রাস্তায়, হাটে-বাজ্ঞারে বন্ধু-বান্ধবদের সঙ্গে গল্পগুলুব করে কাটাত। রাজনীতি, সমাজ, শিল্প, সাহিত্যু, দর্শন প্রভৃতি বিষয়ে আলোচনা করে ভারা বেশ আনন্দ পেত। বিকেলে লোকসভায় গিয়ে তারা রাজনীতি অথবা বিচারের কাজ করত। এসব কাজ করার জন্মে ভাদের যথেষ্ট অবসরও ছিল, কারণ সংসারের সব শুমের কাজই করত ক্রীতদাসরা। এভাবে কাজ ও নানা প্রকার আমোদ-প্রমোদ ও আলোচনার মধ্যে দিন কাটত বলেই এথেন্সবাসীদের দেহ ও মন ছয়েরই বিকাশ ঘটেছিল।

স্পার্টাঃ মধ্য গ্রীসে যেমন এথেন্সের সমকক্ষ কেউ ছিল না, দক্ষিণ গ্রীসেও ভেমনি ছিল স্পার্টা।

রাজনৈতিক জীবন: স্পার্টার অধিবাসীদের রাজনৈতিক ও
সামাজিক জীবন সম্বন্ধে নানা রকম আইন প্রণয়ন করেছিলেন যিনি,
তাঁর নাম লাইকারগাস। তিনি ছিলেন স্পার্টার রাজা চারিলাউসের
অভিভাবক ও আত্মীয়। শোনা যায়, লাইকারগাস ক্রীটের শাসনব্যবস্থার সঙ্গে সঙ্গতি রেখে নাকি স্পার্টার জন্ম নানাবিধ আইন
রচনা করেন। স্পার্টায় একসঙ্গে হ'জন রাজা রাজত্ব করতেন।
শাসনকার্ধে রাজাকে পরামর্শ দিভেন ছটি উপদেষ্টা পরিষদ।
'জেরুসিয়া' (Gerousia) বা 'সিনেট' ছিল বয়োবৃদ্ধদের। দ্বিতীয়
পরিষদটিকে বলা হোত 'এ্যাপেলা'। তিরিশ বছর বয়স্ক স্পার্টার
যে-কোনো নাগরিক 'এ্যাপেলা'র সদস্য হতে পারতেন। এ্যাপেলাক্স

সম্মতি ছাড়া আইন পাশ করা যেও না। পারসিকদের আক্রমণের পর থেকেই রাজার ক্ষমতা কমতে থাকে; পাঁচজন নির্বাচিত ম্যাজিস্ট্রেটের হাতে শাসন-ক্ষমতা চলে যায়। এঁদের বলা হোত এফর। এঁরাই আইন নিয়ে যতকিছু বিবাদ-বিতর্কের মীমাংসা করতেন, যুদ্ধের সময়ে সেনাবাহিনীকে পরিচালনা করতেন এবং প্রয়োজনবোধে শাসন-সংক্রান্ত নানা বিষয়ে রাজাকেও নির্দেশ দিতেন।

সমাজ-জীবনঃ স্পার্টার শিক্ষাপদ্ধতি ছিল এথেন্সের থেকে সম্পূর্ণ আলাদা। লাইকারগাসের আইন রচনার ফলে স্পার্টা রীতিমতো একটি যুদ্ধ-শিবিরে পরিণত হয়েছিল। স্পার্টানরা যুদ্ধবিভায় সুশিক্ষিত হওয়াকে জীবনের সবচেয়ে বড়ো কাজ বলেমনে করত। স্পার্টায় সাত ব্ছর বয়েস থেকেই বালকদের শিক্ষার দায়িত নিতেন সরকার। ঐ সময় থেকেই সেনানিবাসে তাদের সামরিক শিক্ষা আরম্ভ হোত। কি শীত, কি গ্রীম্ম, সব সময়েই ঘরের বাইরে থড়ের বিছানায় শুয়ে তাদের ঘুমোতে হোত। বছরে মাত্র একখানা কাপড় ছিল তাদের বরাদ। পায়ে জুতোর কোনও বালাই ছিল না। তাদের বরাদ খাবারের পরিমাণও ছিল খুব কম। স্পার্টান তরুণরা সবরকম খিদে-তেষ্টা এবং তুঃখকষ্ট মুখ বৃদ্ধে সহা করার শিক্ষালাভ করত। ত্রিশ বছর বয়স হলে ছেলেরা এবং কুড়ি বছর বয়স হলে মেয়েরা বিশ্নে করতে পারত। দৌড়-ঝাঁপ, নাচ, কুন্তি প্রভৃতি করে মেয়েদের দেহও সবল রাখতে হোত। স্পাটায় বিকলাঙ্গ বা রুগ্ণ শিশু জন্মালে তাকে মেরে ফেলা হোত। এরকম শিক্ষার ফলে স্পার্টার নাগরিকরা সাহসী ও কষ্টসহিষ্ণু দৈনিক হতে পেরেছিল। এক সময় সমগ্র গ্রীসের ওপরে স্পার্টা আধিপতা বিস্তার করেছিল। কিন্তু গ্রীসের শিক্ষাদীক্ষা ও শিল্পচর্চায় যা-কিছু দান, তা এথেন্সেরই, স্পার্টার নয়।

গ্রীক নগর-রাষ্ট্রগুলোর মধ্যে কে শ্রেষ্ঠ—এই নিয়ে রেষারেষির অস্ত ছিল না। এথেন্স ও স্পার্টার মধ্যে এই রেষারেষি ও প্রতিদ্বন্দিভাকে কেন্দ্র করে শেষ পর্যস্ত যুদ্ধবিগ্রহ হয়। এখন ভোমাদের সেই বিষয়ে কিছু বলব।

এথেন্সের সঙ্গে স্পার্টার সংঘর্ষঃ প্রীস্টপূর্ব পঞ্চম শতাকীতে পেরিক্রিসের আমলে এথেন্স নৌবলে খুবই বলীয়ান হয়ে ওঠে। পেরিক্লিস এথেন্সের নেতৃত্বে একটি সান্রাজ্য গড়ে তুলেছিলেন। স্পার্টার নৌবল তেমন ছিল না, তবে স্থলমুদ্ধে তার সঙ্গে এথেন্স পেরে উঠত না। এথেন্সের শক্তিবৃদ্ধি স্পার্টা খুব স্থনজরে দেখে নি, শেষ পর্যন্ত করিন্থের ছটি উপনিবেশ কর্কিরা এবং পটিডিয়াকে কেন্দ্র করে স্পার্টার সঙ্গে এথেন্সের যুক্ত বাথে (৪৩১ খ্রীস্টপূর্বান্ধ)। প্রায় সাভাশ বছর ধরে এই যুক্ত চলে। ৪০৪ খ্রীস্টপূর্বান্ধে এথেন্সের চূড়ান্ত পরাজয়ের মধ্য দিয়ে যুদ্ধের শেষ হয়। এই যুক্ত পেলোপনেসিয়ার যুক্ত নামে খ্যাত। পেলোপনেসিয়ার যুদ্ধের পর সমগ্র গ্রীসের ওপর স্পার্টার আধিপত্য স্থাপিত হয়। ৩৩৩ খ্রীস্টপূর্বান্ধে ম্যাসিডন রাজ্যের রাজা ফিলিপ সমগ্র গ্রীস অধিকার করেন। ফিলিপের পুত্র দিয়িজয়ী আলেকজাণ্ডার কেমন করে গ্রীসের সভ্যতাকে এশিয়া ও ইয়োরোপের দিকে দিকে প্রসারিত করেন, সে কথা তোমরা পরে শুনবে। এখন তোমাদের বলব সেই এথেন্সের কথা, যে-এথেন্স পেরিক্লিসের আমলে সাহিত্য, শিল্ল, ধর্ম, দর্শন প্রভৃতির ক্লেত্রে অভৃতপূর্ব উন্নতি করেছিল।

এথেলের গৌরবময় যুগঃ পেরিক্লিসের সময়ে (৪৯৯ খ্রীস্টপ্রান্দ থেকে ৪২৯ খ্রীস্টপ্রান্দ ) সাহিত্য, শিল্প, বিজ্ঞান, ধর্ম,

দর্শন প্রভৃতি চিন্তার নানা ক্ষেত্রে এথেন্সবাসীরা অসাধারণ ক্বভিত্তের পরিচয় দান করে। এজন্মে এই কাসটিকে বলা হয় গ্রীসের স্বর্ব যুগ।

পেরিক্লিসঃ পেরিক্লিসের পিতা জ্যান্থিপাস সালামিসের যুদ্ধে অংশ গ্রহণ করেছিলেন। ম্যারাথনের যুদ্ধের প্রায় চার বছর আগে পেরিক্লিসের জন্ম হয়। তিনি ৩• বছরেরও বেশি সময় এথেন্সের শাসনকার্য পরিচালনা করেন। তিনি চমৎকার বক্তৃতা দিতে পারতেন।



পেরিক্লিস

তিনি এথেন্সের আভ্যস্তরীণ শাসনে শৃগুলা ফিরিয়ে আনেন। তাঁর নেতৃত্বে সমগ্র গ্রীসের মধ্যে এথেন্স নৌশক্তিতে শ্রেষ্ঠত্ব অর্জন করে। পণতান্ত্রিক ধ্যান-ধারণাকে পেরিক্লিস যথাসম্ভব বাস্তব রূপ দেবার চেষ্টা করেছিলেন। তিনি এথেন্সে বহু নতুন অট্টালিকা নির্মাণ করিয়ে-ছিলেন। এথেনা দেবীর মন্দিরটি পারসিকদের আক্রমশের ফলে



পার্থেনন

ভীষণভাবে ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছিল। তিনি বহু অর্থ বায় করে সেকালের শ্রেষ্ঠ ভাস্কর ফিডিয়াসকে দিয়ে এথেনা দেবীর মন্দিরটি নতুন করে তৈরি করান। এই মন্দিরের নাম পার্থেনন। ৪২০ খ্রীস্টপূর্বাব্দে পেরিক্লিসের মৃত্যু হয়।

শিল্প: এথেনা দেবীর মূর্তিটি গড়া হয়েছিল হাতির দাঁত দিরে;
দেবীর বসন ছিল সোনার। ফিডিয়াস এথেনা দেবীর আরও একটি
মূর্তি নির্মাণ করেছিলেন ব্রোঞ্জ দিয়ে। মন্দিরের মধ্যে মূর্তিটিকে
এমনভাবে রাখা হয়েছিল যে, সমুদ্রপথে বহুদূর থেকে মূর্তিটি দেখা
যেত। ফিডিয়াস দেবরাজ জিউসের যে-মূর্তিটি নির্মাণ করেছিলেন
ভাও একটি অবিম্মরণীয় শিল্পকীর্তি। পেরিক্রিস ক্যালিক্রেটিস এবং
ইক্টিনাস নামে হজন শিল্পীর তত্তাবধানে এথেলে বহু নতুন নতুন
স্মান্তিকা, মন্দির ও তোরণ নির্মাণ করান।

সাহিত্যঃ শিল্পের মতো সাহিত্যের ক্ষেত্রেও পেরিব্লিসের আমলের এথেন্স তার প্রতিভার পরিচয় রেখে গেছে। এস্কাইলাস, সোফোক্লিস, ইউরিপিডিস, এরিস্টোফিনিস প্রভৃতি অসাধারণ প্রতিভাসম্পন্ন নাট্যকারেরা তাঁদের শ্রেষ্ঠ নাটকগুলো এ যুগেই রচনা করেন। এদের প্রথম তিনজন বিয়োগান্ত নাটক রচনা করেন। প্রিস্টোফিনিস কমেডি বা প্রহসন রচনা করেন। এস্কাইলাসের বয়স <mark>যধন মাত্র ২৭ বছর তখন তাঁর প্রথম নাটক প্রকাশিত হয়। ৪১ বছর</mark> বয়সে তিনি শ্রেষ্ঠ নাট্যকারের সম্মান লাভ করেন।

৪৬৮ খ্রীদ্টপূর্বাবেদ শ্রেষ্ঠ নাট্যকার হিসাবে মনোনীত হয়েছিলেন যিনি, তাঁর নাম সোফোক্লিস। সোফোক্লিসের বয়স তথনমাত্র পঁচিশ বছর। এথেন্সের উপকঠে কলোনাস নামে একটি জায়গায় তাঁর জন্ম হয়। ভিনি ছিলেন পেরিক্লিসের ঘনিষ্ঠ বয়ু। ভিনি বিভিন্ন সময়ে এথেন্সের শাসনকার্যে দায়িত্বপূর্ণ পদে অধিষ্ঠিত ছিলেন। ভিনি মোট ১১৩ থানা নাটক লেখেন। ৪০৬ খ্রীদ্টপূর্বাবেদ সোফোক্লিসের মৃত্যু হয়।

ইউরিপিডিসের সেখা ৭৫ খানা নাটকের মধ্যে মাত্র ১৮ খানা পাওয়া গেছে।

ইতিহাসঃ ইতিহাস রচনার ক্ষেত্রেও এপেন্সবাসীরা পিছিয়ে



হেরোডোটাস

থাকে নি। এথেন্সের অধিবাসী হেরোডোটাসকে ইতিহাসের জনক বলা হয়।
তিনি যখন এথেন্সে বাস করতেন;
তখনই তাঁর বিখ্যাত ইতিহাস গ্রন্থখানি
রচনা করেন। এশিয়া মাইনরের
হেলিকারনেসাস নগরের এক সম্রাস্ত
পরিবারে হেরোভোটাসের জন্ম হয়
(৪৮৪ খ্রীস্টপূর্বাকে)। তিনি ফিনিসিয়া,
মিশর, ইরান প্রভৃতি দেশ বেড়িয়ে

ইতিহাসের অনেক মূল্যবান তথ্য সংগ্রহ করেন। ৪৪৭ খ্রীস্টপূর্বাব্দে এথেনে ফিরে এসে তিনি তাঁর বিখ্যাত ইতিহাস গ্রন্থখানি লেখেন।

হেরোডোটাসের প্রায় পঞ্চাশ বছর পরে থুকিডিডিস নামে আর একজন প্রতিভাশালী ইতিহাস লেখকের আবির্ভাব হয়।
থুকিডিডিসের এন্থের বিষয়বস্ত হচ্ছে পেলোপনেসিয়ার যুদ্ধ।

দর্শন ঃ চিস্তার ক্ষেত্রেও পেরিক্লিসের যুগে সক্রেটিসের মতে। বিস্ময়কর প্রতিভার স্থাই হয়েছিল। সক্রেটিস শুধু সে যুগের শ্রেষ্ঠ দার্শনিকই ছিলেন না, তাঁর চিস্তা আজও পর্যন্ত আমাদের সভাতার অমৃশ্য সম্পদ হয়ে রয়েছে। তিনি কোনো বই লিখে রেখে যান নি।
তিনি এথেন্সের রাস্তায় রাস্তায় ঘুরে বেড়াভেন এবং স্থােগ পেলেই
পণ্ডিতদের সঙ্গে নানা রকম আলোচনা করতেন। ক্ষুরধার যুক্তির
সাহায্যে তিনি প্রতিপক্ষের সিদ্ধান্তকে অসার বলে প্রমাণ করতেন।
সক্রেটিস বৃদ্ধিকে সবচেয়ে বেশি গুরুত্ব দিভেন। তিনি বলতেন,
কোনো কিছুই অভ্রান্ত বলে মেনে নেওয়া যায় না, যদি বৃদ্ধির বিচারে
তা অভ্রান্ত বলে মনে না হয়। জ্ঞান ও সত্য—এই ছটি জিনিসকেই
তিনি সবচেয়ে বেশি মৃল্য দিয়েছিলেন। সক্রেটিসের পিতা
সোফোনিকাস পাথর কেটে মৃতি নির্মাণ করতেন। সক্রেটিস নিজেও
সেই কাজ করতেন। অথচ এ রকম সাধারণ জীবন্যাপন করেও
দর্শন শাস্তের চর্চায় তিনি জীবন কাটিয়ে দিয়েছিলেন। জ্ঞানের
কোনো অহম্বারই তাঁর ছিল না। সক্রেটিসের বহু ছাত্রের মধ্যে
প্রেটোর নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। প্লেটোর লেখা থেকেই সক্রেটিস
সম্বন্ধে আমরা অনেক কথা জানতে পারি।

এথেন্সের একদল লোক মনে করতেন যে, সক্রেটিসের কু-শিক্ষায় এথেন্সের যুবকরা নাস্তিক হয়ে পড়েছে। এদের মধ্যে আনিটাস-নামে



সক্রেটিসের বিষপান

এক ব্যক্তিও ছিলেন। তিনি সক্রেটিসের বিরুদ্ধে অভিযোগ তোলেন।

সক্রেটিসের বিচার হয় এবং বিচারে তাঁকে প্রাণদণ্ডে দণ্ডিত করা হয়।
এথেন্সের প্রথা অনুসারে, তাঁকে একটি পাত্রে হেমলক বিব পান
করতে দেওয়া হয়। তিনি বিষপান করে মৃত্যুর কোলে ঢলে পড়েন।
-মৃত্যুকালে তাঁর প্রিয় ছাত্ররা তাঁর চারপাশে ছিলেন। এমনি করে
৩৯৯ খ্রীস্টাব্দে দার্শনিক সক্রেটিসের জীবনদীপ নিবে যায়।
এথেন্সের গৌরবের যুগও শেষ হয়।

সক্রেটিসের শিশ্যদের মধ্যে একজন ছিলেন প্লেটো। ধনীর সস্তান প্লেটো সঙ্গীত, চিত্রবিভা, কাব্য, নাটক প্রভৃতি নানা বিষয়ে স্পণ্ডিত ছিলেন।

প্রেটোর এক ছাত্রের নাম এ্যারিস্ট্ল। ছাত্র হিসেবে এ্যারিস্ট্ল ছিলেন অসাধারণ মেধাবী। নানা বিষয়ে তাঁর জ্বগাধ পাণ্ডিত্য ছিল। তাঁর খ্যাতির কথা শুনে ম্যাসিডন রাজ্যের রাজা কিলিপ তাঁকে তরুণ যুবরাজ আলেকজাণ্ডারের গৃহশিক্ষক নিযুক্ত করেন।

এবার ভোমাদের ম্যাসিডন রাজ্যের কথা বলব।

ম্যাসিডন রাজ্যের কথা: গ্রীসের নগর-রাষ্ট্রগুলোর মধ্যে যথন আত্মকলহ চলছিল, তথন থেসালির উত্তরে ছোট ম্যাসিডন রাজাটিও ধীরে ধীরে শক্তি সঞ্চয় করছিল। লিউক্টা এবং ম্যান্টিনিয়ার ছটি বুদ্ধে থিবসের সেনাপতি এপামিনোভাস স্পার্টানদের পরাজিত করার ফলে স্পার্টার পতন হয়, কিন্তু ম্যান্টিনিয়ার বুদ্ধে এপামিনোভাস নিজেও নিহত হন (৩২২ খ্রীস্টান্ধান)। পেলোপনেসিয়ার বুদ্ধে প্রমাণিত হয়েছিল যে, গ্রীস নগর-রাষ্ট্রগুলোকে একটি সুশৃঙ্খল রাষ্ট্রশক্তির অধীনে একত্রিত করার মতো ক্ষমতা এথেন্সের নেই। স্পার্টারপ্তনের কেন্সমতা নেই, ম্যান্টিনিয়ার বুদ্ধে তার প্রমাণ পাওয়া গেল। আসলে, ক্রমাণত যুদ্ধ ও আভান্তরীপ প্রেণীসংগ্রাম গ্রীসের নগর রাষ্ট্রগুলোর শক্তি নিঃশেষিত করে দিয়েছিল। কাঙ্গেই ৩০৮ খ্রীস্টাবেল ম্যাসিডনের রাজা ফিলিপ ব্যথন গ্রীস আক্রমণ করলেন, সে আক্রমণ রোধ করার শক্তি গ্রীসের আর ছিল না। চারোনিয়ার বুদ্ধে জয়লাভের পর গ্রীস ফিলিপের করার ছিল না। চারোনিয়ার বুদ্ধে জয়লাভের পর গ্রীস ফিলিপের করার হেলে, কিন্তু তিনি গ্রীসের সভ্যতা ও সংস্কৃতিকে শ্রানার করার দ্বিলে প্রামার বিদ্যার স্থান স্বাত্যাত ও সংস্কৃতিকে শ্রানার করার স্থান প্রামার ব্যার স্থান স্থাতা ও সংস্কৃতিকে শ্রানার করার শক্তি গ্রীসের করার হিল লা।

চোখে দেখতেন। ফিলিপের পুত্র আলেকজাণ্ডারও গ্রীক সভাতার প্রতি খুব শ্রেজাবান ছিলেন। গ্রীস জয়ের পর ফিলিপ পারস্থের বিরুদ্ধে অভিযানের আয়োজন করলেন। কিন্তু অভিযান শুরু হওয়ার আগেই পৌসেনিয়াস নামে এক সৈনিকের হাতে তিনি নিহত হন।

আলেকজাগুর যখন ম্যাসিডনের সিংহাসনে আরোহণ করেন, তখন তাঁর বরুস মাত্র বিশ বছর। কিন্তু বয়সে তরুণ হলেও তাঁর



গ্রীকবীর আলেকজাণ্ডার

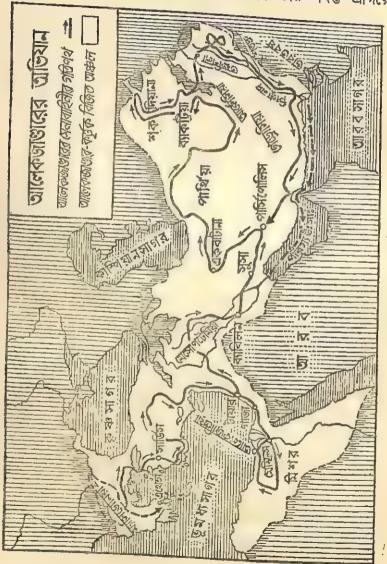
সাহস ও বীর ছ ছিল অসাধারণ।
আলেকজাণ্ডার একে একে এশিয়া
মাইনর, সিরিয়া, ফিনিসিয়া এবং মিশর
জ্বর করলেন। মিশরে তিনি নিজের
নামামুসারে আলেকজান্তিয়া নগর
ভাগন করেন। এর পর তিনি টায়ারে
ফিরে গিয়ে মেসোপটেমিয়ায় প্রবেশ
করেন। আরবেলার কাছে পারস্থ সম্রাট
৩য় দারায়ুসের প্রধান সেনাবাহিনীর
সঙ্গে আলেকজাণ্ডারের যুদ্ধ হয়।
পারস্থ সম্রাট পালাতে গিয়ে বেসাস

নামে এক আততায়ীর হাতে নিহত হন। আলেকজাণ্ডার পারস্থের সিংহাসন অধিকার করেন এবং পারস্থের রাজকুমারী রক্সানাকে বিয়ে করেন। ব্যাবিলন, সুসা শ্রভৃতি আলেকজাণ্ডারের কাছে আত্ম-সমর্পণ করে। এর পর আলেকজাণ্ডার পার্সিপোলিস অধিকারঃ করেন এবং একবাটানার পার্থিয়ানদের পরাজিত করেন।

৩২৭ খ্রীস্টপূর্বান্দে আলেকজাণ্ডার হিমালয়ের দক্ষিণে ভারতে প্রবেশ করেন। ভারতের উত্তর-পশ্চিম সীমান্তে তথন অনেকণ্ডলি ছোটো ছোটো জনপদ ছিল। আলেকজাণ্ডার কয়েকটি রাজ্য জয় করে তক্ষশিলায় এসে উপস্থিত হন। তক্ষশিলার রাজা অন্তি বিনা যুদ্দে তাঁর বশ্যতা স্বীকার করেন। অন্তির প্রতিবেশী রাজ্য পোরবের বীর রাজা পুরু আলেকজাণ্ডারের সঙ্গে যুদ্দ করেন। প্রাণপণ যুদ্দ করেও পুরু পরাজিত হন। বন্দী পুরুকে আলেকজাণ্ডারের সামনে আনা হলে আলেকজাণ্ডারে তাঁকে প্রশ্ন করেছিলেন, "আপনি আমার তাঁকে

কাছে কিরপ ব্যবহার আশা করেন ?" পুরু নির্ভয়ে উত্তর দিয়েছিলেন, "রাজার মত।" পুরুর সাহসে মুগ্ধ হয়ে আলেকজ্বাণ্ডার তাঁকে শুধু বন্ধুত্বেই বরণ করেন নি, তাঁর রাজ্যও তাঁকে ফিরিয়ে দিয়েছিলেন।

এর পর আলেকজাণ্ডার বিপাশা নদীর তীর পর্যন্ত এগিয়ে



গেলেন। কিন্তু তাঁর সেনাবাহিনী বেঁকে বসল। একটার পর একটা যুদ্ধ করে তারা ভারি ক্লাস্ত হয়ে পড়েছিল। এ অবস্থায় মগথের বিরাট সেনাবাহিনীর মুখোমুখী হওয়ার ইচ্ছে আর তাদের ছিল না। স্বতরাং আলেকজাণ্ডার স্বদেশের দিকে ফিরতে বাধ্য হলেন। ফেরার পথে মালব নামে এক ক্ষত্রিয় উপজাতির সঙ্গে যুক্তে আলেকজাণ্ডার আহত হন। মালব উপজাতি যুদ্ধে পরাজিত হয়। এর পর তিনি একদল সৈত্তকে সেনাপতি নিয়ার্কাদের অধীনে জলপথে দেশে পাঠিয়ে দেন। वांकि रेमण माम निरंत जिनि मुन्न भाष वांविनन यांजा करत्रन। বেলুচিস্তানের মরুভূমিতে অসহা গরম ও পিপাসায় হাজার হাজার গ্রীক দৈন্ত মারা যায়। অতি কণ্টে বাকি সৈক্ত নিয়ে আলেকজাণ্ডার স্থুসায় পৌছান। এর অল্পকাল পরে ব্যাবিলনে মাত্র তেত্রিশ বছর বয়সে তাঁর মৃত্যু হয়। আলেকজাণ্ডার ইয়োরোপ ও এশিয়া জুড়ে সামাজা স্থাপন করলেও তাঁর মৃত্যুর প্রায় সঙ্গে সঙ্গে সোমাজ্য ভেক্সে যায়। তাঁর তিন সেনাপতি টলেমি, সেলিউকাস এবং ক্যাসাণ্ডার তাঁর বিশাল সাম্রাজ্য নিজেদের মধ্যে ভাগাভাগি করে নিয়েছিলেন। টলেমি মিশর অধিকার করে স্বাধীনতা ঘোষণা করেন। এশিয়ার বিজিত অঞ্চল সেলিউকাস লাভ করেন। সিন্ধু নদের পশ্চিম তীরসহ গ্রীক অধিকৃত অঞ্চল থেকে মৌর্য চন্দ্রগুপ্ত গ্রীকদের বিতাড়িত করেন। ম্যাসিভন, গ্রীস ও অফ্যাক্স উপনিবেশ ক্যাসাপ্তার হস্তগত করেন। এর পরে এক্সময়ে গ্রীস রোমের বিশাল সাভ্রাজ্যের অঙ্গীভূত হয়। আলেকজাগুারের দিখিজম্বের ফলে ইয়োরোশের বিভিন্ন অঞ্চল গ্রীক সভ্যতা ইড়িয়ে গড়ে।

## षञ्गीननी

- ্থ। মিনোয়ানদের সভ্যতার সংক্রিপ্ত পরিচয় দাও।
- ও। হোমারের যুগে গ্রীকদের জীবনযাত্রা কেমন ছিল ?

- ে। গ্রীকদের ধর্মবিশ্বাস ও দেবদেবী নিয়ে একটি প্রবন্ধ লেখ।
- গ্রীসের কয়েকটি নগর-রাক্টের নাম কর। নগর-রাক্টগুলোর মধ্যে
   প্রধান তুটির নাম কী কী ?
- গ। গ্রীকরা কোথায় কোথায় উপনিবেশ গড়েছিল । কেন গড়েছিল । উপনিবেশগুলো গড়ে ওঠার ফলে গ্রীদের কী কী লাভ হয়েছিল ।
- ৮। এথেন্সের রাজনৈতিক ও সামাজিক জীবন সম্বন্ধে কী জান !
- ১০। পেরিক্লিদ কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ১১। 'এথেলের গৌরবময় যুগ' বলতে কোন্ সময়কে বোঝার ? কেন ঐ
  সময়কে গৌরবময় যুগ বলা হয় १
- ১২। স্পার্টার সঙ্গে এথেলের যুদ্ধ হয়েছিল কেন ? যুদ্ধের বিবরণ দাও
  ও ফলাফল বল।
- ১৩! সক্রেটিস কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান !
- ১৪। সক্রেটিসের হু'জন ছাত্রের নাম কর। সংক্ষেপে তাঁদের পরিচয় দাও।
- >৫। কয়েকজন গ্রীক নাট্যকারের নাম বল। সোফোক্লিসের সম্বন্ধে কী জান ?
- ১৬। হেরোভোটাস কে ? সংক্রেপে তাঁর পরিচয় দাও।
- ১৭। ফিডিয়াসের সম্বন্ধে কী জান ?
- ১৮। মাাদিতন রাজাটি কোধার? মাাদিতনের রাজা কে ছিলেন ? কী ভাবে তাঁর মৃত্যু হয়েছিল ?
- ১৯। আলেকজাণ্ডার কে । তিনি কোন্কোন্দেশ জয় করেছিলেন্
  সংক্রেপে বল।
- ২০। আলেকজাণ্ডারের ভারত অভিযানের সম্বন্ধে কী জান ?
- २>। वसनीत मधा (थरक एक छ छ वहि (वर्ष्ट निर्म्न मृन् स्वा क्व :
- (ক) ——রাজার উপাধি ছিল মিনোস। (ক্রীটের/গ্রীসের)। (ব) নসস্
  ছিল——রাজধানী। (স্পার্টার/ক্রীটের)। (গ) থীসিয়াস ছিলেন——
  যুবরাজ। (এথেসের/ক্রীটের) (ঘ) মেনিলাউস ছিলেন——রাজা।
  (আর্গদের/স্পার্টার) (ও) হেলেনকে চুরি করে নিয়ে গিয়েছিলেন——।
  (পারিস/এগামেমনন) (চ) ওডিসি মহাকাব্যে আছে——আশ্চর্য ভ্রমণকাহিনী। (একিলিসের/ওডিসিয়ুসের) (ছ) এথেনা ছিলেন—দেবী।
  (জ্ঞানের/সঙ্গীতের) (জ) ওডিসিয়ুসের স্ত্রীর নাম——। (হেলেন/পেনিলোপ)

(ঝ) গ্রীক বিজ্ঞানী আর্কিমিডিসের জন্মভূমি——। (মাইলেটাস/সাইরাকিউস)
(ঞ) ——বছর বয়স হলেই এথেসের তরুণদের নাগরিক বলে গণ্য কর।
হোত। (কুড়ি/তেইশ) (ট) পেলোপনেসিয়ার যুদ্ধ শুরু হয়েছিল——
খ্রীস্টপূর্বান্দে। (৪০৪/৪৩১) (ঠ) সক্রেটিসের পিতার নাম——। (জ্যান্থিপাস/সোফ্রোনিসকাস)।

২২। এঁদের সম্বন্ধে কা জান ? (একটি বাকো প্রকাশ কর)
ইজিরাস, আরিয়াদ্নি, প্রিয়াম, জিউস, থেল্স্, এরিস্টোফিনিস, ড্যাকো,
সোলন, থুকিডিডিস, এপামিনোগুাস।

২০। এগুলি সম্বন্ধে কী জান ! (একটি বাকো প্রকাশ কর): আাজোপোলিস, আাপেলা, এফর, ফিনাস, ডেলফি, এফেসাস।

## ষ্ঠ পরিচ্ছেদ রোম

অবস্থানঃ আজ থেকে প্রায় আড়াই হাজার বছর আগে ইতালির টাইবার নদীর পাড়ে গ্রীকরা রোম নামে একটি নগর স্থাপ্ন করে। রোমের উত্তরে আল্পস্ পর্বত এবং দক্ষিণে সিসিলি দ্বীপ। আবার রোমের উত্তর, দক্ষিণ ও পশ্চিমে সমুন্ত। কাজেই বাইরে থেকে রোম আক্রমণ করা খুব সহজ ছিল না। সমুদ্রের খুবই কাছে টাইবার নদীর তীরে অবস্থিত বলে রোম একটি সুন্দর বাণিজ্যকেন্দ্র হয়ে দাঁড়িয়েছিল। এক সময় রোম সমগ্র ইতালি এবং আরও অনেক দেশ জয় করে একটি বিশাল সাম্রাজ্য গড়ে তোলে।

প্রাচীন উপাখ্যান ঃ রোমের উৎপত্তি সম্বন্ধে একটি গল্প আছে।
এবার তোমাদের সে গল্পটাই বলি। এক সময় ইতালিতে
এগাল্বালঙ্গা নামে একটি রাজ্য ছিল। মুমিটার ছিলেন এ রাজ্যের
রাজা। মুমিটারের মেয়ে রিয়া সিল্ভিয়া রোমুলাস এবং রেমাস
নামে ছটি যমজ সস্তান প্রস্ব করেন। মুমিটারের ভাই এমুলিয়াস
মুমিটারকে তাড়িয়ে দিয়ে নিজেই সিংহাসন দখল করেন। ভবিদ্যুতে
যাতে তাঁর সিংহাসন নিজ্ঞত হয়, সেজক্তে এমুলিয়াস ছটি যমজ
ভাইকে ভেলায় করে টাইবার নদীতে ভাসিয়ে দেন। কিন্তু একটি

নেকড়ে বাঘিনী শিশু ছটিকে দেখতে পেরে অত্যস্ত যত্নের সঙ্গে তাদের সালনপালন করতে থাকে। ঐ বাঘিনীর হুধ পান করে রোমুলাস ও



রেমাস বড় হয়ে ওঠে। রোমূলাস এবং রেমাস যেমন ছিল বলিষ্ঠ, তেমনি তেজস্বী। তারা এমূলিয়াসকে হত্যা করে তাদের মাতামহ

স্থুমিটারকে এাাল্বালঙ্গার সিংহাসনে বসায়। এর পরে তারা নতুন একটি নগর নির্মাণ করতে ইল্ছুক হয়। কিন্তু এই বিষয় নিয়ে রোমূলাস ও রেমাসের মধ্যে ভীষণ ঝগড়া হয়। কলে, রেমাস প্রাণ হারায়। রোমুলাস তার অনুচরদের নিয়ে একটি নতুন নগর স্থাপন করে। ভারই নাম অনুসারে নগরটির নাম হয় রোম।

এটা নিছকই গল্প। গ্রীস্টপূর্ব অন্তম শতাব্দীতে টাইবার নদীর মোহানা থেকে কয়েক মাইল দূরে প্যালেটিন নামে একটি পাহাড় ছিল। পাহাড়টি ছিল নেহাতই ছোটো। একদল মেষপালক, কৃষক ও ব্যবসায়ী ঐ পাহাড়ে একটি উপনিবেশ গড়ে তোলে। ঐ পাহাড়টির সঙ্গে আরো ছোটো ছোটো ছ'টি পাহাড় ছিল। কাল-ক্রমে সব ক'টি পাহাড়ে লোকবসতি গড়ে ওঠে। আর এভাবে সাতটি পাহাড় নিয়ে রোম নগর গড়ে ওঠে। এজন্মে রোমকে বলা হয় সাত পাহাড়ের নগরী। রোমের উপকথা অমুসারে রোম নগরের প্রতিষ্ঠা হয়েছিল ৭৫৩ খ্রীস্টপূর্বাব্দে। ৭১৬ খ্রীস্টপূর্বাব্দ পর্বস্ত রোমুলাস রোমে রাজত করেন। এর পর রোমের রাজা হন হুমা শম্পিলিয়াস। তিনি চুন্নাল্লিশ বছর রাজত্ব করেন। রোমে তিনিই ধর্মের প্রবর্তন করেন। রোমের দেবদেবীরা ছিলেন গ্রীক দেবদেবীদের মতো: তাঁদের কেবল নামের পরিবর্তন করা হয়েছিল। এভাবেই গ্রীকদেবতা জিউস হলেন জুপিটার, হেরা হলেন জুনো, হার্মে হলেন মার্কারি আর এথেনা হলেন মিনার্ভা। গ্রীকদের সমুদ্র-দেবতা প্রসিডনের নাম হোল নেপচুন। পাতালের দেবতা হেড্স্ হলেন প্লটো।

মুমা পশ্পিলিয়াসের পর টুলাস হস্টিলিয়াস এবং আঙ্কাস মার্দিয়াস পর পর রাজা হন।

স্পার্টার অধিবাসীদের মতো রোমের প্রাচীন অধিবাসীরাও যুদ্ধবিভার থুব পারদর্শী ছিল। শরীরকে স্কু-সবল রেথে যুদ্ধের নানা
রকম কৌশল আয়ত্ত করাকে তারা জীবনের শ্রেষ্ঠ কাজ বলে মনে
করত। রোমের ক্ষমতা বাড়ায় ক্রমে প্রতিবেশীরাও তাদের শক্র হয়ে
কাড়ায়। এট্রাসকানরা ছিল সবচেয়ে বড়ো শক্র। এট্রাসকানরা
লোহার হাতিয়ার ব্যবহার করত। তারাও যুদ্ধবিভায় থুব পারদর্শী

ছিল। ৬১৬ খ্রীস্টপূর্বাব্দে আল্কাস মার্সিয়াসের মৃত্যুর পরে এট্রাসকানরা রোম অধিকার করে। শেষ এট্রাসকান রাজা টার্কুইন ছিলেন থুবই অত্যাচারী। শেষ পর্যন্ত প্রজ্ঞারা অতিষ্ঠ হয়ে তাঁকে রোম থেকে বিতাড়িত করে (৫০৯ খ্রীস্টপূর্বাব্দে)। টার্কুইনকে বিতাড়িত করার সঙ্গেল সঙ্গে রোমে রাজতন্ত্রেরও শেষ হয়। এর পর প্রজ্ঞারা ত্র'জন কনসালের ওপর রাজ্যশাসনের সব দায়-দায়িত্ব ক্রস্ত করে। প্রথম ত্র'জন কনসালের মধ্যে একজনের নাম জুনিয়াস ক্রটাস। অপর জনের নাম কোলেটিনাস। এভাবেই রোমে প্রজ্ঞাতন্ত্রের প্রতিষ্ঠা হয়।

খ্রীস্টপূর্ব চতুর্থ শতক থেকে দিতীয় শতকের মধ্যে এট্রাসকানদের, উত্তরে গেল উপজাতিদের এবং টারেন্টাম প্রভৃতি গ্রীক রাজ্যগুলাকে পরাজিত করে রোমানরা সমগ্র ইতালিতে নিজেদের আধিপত্য স্থাপন করে। এ সময়েই ম্যাসিডনরাজ আলেকজাণ্ডার পশ্চিম এশিয়া জয় করে ভারত আক্রমণ করেন। এর পর আফ্রিকার উত্তর উপকৃলে অবস্থিত কার্থেজের সঙ্গে রোমের যুদ্ধ বাধে।

রোমের সঙ্গে কার্থেজের সংঘর্ষঃ প্রাচীনকাঙ্গে ফিনিসীয়রা আফ্রিকার উত্তর উপকৃলে কার্থেজ নামে একটি উপনিবেশ স্থাপন করেছিল, এ কথা ভোমাদের আগেই বলেছি। সে যুগে ব্যবসা-বাণিজ্যে আর ধন-সম্পদে কার্থেজের সঙ্গে পাল্লা দিতে পারে এমন কেউ ছিল না। ফিনিসিয়ার পতনের পর কার্থেজ সম্পূর্ণ স্বাধীন হয়। অল্প কয়েকজন ধনী সওদাগর কার্থেজের শাসনতন্ত্র পরিচালনা করতেন। ব্যবসা-বাণিজ্যের স্থবিধার জ্বন্যে তাঁরা ভূমধ্যসাগরের দ্বীপগুলোভে আধিপত্য স্থাপন করেন। সিসিলির অর্ধেকেরও বেশি অংশ তাঁরা অধিকার করেছিলেন। শেষ পর্যস্ত সিসিলিকে কেন্দ্র করে কার্থেজের সঙ্গে রোমের যুদ্ধ বাধে। তিন বার এই যুদ্ধ হয়। এই যুদ্ধ ইতিহাসে পিউনিক যুদ্ধ নামে খ্যাত। প্রথম পিউনিক যুদ্ধ শুক্ত হয় ২৬৪ গ্রীস্টপূর্বাকে। প্রায় তেইশ বছর ধরে এই যুদ্ধ চলে। কার্থেজের বহু শক্তিশালী যুদ্ধ-জাহাজ ছিল। পাঁচ থাকের দাঁড়বিশিষ্ট ক্রেতগামী এই জাহাজগুলোর নাম ছিল কুইন্কুইরিম। নৌবলে কার্থেজের তুলনাম্ব রোমানরা ছিল হুর্বল। স্থতরাং, প্রথম দিকে যুদ্ধে রোমানর। তেমন স্থবিধা করতে পারে নি। কিন্তু পরে তারা যুদ্ধে জয়লাভ

করে। রোমকে যুদ্ধের ক্ষতিপূরণ হিসেবে বহু টাকা দিতে কার্থেঞ্চ বাধ্য হয়। সিসিলি এবং সার্ডিনিয়া রোমের হস্তগত হয়।

প্রথম পিউনিক যুদ্ধ শেষ হয় ২৪১ খ্রীস্টপূর্বাব্দে। কিন্তু তিন বছর পরেই রোম সন্ধির শর্ত ভঙ্গ করে তামার খনির লোভে কর্সিকা অঞ্চল দখল করে নেয়। এর ফলে শুরু হয় দ্বিতীয় পিউনিক যুদ্ধ।

হানিবল: দিতীয় পিউনিক যুদ্ধে কার্থেজের সেনাপতি হানিবল অপূর্ব বীরত্ব ও দেশপ্রেমের পরিচয় দিয়েছিলেন। বালক হানিবল ভাঁর পিতা হামিলকার বার্কারের কাছে প্রতিজ্ঞা করেছিলেন, প্রাণ স্বাকতে রোমের সঙ্গে মিত্রতা করবেন না। বড়ো হয়ে হ্যানিবল এই প্রতিজ্ঞা রক্ষা করেছিলেন। শিক্ষায়, সাহসে ও রণকৌশলে হানিবল গ্রীক বীর আলেকজাণ্ডারের চেয়ে এডটুকু কম ছিলেন না। পিতার মৃত্যুর পর হানিবল কার্থেজের সেনাদলকে শক্তিশালী ও সুশিক্ষিত করে তুললেন। তারপর স্থলপথে ইতালি আক্রমণ করার উদ্দেশ্যে ৫০ হাজার পদাতিক, ৯ হাজার অশ্বারোহী এবং ৩৭টি রণহন্তী নিয়ে আল্লস্ পর্বত অতিক্রম করলেন। পর্বত অতিক্রম করার সময়ে ছানিবলের বহু সৈত্য-সামস্ত মারা যায়। তথাপি অশেষ কষ্ট, খাতাভাব এবং প্রচণ্ড শীত সহ্য করে হানিবল ইতালির সমতল ক্ষেত্রে যখন নেমে এলেন, রোমানরা তাঁর অসাধারণ বীরত্ব ও তুঃসাহসে অবাক হয়ে গেল। গ্রানিবল-যে পাহাড় ডিঙিয়ে তাদের এভাবে আক্রমণ করতে পারবেন, রোমানরা তা ভাবতেই পারে নি। রোমান সেনাপতি ফেবিয়াস জানতেন যে, হ্যানিবলের সঙ্গে সামনা-সামনি ধুদ্ধে রোমানদের পরাজয়ের সম্ভাবনাই বেশি। তাই তিনি সম্মুথ যুদ্ধ এড়িয়ে নানা ভাবে হানিবলকে বিব্ৰত করে তুললেন। শেষে রোমান দেনাপতি সিপিও কার্থেজ আক্রমণ করলে হানিবল বাধা হয়ে ইতালি ছেড়ে স্বদেশে ফিরে যান। জামা নামে এক্টি জারগায় সিপিও হানিবলকে যুদ্ধে পরাজিত করেন। এই যুদ্ধে জয়লাভ করে সিপিও ইতিহাসে সিপিও আফ্রিকেনাস্ নামে পরিচিত হন। ষোল বছর ধরে দ্বিতীয় পিউনিক যুদ্ধ হয়। স্থুদীর্ঘকালের এই যুদ্ধে ত্থানিবল একবারও পরাজিত হন নি। জামার যুদ্ধে হ্যানিবল রোমান ইসত্যের কাছে নিদারুণভাবে পরাজিত হন। এরপর তিনি স্বদেশ পেকে পালিয়ে যান এবং আত্মহত্যা করে অপমান ও লাগুনার হাজ থেকে অব্যাহতি লাভ করেন। দ্বিতীয় পিউনিক যুদ্ধের ত্রিশ বছর পরে কার্থেজের সঙ্গে রোমের আবার যুদ্ধ হয় (১৪৯ খ্রীস্টপূর্বান্দে)। এর নাম তৃতীয় পিউনিক যুদ্ধ। তিন বছরের এই যুদ্ধে কার্থেজ সম্পূর্ণ পরাজিত হয়। রোমানরা এই সমৃদ্ধ নগরটি মাটির সঙ্গে মিশিয়ে দিয়ে নিশ্চিন্ত হয় (১৪৬ খ্রীস্টপূর্বান্দে)।

সান্তাজ্য বিস্তারের যুগে রোমের জীবনযাতাঃ কার্থেজের পতনের পর রোম বিনা বাধায় সাম্রাজ্য বিস্তার করে। ইয়োরোপ এশিয়া আর আফ্রিকা এই তিন মহাদেশ জুড়ে ছিল রোমান সামাজ্য 🕨 ইয়োরোপে ছিল ব্রিটেন, স্পেন ও গল ( বর্তমান ফ্রান্স ), সমগ্র বল্কান দেশ ও গ্রীস; এশিয়ায় ছিল গোটা এশিয়া মাইনর, সিরিয়া ও প্যালেন্টাইন; আর আক্রিকার ছিল মিশর, কার্থেজ প্রভৃতি। রোমানদের আগে আর কোন জাতি এত বড়ো সাম্রাজ্য গড়ে তুলতে পারে নি। এই বিশাল সাম্রাজ্য শাসন করা থুব একটা সহজ ব্যাপার ছিল না। এতদিন রোমের শাসন-বাবস্থার সবচেয়ে ওপরে ছিলেন তু'জন কন্সাল। এঁরা প্রতি বছর নির্বাচিত হতেন। শাসনকার্যে ত্র'জন কন্সালকে পরামর্শ দেবার জত্তে হুটি পরিষদ ছিল। এই হুটি পরিষদের একটিকে বলা হোত সেনেট। স্বভিজ্ঞাতরা ছাড়া কেউ সেনেটের সদস্য হতে পারতেন না। আর এই সেনেটই আসলে রোমের শাসনতত্ত্ব নিয়ন্ত্রণ করতেন। জনসাধারণের মতামতের খুৰ একটা মূল্য সেখানে ছিল না। কিছুদিন পরে রোমে দেখা দিলেন কয়েকজন শক্তিশালী যোদ্ধা। এঁরা রাষ্ট্রের সব ক্ষমতা নিজেদের হাতে গ্রহণ করলেন। রোমের ইতিহাসে এঁরা ডিক্টেটর বা একনায়ক নামে পরিচিত। স্লা, পম্পে, জুলিয়াস সীজার প্রভৃতি ছি**লেন এই** রকম একনায়ক।

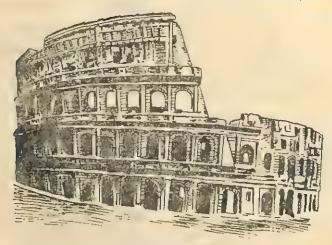
হ্যানিবলের কাল পর্যন্ত রোমের সাধারণ মান্নুষের জীবনযাত্রা থুবই সরল ছিল। রোমের সমাজ প্রথম থেকেই পরিবারকে কেন্দ্র করে গড়ে উঠেছিল। সাম্রাজ্য-বিস্তারের যুগে রোমানদের জীবন-যাত্রায় পরিবর্তন দেখা দিল। বিশাল সাম্রাজ্যের বিভিন্ন অঞ্চল থেকে তথন রোমে নানা রকমের জিনিস আসত। মিশর থেকে আসত খাত্ত- শস্ত, কাচ, স্থৃতির কাপড়; গ্রীস থেকে জলপাই, তেল ও থেতপাথর।
ইয়োরোপের অস্তান্য অঞ্চল থেকে আদত চামড়া, সোনা, রূপো এবং
নানা রকমের মূল্যবান বিলাসজব্য। সাম্রাজ্যের বিভিন্ন অংশ থেকে
অসংখ্য ক্রীতদাস আসার পর থেকে সব শ্রমের কাজই ক্রীতদাসদের
দিয়ে করানো হোত। এ সবের ফলে রোমের অভিজাত শ্রেণী খুবই
বিলাসী হয়ে পড়ে। সাম্রাজ্যের বিভিন্ন জায়গায় বড়ো বড়ো নগর
গড়ে ওঠে, যানবাহন ও সৈত্য চলাচলের জত্যে বড়ো বড়ো রাস্তাঘাট
তৈরি হয়। কিন্তু রাজধানী রোম নগরীর সৌন্দর্য আর সম্পদ
আর সব কিছু ছাপিয়ে গিয়েছিল; বিরাট বিরাট প্রাসাদ, জয়স্তন্ত,
ভোরণ, স্লানাগার প্রভৃতি দিয়ে রোম নগরীকে মনের মতো করে
সাজানো হয়েছিল।

রোমে আমোদ-প্রমোদের যে-ব্যবস্থা ছিল, তা প্রাচীনকালে আর কোথাও ছিল না। মানুষের সঙ্গে ক্ষুধার্ত সিংহের লড়াই, বক্ত পশুতে পশুতে লড়াই প্রভৃতি দেখতে রোমানরা খুব ভালবাসত। রোমে গ্লাডিয়েটর নামে এক শ্রেণীর পেশাদার যোদ্ধা ছিল। রোমানরা এদের



এন্ফিথিয়েটার

দিয়ে যুদ্ধ করাত। ত্র'জন প্রতিদ্বন্ধীর মধ্যে একজন নিহত না হওয়া পর্যন্ত এরকমের যুদ্ধ চলতেই থাকত। চারদিক দিয়ে যেরা একটা খোলা জারগার এসব মল্লযুদ্ধ বা পশুতে পশুতে লড়াই প্রভৃতি হোত।
চার দিকে এখনকার মতো গ্যালারি বা লোকের বসবার ব্যবস্থা ছিল।
এরকম স্থানকে 'এন্ফিথিয়েটার' বলা হোত। কলোসিয়াম নামে একটি
প্রেক্ষাগৃহে বসে রোমানরা এইসব ক্রীড়া-কৌতুক উপভোগ করত।
এখানে এক সঙ্গে ৪৫০০০ দর্শক স্বচ্ছন্দে বসতে পারত। কলোসিয়ামের নির্মাণকার্য শুরু করেছিলেন রোম সম্রাট ভেস্পাসিয়ান।



রোমের কলোসিয়াম

তাঁর পুত্র সম্রাট ডোমিনিটানের রাজত্বকালে কলোসিয়ামটির নির্মাণ-কার্য শেষ হয় ৮০ গ্রীস্টান্দে। রোম নগরীতে অনেক স্নানাগার নির্মাণ করা হয়েছিল। সেখানে সৌখিন লোকেরা স্নান এবং গল্পগুজব করতেন। ফোরাম ছিল কেনাবেচার সবচেয়ে বড়ো কেন্দ্র।

'সাআজ্যের যুগে রোমের অধিবাসীদের সরকারী কর্মচারী, সৈনিক ও ক্রীতদাস এই তিনটি শ্রেণীতে ভাগ করা যায়। কৃষি ও শিল্পের সব কাজই করত ক্রীতদাসরা; ক্রীতদাসদের দিয়ে অনেক সময় শিক্ষাদানের কাজটিও করানো হোত। বলতে গেলে, রোমের অধিবাসীদের প্রায় অর্ধেকই ছিল ক্রীতদাস।

প্রাচীন যুগের রোমের ধনী ও সম্ভ্রান্ত লোকদের বলা হোত প্যাট্রিসিয়ান। ধারা গরীব তারা প্লেবিয়ান নামে পরিচিত ছিল। প্যাদ্ধিসিয়ান ও প্লেবিয়ানদের কথা ঃ রাণ্ট্রের যা-কিছু স্থস্থিবিধা এবং অধিকার তা প্যাদ্ধিসিয়ানরাই ভোগ করতেন। তাঁরা
প্রেবিয়ানদের অবজ্ঞা এবং তাচ্ছিল্যের চোঝে দেখতেন। প্যাদ্ধিসিয়ানরা
সেনেট নামে একটি পরিষদ গঠন করে নিজেরাই সর্বেসর্বা হয়ে
ওঠেন। এদিকে গরীব লোকেরা চাষবাস করত, য়ুদ্ধের সময়ে সৈগ্র
হিসেবে খাটত, অথচ তাদের কোনো অধিকারই ছিল না। ৪৫১
গ্রীস্টপূর্বালে রোমে প্রথম আইন বিধিবদ্ধ হয়়। বারোটি ব্রোপ্লের
ফলকে আইন খোদাই করে রোমের ফোরামে রেখে দেওয়া হয়়।
গ্রীসের পেরিক্রিসের আইনের সঙ্গে সঙ্গতি রেখে এই আইনগুলো
রিচিত হয়়। ৪৪৫ গ্রীস্টপূর্বালে প্যাট্রিসিয়ান ও প্লেবিয়ানদের মধ্যে
বিবাহও বিধিবদ্ধ করা হয়়। এভাবে প্রায় ছুশো বছর ধরে প্লেবিয়ানরা
তাদের নীরব সংগ্রাম চালিয়ে একটু একটু করে আইনের সাহায্যে
তাদের অধিকার আদায় করে নেয়।

রোমে নাগরিক অধিকারঃ রোমের সভি্যকারের নাগরিক ছিলেন প্যাট্রিসিয়ান বা অভিজাতরা। প্রথম দিকে সাধারণ মামুষ এবং গরীবের নাগরিক অধিকার ছিল না বললেই হয়। পরে, সাম্রাজ্য-বিস্তারের যুগে, বিজিত রাজ্যের অধিবাসীদেরও রোমের নাগরিক অধিকার দেওয়া হয়। কোনো ক্রীতদাস ক্রীতদাসত্ব থেকে মৃক্তি-সাভ করে রোমের নাগরিক হতে পারত।

রোমে ক্রীতদাসের জাবন ঃ রোমের অধিবাসীদের মধ্যে প্রায় অর্থেক ছিল ক্রীতদাস। রোমানরা ক্রীতদাসদের দিয়ে সব কাজই করাত। ক্রীতদাসদের মধ্যে অনেকে ছিল যুদ্ধবন্দী; আবার অনেকে ঝণ শোধ করতে না পেরে ক্রীতদাস হোত। রোমের বড় বড় নগরের বাজারে ক্রীতদাস বা গোলাম বেচাকেনা হোত। দাসবারসার সবচেয়ে বড়ো কেন্দ্রটি ছিল ঈজিয়ান উপসাগরের ডেলস্ দ্বীপে। সেখানকার বাজারে নাকি প্রতিদিন ১০,০০০ ক্রীতদাস বেচাকেনা হোত। ক্রীতদাসদের দিয়ে চাবের কাজ, শস্তা পেষাই করার কাজ করানো হোত। ক্রীতদাসেরা খনিতেও কাজ করত; আবার রাস্তাঘাট, বাড়িবর প্রভৃতি তৈরি করত, দাঁড়ও টানত।

কাজে কোথাও এভটুকু ত্রুটি ঘটলে ক্রীতদাসদের পিঠে চাবুক পড়ত। কাজ করার সময়ে ক্রীতদাসরা একে অপরের সঙ্গে



কোনো কথা বলতে পারত না। তাদের সারা বছরে মাত্র একটি জামা দেওয়া হোত। রাত্রে ক্রীতদাসদের কয়েদখানায় আটকে রাখা হোত।

কোনো কোনো ক্রীতদাসকে নানা বকম অন্ত চালনা করা ও মল্লযুদ্ধ শেখানো হোত। এদের নাম ছিল গ্লাভিয়েটর। গ্লাভিয়েটরদের অনেক সময় বহু পশুরু সঙ্গে লড়াই করতে হোত। এরকম লড়াই দেখতে রোমানরা থুব ভালবাসত।

রোমের জীতদাস

মালিকরা অবাধা ক্রীতদাসকে ভয়ঙ্কর শাস্তি দিয়ে অক্যাত্য ক্রীত-দাসের মনে আতঙ্কের সৃষ্টি করত।

সিসিলিতে প্রথম ক্রীতদাসদের বিদ্রোহ হয়। সেথানে জ্যামোফিলাস নামে একজন ধনী ব্যক্তি তাঁর ক্রীতদাসদের ওপর খুব
অত্যাচার করতেন। সেথানকার ক্রীতদাসরা জামোফিলাসকে হত্যা
করে তাঁর বাজি্বর পুজি্য়ে দেয়। বিদ্রোহীরা প্রায় সমগ্র সিসিলি
দথল করে নেয়। রোম থেকে সৈন্য পাঠিয়ে বহু কপ্টে এই বিদ্রোহ
দমন করা হয়েছিল। এর কয়েক বছর পরেও সিসিলিতে ক্রীতদাসরা
আবার বিদ্রোহ করে। কিন্তু স্পার্টাকাসের নেতৃত্বে যে-বিদ্রোহ
হয়েছিল, প্রাচীনকালে তেমন বিদ্রোহ আর কোথাও হয় নি।

স্পার্টাকাসের নেতৃত্বে ক্রীতদাসদের বিদ্রোহ । ৭৩ খ্রীস্টপূর্বান্দে এই বিজোহ শুরু হয় এবং শেষ হয় ৭১ খ্রীস্টপূর্বান্দে। রোমের অধীন ছোট কাপুয়া শহরে প্রায় ২০০ জন ক্রীতদাস বিজোহের ষড়যন্ত্র করে। কিন্তু ষড়যন্ত্র কাঁস হয়ে যায়। তবৃত্ত প্রায় আশি জন ক্রীতদাস কয়েদ থেকে পালিয়ে গিয়ে বিস্থবিয়স পর্বতের ওপরে আগ্রয় নেয়। খবর পেয়ে প্রায় তিন হাজার রোমান সৈত্যের

একটি দল এসে বিস্থবিয়স পর্বতের পাদদেশে অবতরণের পর্ণটিকে অবরোধ করে ফেলে। ঐ একটি মাত্র পথেই বিস্থৃবিয়স থেকে নিচে নামা যেত। কিন্তু এই প্রচণ্ড বিপদেও স্পার্টাকাস এতটুকু ভন্ন না পেয়ে আত্মরক্ষার একটি অপূর্ব কৌশল উদ্ভাবন করেন। আঙ্ গাছের লতা দিয়ে দড়ি তৈরি করেএক-এক করে ক্রীতদাসরা রাতের অন্ধকারে পাহাড় থেকে নেমে পড়ে। তারপর পেছন থেকে এসে আক্রমণ করে তারা রোমান বাহিনীকে সম্পূর্ণ ধ্বংস করে দেয়। অতি-অল্প সময়ের মধ্যে স্পার্টাকাসের নাম চারদিকে ছড়িয়ে পড়ে। ইতালির নানা অঞ্চল থেকে হাজার হাজার ক্রীতদাস এসে তাঁর সঙ্গে যোগ ক্রীতদাসেরা প্রথমে সামান্ত একখানা লাঠি আর ছুরি নিয়েই বেরিয়ে পড়েছিল। পরে ক্রমাগত আক্রমণ করে শত্রুপক্ষের কাছ থেকে নানা রকমের হাতিয়ার সংগ্রহ করে। নানা ভাষাভাষী ক্রীতদাসদের মধ্যে স্পার্টাকাস শৃভালা প্রবর্তন করেন। রোমান সেনাপতি ক্রেসাসের সঙ্গে স্পার্টাকাসের ভীষণ যুদ্ধ হয়। যুদ্ধে বহু রোমান সৈতা নিহত হয়। ৭১ খ্রীস্টপূর্বাবের রোমানদের সঙ্গে স্পার্টাকাসের শেষ যুদ্ধ হয়। যুদ্ধে স্পার্টাকাস বীরের মত মৃত্যুবরণ করেন। পম্পের আদেশে প্রায় ৬,০০০ বন্দী ক্রীতদাসকে ক্রুশবিদ্ধ করে হড়া করা হয়। ক্রীভদাসদের বিজোহ সফল হয় নি ঠিকই, তবে বিজোহে অত বড়ো রোম সামাজ্যের ভিত্ পর্যস্ত কেঁপে উঠেছিল।

জুলিয়াস সীজার ঃ রোমে-যে এক সময় কয়েকজন শক্তিশালী জুলিয়াস সীজার ঃ রোমে-যে এক সময় কয়েকজন শক্তিশালী ডিক্টেটর বা একনায়কের আবির্ভাব হয়েছিল, এ কথা ভোমাদের বলেছি। এঁদের মধ্যে সবচেয়ে বিখ্যাত ছিলেন জুলিয়াস সীজার। গ্রীসে যেমন বারত্বে ও সাহসিকতায় আলেকজাণ্ডার অদ্বিতীয় ছিলেন, গ্রোমেও তেমনি ছিলেন সীজার। তিনি এক প্যাট্রিসয়ান পরিবারে রোমেও তেমনি ছিলেন সীজার। তিনি এক প্যাট্রিসয়ান পরিবারে জন্মগ্রহণ করেন। ক্ষমতা এবং গোরব অর্জন করাই ছিল তাঁর জন্মগ্রহণ করেন। ক্ষমতা এবং গোরব অর্জন করাই ছিল তাঁর জন্মগ্রহণ করেন। ক্ষমতা এবং গোরব অর্জন করাই ছিল তাঁর জন্মগ্রহণ করেন। ক্ষমতা এবং গোরব অর্জন করেন। দীর্ঘ আট বছর সীজার প্রথমেই গলদের বিরুদ্ধে অভিযান করেন। দীর্ঘ আট বছর যুদ্ধের পর তিনি গলদের রাজ্য (বর্তমান ফ্রান্স) অধিকার করেন। ব্রুহাজার হাজার নারী-পুরুষকে তিনি ক্রীতদাসে পরিণত করেন। বহু ধনরত্বও তিনি লাভ করেন। এর পর সীজ্ঞার ৪৯ খ্রীস্টপূর্বাকে

সসৈত্যে রোমে উপস্থিত হলে রোম সাধারণতন্ত্রের প্রধান সেনাপতির পদে তাঁকে নিয়োগ করা হয়। পম্পে ছিলেন সীঞ্চারের অস্ততম প্রতিদ্বন্দ্বী। কিন্তু সীজারের সঙ্গে যুদ্ধে পম্পে পরাজিত হন। শেষ



পর্যস্ত পলায়ন করতে গিয়ে তিনি নিহত হন। একে একে সব প্রতিদ্বন্দ্বীকে পরাজিত করে সীজার অবশেষে রোম নগরীতে ফিরে আসেন। তখন সীজারের ক্ষমতার সীমা ছিল না। তাঁর আদেশই সেনেট মেনে চলত। সীজার নিজেকে সম্রাট বলতেন। রাজার মতোই

তিনি সম্মান পেতেন। তিনি যে-চেয়ারখানিতে বসতেন, তা তৈরি হয়েছিল হাতির দাত আর সোনা দিয়ে। সীজারের ক্ষমতা-বৃদ্ধিতে সেনেটের কয়েকজন সদস্য ভাবলেন বোধহয় সীজার এবার সমাট হয়ে বসবেন। তাই তাঁরা গোপনে চক্রান্ত করে সীজারকে হত্যা করলেন। এই ষড়যন্ত্রকারীদের অম্যতম ছিলেন ভ্রুটাস। সীজারকে হত্যা করে কিন্তু কোন লাভই হোল না। সীজারের পোয়পুত্র অক্টাভিয়াস আরও ক্ষমভাশালী হয়ে উঠলেন। তিনি শেষ পর্যস্ত রোমের প্রস্কাতম্ব উচ্ছেদ করে নিজেকে সম্রাট অগাস্টাস বলে ঘোষণা করলেন। এভাবে রোমে প্রজাতন্ত্রের শেষ হোল এবং রাজতন্ত্রের পুনঃপ্রতিষ্ঠা হোল। অগাস্টাদের সময় থেকে আরম্ভ করে রোমে অনেক সমটি রাজত্ব করে গেছেন। ক্যালিগুলা নামে একজন নিষ্ঠুর ও বিলাসী সম্রাট ছিলেন। গুপ্ত ঘাতকের হাতে তিনি প্রাণ হারান। তবে হত্যা আর নিষ্ঠুরতায় সম্রাট নীরোর কোন জুড়ি ছিল না। শোনা যায়, একবার আগুন লেগে রোমের বাড়ি-ঘর-মন্দির যধন দাউ नाउँ करत बनाए थारक, ज्यन नाकि नीरता रीना वाका फिल्मन।

আবার মার্কাস অরেলিয়সের মতো সম্রাটও ছিলেন। তিনি দর্শন ও সাহিত্যে স্থপত্তিত ছিলেন। প্রজাদের কল্যাণের কথাও তিনি চিন্তা করতেন। মৌর্ষ সম্রাট অশোকের সঙ্গে তাঁকে তুলনা করা চলে।

রোমের দাসপ্রথাই শেষ পর্যন্ত রোমের পতনের কারণ হয়ে দাঁড়ায়। ক্রীতদাসদের দিয়ে চাষবাস করাবার ফলে রোমের কৃষকরা নিরন্ন হয়ে পড়েছিল। রোমে শিল্পের ক্ষেত্রেও কোনো উন্নতি হয় নি। জনসংখ্যার একটা বড়ো অংশই ছিল ক্রীতদাস। তাদের ওপর অকথা নির্যাতনের ফলে তারা সব সময়েই রাষ্ট্রের পক্ষে বিপদের কারণ হয়ে দাঁড়িয়েছিল। বাইরে থেকে যখনই কোনো আক্রমণ আসত, সাম্রাজ্যের ভেতরে অসংখ্য ক্রীতদাস তখন স্বাধীনতার স্বপ্র দেখত। ৩৯৫ খ্রীস্টাব্দে রোম সাম্রাজ্য ত্'ভাগে ভাগ হয়ে যায়। সাম্রাজ্যের পূর্বাংশ নিয়ে যে-নতুন সাম্রাজ্যটি গড়ে ওঠে, কনস্টাটি-সাম্রাজ্যের প্রাক্রশানী স্থাপিত হয়। ৪১৯ খ্রীস্টাব্দে গথ নামে এক বর্বর জাতির আক্রেণে পূর্ব রোম সাম্রাজ্যর পতন হয়। ৪৭৬ খ্রীস্টাব্দে ভ্যাণ্ডাল্যদের আক্রমণে পশ্চিম রোম সাম্রাজ্য ধ্বংস হয়।

গ্রীস্টধর্মের অভ্যুদয়ঃ রোমের ক্রীতদাসরা বহু দেবতার বিশ্বাস হারিয়ে ফেলেছিল। ঐ দেবতারা তাদের হঃখের জীবনে এতটুকু আশা বা আনন্দের আলো দেখাতে পারেন নি। অত্যাচারিত মানুষ সর্বশক্তিমান এক ঈগরের কথা শুনে তাঁর প্রতি ক্রমেই আকৃষ্ট মানুষ সর্বশক্তিমান এক ঈগরের কথা শুনে তাঁর প্রতি ক্রমেই আকৃষ্ট হতে লাগল। যীশু তাদেরই মতো সাধারণ ঘরে জন্মছিলেন; হতে লাগল। যীশু তাদেরই মতো সাধারণ ঘরে জন্মছিলেন; তাদেরই মতো নির্যাতন ভোগ করেছেন মানুষের হাতে। যীশুর বাণী তাদেরই মতো নির্যাতন ভোগ করেছেন মানুষের হাতে। যীশুর বাণী তৃতীয় ও চতুর্থ শতান্দীতে লিখিত আকারে প্রচারিত হয়েছিল। স্থতরাং, রোমের নির্যাতিত ক্রীতদাস এবং সাধারণ গরীবহঃখীও স্থতরাং, রোমের নির্যাতিত ক্রীতদাস এবং সাধারণ গরীবহঃখীও শ্বারে শ্বীরে গ্রীস্টধর্মের প্রতি আকৃষ্ট হয়। গ্রীস্টধর্মের প্রবর্তক যীশুগ্রীস্ট প্রবর্গ গ্রার ধর্মমত সম্বন্ধে এখন তোমাদের বলব।

0

যীশুর কাহিনীঃ মহাবীর, বৃদ্ধ, জরথুস্টু ও কনফুসিয়সের
মতো যীশুও পৃথিবীতে শান্তির বাণী নিয়ে এসেছিলেন। তাঁদেরই মতো
যীশুও এশিয়ার পুণাভূমিতে জন্মগ্রহণ করেন। তিনি যে-ধর্ম প্রচার
করেন, তাকে থ্রীস্টধর্ম বলা হয়়। খ্রীস্টধর্ম ঘারা মেনে চলেন, তাঁরা
ব্যাস্টান নামে পরিচিত।

তোমরা তো ইহুদিদের জুড়া রাজ্যের কথা শুনেছ। জুড়া ছিল বোম সাড্রাজ্যের অধীন। তথন রোমের প্রথম সম্রাট অগাস্টাসের রোজত্বকাল। বেথ্লেহেম নামে একটি গ্রামে যীগুর জন্ম হয়। যীগুর পিতার নাম জোসেফ এবং মায়ের নাম মেরী। প্রীস্টানরা মনে করেন,
যীশু স্বয়ং ঈশ্বরের সন্তান। জোসেফ জাতিতে ছিলেন ইহুদি। তিনি
ছুতোরের কাজ করতেন। যীশু ছোটবেলায় লেখাপড়া শেখার
স্থুযোগ পান নি। কৈশোরে তিনি জন নামে এক ইহুদি ধর্মপ্রচারকের
কাছে দীক্ষা নেন। যীশু গ্যালিলির ধীবরদের মধ্যে ধর্ম প্রচার
করেন। তিনি বলতেন, ঈশ্বরের রাজ্যে অবিচার নেই; শক্তি বা
সম্পদ দিয়ে ঈশ্বরের অনুগ্রহ পাওয়া যায় না। সকল মানুষ সকল
মানুষের ভাই। ধর্মপ্রচারের সঙ্গে যীশু রোগীর সেবাও করতেন।
তাঁর স্পর্শে হুরারোগ্য রোগও সারত। গোঁড়া ইহুদিদের ভণ্ডামির
বিরুদ্ধে তিনি কঠোর সমালোচনা করতেন। ফলে যীশুর শক্ররা
তাঁর বিরুদ্ধে রাজন্তোহের অভিযোগ নিয়ে আসে। বিচারে যীশুকে
কুশবিদ্ধ করে হত্যা করা হয়।

যীশুর ধর্মমত: যীশু স্থন্দর স্থন্দর গল্পের সাহায্যে উপদেশ দিতেন। তাঁর উপদেশগুলো খুবই মূলাবান। যীশু বলতেন, যদি কেউ তোমার ডান গালে চড় মারে, তোমার বাঁ গালটি বাড়িয়ে দিও। যারা তোমাকে অভিশাপ দেয়, তুমি তাদের আশীর্বাদ কোরো। যারা ভোমাকে ঘুণা করে, তুমি তাদের ভালোবেসো। লোক দেখিয়ে দান কোরো না। লোভ, দেয়, ক্রোধ, হিংসা প্রভৃতি ভাগি করে, সকলকে ভাইয়ের মভো ভালোবেসে পবিত্র জীবন যাপন —এগুলো যীশুর শ্রেষ্ঠ উপদেশ।

0

যীশুর মৃত্যুর পর তাঁর শিশ্বরা দেশে দেশে তাঁর ধর্ম প্রচার করতে লাগলেন। এর জন্মে তাঁদের অকথা নির্যাতন সহ্য করতে হয়েছে। প্রচারকদের ওপর সবচেয়ে বেশি নির্যাতন করেছেন রোমান সম্রাটরা। রোমের সম্রাটরা তাঁদের হিংস্র পশুর মুখে ফেলে দিতেন। কিন্তু শেষ পর্যন্ত প্রাস্টধর্মেরই জয় হোল। যীশুর মৃত্যুর প্রায় তিনশো বছর পরে রোমের সম্রাট কনস্টানটাইন প্রাস্টধর্মে দীক্ষা নেন। তারপর বিশাল রোম সম্রাজ্যের দিকে দিকে এই ধর্ম প্রচারিত হয়। আজ পৃথিবীর বিপুলসংখ্যক নরনারী প্রাস্টধর্মাবলম্বী।

## অনুশীলনী

- ১। রোমের উৎপত্তি সম্বন্ধে যে-প্রাচীন উপাখ্যানটি পড়েছ, তা তোমার নিজের ভাষায় লেখ।
- २। द्वारम्ब क्रम्बङ्ग (एवर्एवीव नाम क्रा
- ত। রোমের সঙ্গে কার্থেজের যে-স্রংঘর্ষ হয়েছিল, সংক্ষেপে ভার বিবরণ দাও।
  - ৪। হ্যানিবল কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ৫। সামাজ্য-বিস্তারের যুগে রোমের জীবনযাতা কেমন ছিল !
- ७। कारणब भाषित्रियान ७ (अवियान वला इय ?
- ৭। 'রোমে ক্রীতদাসদের জীবন' নিয়ে একটি প্রবন্ধ রচনা কর।
- ৮। স্পার্টাকাদের নেভ্জে ক্রীভদাসদের যে-বিদ্রোহ হয়েছিল, সে সম্বন্ধে তুমি কী জান ?
- ১। জুলিয়াস সীজার কে ? তাঁর পরিচয় দাও।
- ১ । জুলিয়াস সীজারের পরে রোমের ইতিহাস সম্বন্ধে কী জান।
- ১১। যীশুর সম্বন্ধে কী জান !
- ১২। তিনি যে-ধর্ম প্রচার করেন তার মূল কথাওলি কী কী ?
- ১७। को ভাবে श्रीकेशर्भ विखातनां करत ?
  - ১৪। শৃনাস্থান প্রণ কর:
- (क) हिल्लन धान्यानमात्र दाना।
- (খ) প্রথম তৃ'জন মধ্যে একজনের নাম জ্নিয়াপ ক্রটাস।
- (গ) হামিলকার বার্কা ছিলেন পিতা।
- (घ) कूरेन्क्रेतिम এक श्रकात युक्त नाम।
- (ঙ) কার্থেজের সঙ্গে রোমের যে-যুদ্ধ হয় তার নাম যুদ্ধ।
- (চ) রোমে নামে এক শ্রেণীর পেশাদার যোদা ছিল।
- (ছ) রোমের কলোসিয়ামের নির্মাণকার্য তরু হয়েছিল শুআট —

#### ব্ৰাভ্ত্তকালে।

0

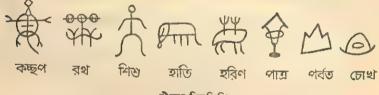
- (জ) রোম কেনাবেচার সবচেয়ে বড়ো কেল্র ছিল —।
- (य) ছিলেন জুলিয়ার সীজারের একজন শক্তিশালী প্রতিঘন্দী।
- (ঞ) যীশুর পিতার নাম ছিল ।
- (ह) যীত নামে এক ইছদি ধর্মপ্রচারকের কাছে দীক্ষা নেন।
- (b) স্পর্নে ছ্রারোগা রোগও সারত।

## সপ্তম পরিচেছদ

#### छोत

(শাং বংশের আমল থেকে)

শাং বা য়িন বংশ ঃ শাং বা য়িন্ বংশের রাজারা প্রায় সাড়ে ছশো,বছর চীনে রাজত্ব করেন। এই রাজবংশের আমল থেকেই আমরা চীনের প্রকৃত ইতিহাস জানতে পারি। বহুকাল আগে শাং রাজধানী মাটির নীচে বসে গিয়েছিল। ওপর থেকে শুধু একটা চিবি দেখা যেত। লোকে এই চিবিটাকে বলত য়িনের চিবি। পরে এই চিবি খুঁড়ে একটা বিরাট নগরের ধ্বংসাবশেষ আবিকৃত হয়েছে। এ ছাড়া, চীনা সভ্যতার বহু চিহ্নও পাওয়া গেছে। এরকম চিহ্নের মধ্যে আছে কতকগুলো কচ্ছপের খোলা। কচ্ছপের খোলাগুলোতে অজ্ঞানা অক্ষরে কি সব লেখা ছিল। পরে পতিতেরা সে-সব লেখার পাঠোদ্ধার করেছেন; তা থেকে চীনের অনেক কথা জানা গেছে। য়িনের চিবি



চীনের চিত্রলিপি

খুঁড়ে আরও যেসব জিনিসপত্র পাওয়া গেছে তার মধ্যে আছে ব্রোঞ্জের
নানা জিনিসপত্র, এনামেলের পাত্র, রং ও পালিশ করা নানা রকমের
মাতির পাত্র। চীনারা এই যুগে কচ্ছপের খোলার ওপরে নানা রকমের
লেখা লিখত এবং ছবি আঁকত। কচ্ছপের খোলার ওপরে প্রশ্ন
লিখে রাখলে নাকি দেবতার নির্দেশ পাওয়া যেত। বর্শা ও তীর
নিয়ে শিকারের ছবি এবং কুকুর, শুয়োর ও বাঁড় প্রভৃতি জন্তরও ছবি
পাওয়া গেছে। চীনাদের কাছে প্রপুক্ষররা খুব সম্মান পেতেন।
ভারা মৃত প্রপুক্ষবদের পুজো করত। নানা দেবদেবীর পুজোরও
প্রচলন ছিল।

শাং বা য়িন বংশের পর চৌ-বংশ রাজত করে।

cচী-রাজবংশ ঃ ১১২৫ খ্রীস্টাব্দে চীনে চৌ-রাজবংশের রাজত্ব শুক হর। ইয়াংসি নদী-উপত্যকার উর্বর জনপদে চৌ-রাজারা খ্রীস্টপূর্ব অষ্ট্রম শতাকীতে একটি সামাজ্য স্থাপন করেন। লোয়াং-এর কাছে চেং-চাউ নামে একটি জায়গায় তাঁরা তাঁদের রাজধানী নির্মাণ করেন। চৌ-রাজবংশের প্রথম রাজা 'উ' চীনে জমিদারশ্রেণীর প্রবর্তন করেছিলেন। জমিদারদের পাঁচটি শ্রেণীতে ভাগ করে তিনি <mark>প্রত্যেককে কিছু পরিমাণ জমি দান করেন। জমিদারেরা আবার</mark> সেই জমি প্রজাদের মধ্যে বিলি করে দেন। প্রজারা জমিদারের জমি চাষ করত, জমিদারের জক্তে মাছ ধরত, কাঠ কাটত এবং নানা ফাই-ফরমাশ খাটত। প্রথম প্রথম চৌ-রাজার। জমিদার বা সামস্তদের বেশ কড়া শাসনে রেখেছিলেন। রাজ-দরবারে এ<mark>সে</mark> চাষবাস, ব্যবসা-বাণিজ্য প্রভৃতি নানা বিষয়ে নিজেদের জমিদারি<mark>র</mark> যাবতীয় সংবাদ তাদের জানাতে হোত। প্রজাদের <mark>ওপর</mark> জমিদারদের অত্যাচার বন্ধ করার জত্যে চৌ-রাজারা পাঁচ বছর অন্তর রাজ্যের মধ্যে ঘুরে ঘুরে নিজেদের চোখে দেখতেন প্রজারা সুথে-শান্তিতে বাস করে কিনা। কিন্ত কালক্রমে রাজশক্তি হর্বল হয়ে পড়ে। জমিদারেরা তথন একরকম স্বাধীনভাবেই দেশ শাসন করতে থাকে।

নানারকম আভান্তরীণ গোলমাল সত্ত্বে চৌ-রাজাদের আমলে চীনে সভাতার বিকাশ ঘটে। এই যুগেই প্রথম পশমের কাপড়ের চলন হয়, কৃষকরা লাঙ্গল দিয়ে জমি চাষ করতে শেখে। লোহার অন্ত্রশস্ত্রও এ যুগে ব্যবহার করা হয়। দেশের ভেতরে ব্যবসাবাণিজ্যের গ্রীবৃদ্ধি হয়। চৌ-রাজাদের আমলেই চীন থেকে পারস্তে প্রচুর রেশমী কাপড় যেত। গুটিপোকা থেকে রেশমের কাপড় বোনার আশ্চর্ষ কৌশলটি চীন বহুকাল পর্যন্ত গোপন রেখেছিল। এ যুগেই ধাতু থেকে মুদ্রা তৈরী করা হয়। স্থলর স্থলর ব্রোঞ্জের পাত্র নির্মাণে চৌ-যুগের শিল্পীরা যথেষ্ট দক্ষতার পরিচয় দিয়েছে।

চৌ-রাজাদের সময়ে চীনে লেখাপড়া-জানা পণ্ডিতশ্রেণীর মান্ত্রেরা রাজদপ্তরে কাজ করতেন, আবার তাঁরা বড়লোকদের বাড়িতে গিয়েও ছাত্র পড়াতেন। জনসাধারণ এঁদের খ্বই শ্রাদার চোখে দেখত। জীবনের উদ্দেশ্য কি —এরকম নানা চিন্তা ও আলোচনার
মধ্য দিয়ে তাঁরা সময় কাটাতেন। এসব পণ্ডিতেরা অনেক সময়
দেশের নানা জারগায় ঘুরে ঘুরে বেড়াতেন এবং দেশের মামুষের
কাছে তাঁদের চিন্তাকে তুলে ধরতেন। এমন একজন পণ্ডিত ছিলেন
কুন্-ফুটজু। কনফুসিয়স নামেই তিনি বিশেষ পরিচিত।

এবার তোমাদের কনফ্সিয়সের কথা বলব।

কন্ফুসিয়স: ভারতবর্ষে গৌতম বৃদ্ধ পশুবলি ও নানারকম যাগ্যজ্ঞ ও অনুষ্ঠানের বহর দেখে মানুষের কল্যাণের জ্ঞো চিন্তিত



কনফুসিরস

হয়ে পড়েছিলেন। ঠিক সেই কালে চীনেও কনফ্সিয়স নামে এক মহাপুরুষের আবির্ভাব হয়। চীনের এই মহাপুরুষও মানুষের তুঃখ দেখে বিচলিত হয়ে পড়েছিলেন।

কনফুসিয়স যখন জন্মগ্রহণ করেন, তখন চীনের বড়ই ছর্দিন।
দেশ জুড়ে কেবল অশান্তি আর ঝগড়া-বিবাদ। তখনকার চীন ছিল
ছোটো ছোটো রাজ্যে বিভক্ত, আর সে-সব রাজ্যের মধ্যে যুদ্ধ-বিবাদ
লোগেই থাকত। সমাজে সাধ্তার কোনও মূল্য ছিল না। অত্যাচার
আর অবিচারে মানুষ অতিষ্ঠ হয়ে পড়েছিল। মানুষের এই ছুর্গতি
দেখে কনফুসিয়স ব্যাকুল হয়ে ভাবতে লাগলেন। এক সময় তিনি

এই সভাের সন্ধান পেলেন যে, একমাত্র চরিত্রের গুণেই মানুষ ছঃখ আর বিপদকে জয় করতে পারে।

কনফুসিয়স প্রাচীন শাং রাজবংশের সন্তান। তাঁর যখন তিন বছর বয়স, তখন তাঁর বাবা মারা যান। কনফুসিয়স মায়ের স্নেহযত্ত্বে মায়্র্য হয়েছিলেন। দারিজ্যের জন্ম লেখাপড়া শিখতে তাঁকে যথেষ্ট বেগ পেতে হয়েছিল। তিনি ইতিহাস, সঙ্গীত ও ধমুর্বিছা ভালো করে শিখেছিলেন। ছোটবেলা থেকেই কনফুসিয়স একটু গন্তীর এবং ভাবৃক প্রকৃতির ছিলেন। দেখতে তিনি ছিলেন কদাকার, কিন্তু তিনি ছিলেন খুবই জ্ঞানী, ঠিক যেমনটি ছিলেন গ্রীক দার্শনিক সফ্রেটিস।

কনফুসিয়দের বয়স যথন ২২ বছর তথন তিনি নিজের বাড়িতেই একটি বিগুলিয় খুলে সেথানে ছাত্র পড়াতে শুরু করেন। ছাত্ররা প্রশা করত, কনফুসিয়স ব্যাখ্যা করে ব্ঝিয়ে দিতেন। এভাবেই জিজ্ঞাসা ও ব্যাখ্যার মধ্য দিয়ে ছাত্ররা শিখত ইতিহাস, কাব্য, আচার-ব্যবহার।

কনফুসিয়সের শিক্ষাঃ কনফুসিয়স বলতেন পিতার কর্তব্য যেমন সন্তানকে মান্তব্য করে তোলা, সন্তানেরও তেমনি উচিত পিতা-মাতাকে মান্ত করা, তাঁদের সেবা-যত্ন করা। তা ছাড়া, প্রতিবেশীদের প্রতিও মান্তবের কতকগুলি কর্তব্য আছে। বিপদে-আপদে তাঁদের সাহায্য করা উচিত। সমাজে থেকে কর্তব্য পালন করে, সংসার এবং সমাজের নিয়ম পালন করে, আঘোনতি করা সম্ভব। সৌজন্ত হোল শিক্ষার সার। চরিত্রবলের ঘারাই নিজের ও সমাজের উন্নতি করা সম্ভব। তিনি তাঁর স্বদেশবাসীর কাছ থেকে যেরূপ শ্রানা ও সম্মান লাভ করেছিলেন, পৃথিবীর কোন দিখিজয়ী সম্রাট সে রকম শ্রানা ও সম্মান পেয়েছিলেন কিনা সে বিষয়ে সন্দেহ আছে।

চীনের প্রাচীর ঃ খ্রীস্টপূর্ব তৃতীয় শতকে চীনের বিভিন্ন অঞ্চলের মধ্যে ঝগড়া-বিবাদ শুরু হয়। শি-হুয়াংতি নামে চিন-বংশীয় একজন সামন্তই প্রথম বিভিন্ন অঞ্চল একত্রিত করে একটি অখণ্ড সাম্রাজ্য গড়ে তোলেন। এ সময় থেকেই দেশের নাম হয় চীন। ২২০ খ্রীস্টপূর্বাব্দে তিনি রাজা হন। বর্বর জাতির আক্রমণ থেকে রাজ্যকে রক্ষা করার জন্মে তিনি এক বিরাট প্রাচীর



চীনের প্রাচীর

নির্মাণের কাজ শুরু করেন। চীনের উত্তর দিকে মঙ্গোলিয়ার সীমান্ত ধরে সমুদ্র পর্যন্ত এই প্রাচীরটি লম্বার ছিল ১,৪০০ মাইলেরও বেশি। প্রাচীরটির উচ্চতা ছিল ২৫ থেকে ৩০ ফুট। প্রাচীরটি এত চওড়া ছিল যে, ওপর দিয়ে ছ'জন অশ্বারোহী পাশাপাশি যেতে পারত। চীনের এই প্রাচীরটি ছিল পৃথিবীর সাতটি আশ্চর্বের মধ্যে একটি। চৌদ্ধ বছর (২০৪ খ্রীস্টপূর্বান্ধ থেকে

0

২১৮ খ্রীস্টপূর্বাক ) খরে অসংখ্য মানুষ পরিশ্রম করে প্রাচীরটি গেঁথে তুলেছিল।

চিন্ সান্তাজ্য ঃ শি-হুয়াংতি ছিলেন চিন্ বংশের প্রতিষ্ঠাতা।
চীনের বিখাত প্রাচীর ছাড়াও তিনি তাঁর রাজ্যে বহু রাস্তাঘাট
তৈরি করান। বিভিন্ন অঞ্চল যাতে এক শাসনের অধীনে আসে,
এজফ্রে তিনি প্রাচীন সব পুথিপত্তর পুড়িয়ে ফেলেন। আর
এভাবেই কনফুসিয়সের বহু মূলাবান উপদেশ ( যা তাঁর শিল্পুরা লিখে
রেখেছিলেন) চিরকালের মতো নই হয়ে যায়। তিনি তাঁর প্রধানমন্ত্রী
লি-স্থর পরামর্শেই নাকি এ কাজ করেছিলেন। শি-হুয়াংতি
চেয়েছিলেন প্রজারা তাঁকে দেবতার মতো পুজো করুক। শাসনকার্থে
কঠোরতা দেখালেও তিনিই প্রথম চীনে শক্তিশালী কেন্দ্রীয় শাসনের
প্রেবর্তন করেন। তাঁর মৃত্যুর পর পাঁচ বছর যেতে না যেতে চিন্
সামাজ্যের পতন হয়। কাও-স্থ নামে এক ব্যক্তি এর পরে হান
রাজবংশের প্রতিষ্ঠা করেন। এই হ্যান রাজবংশের কাহিনী তোমরা
পরে জানবে।

## অনুশীলনী

- শাং বংশের রাজাদের কথা জানা গেল কেমন করে ?
- 'য়িনের টিবি' খুঁড়ে কা কা পাওয়া গেছে ? 21
- চৌ-রাজারা কোথায় রাজত্ব করতেন ? তাঁদের রাজধানী কোথার ছিল ?
- 8। চৌ-রাজবংশের প্রথম রাজা কে ? তাঁর কীর্তির কথা বল।
- ৫। চীনে জমিদার বা সামন্ত-প্রথা কে প্রবর্তন করেন? সামন্ত-প্রথা প্রবর্তনের ফল কা হয়েছিল ?
- চৌ-রাজাদের আমলে চীনের সভাতার বিবরণ দাও।
- কনফুসিয়স সম্বন্ধে কী জান ? 9 1
- ৮। 'কনফুসিয়দের শিক্ষা' নিয়ে একটি ছোট প্রবন্ধ লেখ।
- চিন্ সামাজ্যের প্রতিষ্ঠাতার নাম কী ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ১০। চিনের প্রাচীর কে নির্মাণ করেন ? কেন করেন ? প্রাচীরটির वर्गना माउ।
- ১১। চিন্ রাজবংশের ক'জন রাজা রাজত করেন? কীভাবে ঐ বংশের পত্ৰ হয় ?

১২। ভুল শুদ্ধ কর:

 ক) চীনারা কাগজের ওপরে নানা রকমের লেখা লিখত। (খ) চৌ-রাজবংশের প্রথম রাজার নাম শি-হুয়াংতি। (গ) চৌ-বংশের রাজা ভৈ' জমিদারদের সাতটি শ্রেণীতে বিভক্ত করেন। (ঘ) শাং-রাজাদের আমলেই চীন থেকে পারস্যে প্রচুর রেশমী কাপড় যেত। (ঙ) ক্নফুসিয়<mark>স সংসার</mark> তাাগ করার উপদেশ দিয়েছিলেন।

# অষ্টম পরিচেছদ প্রাচান ভারত

আর্যদের আগমন: শিশ্ব-উপত্যকায় যে-সভ্য জাতি নগর গড়ে তুলেছিল, তাদের কথা তোমাদের আগেই বলেছি। এক সময় হঠাৎ এই সভ্যতা সম্পূর্ণ ধ্বংস হয়ে যায়। আজ থেকে প্রায় তিন হাজার বছরেরও আগে এক দল মানুষ উত্তর-পশ্চিম সীমান্তের পথে ভারতের অন্তর্গত পাঞ্জাবে প্রবেশ করে। এরা আর্য নামে পরিচিত। এদের আদি বাসস্থান ছিল কাস্পিয়ান হ্রদের তীরে অথবা পশ্চিম

ইয়োরোপে। কারো মতে, তারা মধ্য এশিয়ায় বাস করত।
ভারতে আর্যদের যে-শাখা আসে তাদের সঙ্গে এথানকার আদি
বাসিন্দাদের যুদ্ধ হয়। যুদ্ধে হেরে গিয়ে আদি বাসিন্দাদের কিছু
অংশ পাঞ্জাব ছেড়ে চলে যায়, আর যারা ছিল তারা আর্যদের প্রভুত্ব
স্থীকার করে নেয়।

বেদ ঃ বেদের অর্থ—যা জানা যায়, অর্থাৎ 'জ্ঞান'। আর্থরা নানা প্রাকৃতিক শক্তিকে দেবতাজ্ঞানে স্তব-স্তৃতি করত। এই স্তব-স্তৃতির সংকলনই বেদ। বেদ সংখ্যায় চারখানা—অক্, সাম, যজুঃ ও অথর্ব। ঋগ্বেদই হোল সবচেয়ে প্রাচীন। সবশেষে রচিত হয় অথর্বদেন। এতে রোগ সারাবার এবং অপদেবতা দূর করার মন্ত্রতন্ত্র আছে। ঋগ্বেদ পত্তে লেখা। এর শ্লোকগুলো খুব মধুর এবং কাব্যময়। বেদ থেকে আমরা আর্থদের সমাজ, ধর্ম, রাজনীতি প্রভৃতি বিষয়-সম্বন্ধে জানতে পারি।

বৈদিক যুগের সমাজঃ আর্যরা পরিবারবদ্ধ হয়ে বাস করত। পরিবারে কর্তাই ছিলেন প্রধান। কয়েকটি পরিবার নিয়ে ছিল একটি প্রাম। গ্রামের প্রধানকে বঙ্গা হোত দলপতি বা গ্রামণী। প্রার্থরা গ্রামে বাস করত। পুরুষেরা চাষবাস ও পশুপালন করত, আর মেয়েরা করত নানা রকমের ঘরের কাজ। জমিজমাতে কারুর বাক্তিগত অধিকার ছিল না, জমি ছিল সকলের। আর্ধরা চামড়া ও মাটির কাজ, কাপড়-বোনা, রং-করা ও নকশার কাজ জানত। তারা স্থতো, পশম এবং পশুর চামড়ার পোশাক পরত। তাদের প্রধান খাত ছিল তুধ, শস্তা, ফল ও মাংস। যজের সময় তারা সোমরস পান করত। আর্যরা পশুশিকার করত, রুথ চালাত, পাশা খেলত এ<mark>বং</mark> গান-বাজনা করত। সমাজে নানা কাজ বা বৃত্তি ছিল, আর পরবর্তী কালে বৃত্তিকে কেন্দ্র করে জাতিভেদ প্রথার সৃষ্টি হয়। জনসাধারণকে ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য ও শূদ্র—এই চার ভাগে ভাগ করা হয়। ত্রাহ্মণরা পূজা-পার্বণ, যাগযজ্ঞ এবং জ্ঞানচর্চা করত। ক্ষত্রিয়েরা যুদ্ধবিগ্রহ এবং রাজারক্ষা করত, বৈশ্যেরা ব্যবসা-বাণিজ্য ও পশুপালন করত। অনার্থরা এই তিন জাতির সেবা করত। তাদের বলা হোত শূদ্র।

আর্থসমাজে ত্রী-স্বাধীনতা ছিল। নারীদের কেউ কেউ বিবাহ না

করে লেখাপড়ার চর্চা করতেন। এঁরা বৈদিক মন্ত্রও রচনা করেছেন।
এঁদের ব্রহ্মবাদিনী বলা হোত। বিশ্ববারা, ঘোষা, অপেলা,
লোপামুদ্রা প্রভৃতির নাম বেদে পাওয়া যায়। আর্ধরা যুদ্ধে তীরধনুক, বর্শা, খড়গ, কুঠার প্রভৃতি ব্যবহার করত। আর্ধ-বালকেরা
গুরুগৃহে থেকে লেখাপড়া শিখত। লেখাপড়া শেখা শেষ হলে
তারা সংসারধর্ম পালন করত। তারপরে যখন বেশ বয়স হোত,
তখন বনে গিয়ে এরা তপস্থা করত। বুদ্ধ বয়দে সয়্লাস গ্রহণ করত
এবং সংসারের সব চিস্তা ত্যাগ করে শুরু মুক্তির চিস্তায় জীবনের
বাকি দিনগুলো কাটিয়ে দিত।

আর্যদের ধর্মঃ বৈদিক দেবতাদের মধ্যে ইন্দ্র ছিলেন বৃষ্টি ও বজুের দেবতা, বরুণ সাগরের দেবতা, মিত্র আলোকের দেবতা এবং অগ্নি তাপের দেবতা। ইন্দ্র ছিলেন দেবতাদের রাজা। দেবতাদের তৃপ্তির জন্মে আর্ধরা যজ্ঞ করত।

বৈদিক যুগের রাজাঃ বৈদিক যুগে সমাজ ও রাষ্ট্র ছিল একটা বড়ো পরিবারের মতো। আর্যরা গ্রামে বাস করত। কয়েকটি গ্রাম নিয়ে গড়ে উঠত একটি 'জন' এবং কয়েকটি 'জন' নিয়ে একটি 'রাজা'। রাজ্যের প্রধান ব্যক্তিকে রাজা বলা হোত। রাজার প্রধান পরামর্শ-দাতা ছিলেন পুরোহিত। সমাজে পুরোহিতদের যথেই সম্মান ছিল।

'সভা' ও 'সমিতি' নামে ছটি পরিষদ রাজাকে শাসনকার্ষে পরামর্শ দিত। রাজা অত্যাচারী হলে প্রজারা তাঁকে পদচ্যুত করতে পারত।

ভারতের তুই মহাকাব্য-রামায়ণ ও মহাভারতঃ বৈদিক যুগের শেষভাগে রামায়ণ ও মহাভারত নামে ত্'থানি মহাকাব্য রচিত হয়। রামায়ণ ও মহাভারতে সেই সময়ের সমাজ, রাষ্ট্র, ধর্ম প্রভৃতি বহু বিষয় সম্বন্ধে মূল্যবান তথ্য আছে।

অনেকে মনে করেন যে, রামায়ণ মহাভারতের আগে রচিত হয়েছিল।

মহাকাব্যের যুগে ছিল রাজার শাসন। রাজার প্রধান কর্তব্য ছিল প্রজাপালন। রাজ্যে অনাবৃষ্টি, ছভিক্ষ বা মহামারী হলে রাজাকেই দায়ী করা হোত। ঐ সময়ে জ্ব্যান্ত্র্সারে জাতি নির্ণয় করা হোত। ক্ষত্রিয়দের প্রাধান্ত ছিল স্বচেয়ে বেশি। মান্ত্রের প্রধান জীবিকা কৃষিকাজ থুব সম্মানের ছিল। এ যুগের রাজারা অশ্বনেধ, রাজস্থ প্রভৃতি নানা যাগযজ্ঞ করতেন। ছোটো-ছোটো রাজ্য থেকে ধীরে ধীরে সাম্রাজ্য গড়ে তোলার চেষ্টাও এ যুগের একটি বৈশিষ্টা। আর্ধ ও অনার্ধরা বহুকাল পাশাপাশি বাস করে একে অপরের সভ্যতা দারা প্রভাবিত হয়েছিল।

জৈন ও বৌদ্ধর্মের অভ্যুদয় ঃ নানা আচার-অনুষ্ঠান, যাগযজ্ঞ, পশুবলি আর জাতিভেদ সাধারণ মামুষকে ব্রাহ্মণ্য ধর্মের প্রতি বিরূপ করে তুলেছিল। ঠিক এই সময়ে ভারতে তু'জন মহাপুরুষের আবিভাব হয়। একজন হলেন জৈনধর্মের প্রচারক মহাবীর; অপরজন বৌদ্ধর্মের প্রবর্তক বৃদ্ধ।

প্রথমে তোমাদের মহাবীরের কথাই বলি।

মহাবীরঃ আজ থেকে প্রায় আড়াই হাজার বছর আগে উত্তর বিহারের কুন্দপুরে মহাবীরের জন্ম হয়। ভিনি ছিলেন এক রাজ-



মহাবীর

বয়সে তিনি দেহত্যাগ করেন।

পরিবারের সন্তান। ছেলেবেলায় महावीरतत नाम हिल वर्धमान। তাঁর পিতার নাম সিদ্ধার্থ, মাতার নাম ত্রিশলা। যশোদা নামে এক স্থন্দরী বালিকার সঙ্গে তাঁর বিবাহ হয়। কিন্তু সংসার তাঁর ভালো লাগে না। মায়ের মৃত্যুর পর তিনি সংসার ভাগে করে সন্নাসী হন। তথন তাঁর বয়স হয়েছিল মাত্র ত্রিশ বছর। দীর্ঘ বারো বছর কঠোর সাধনা করে তিনি অবশেষে প্রকৃত জ্ঞান লাভ করেন। তখন তাঁর नाम रय किन वा विकशी शूक्ष। তাঁর শিশুরা জৈন এবং তিনি মহাবীর নামে পরিচিত। দক্ষিণ বিহারের পাবা নগরে ৭২ বছর

মহাবীরের আগেও কয়েকজন জৈনগুরু বা তীর্থন্করের আবির্ভাব

হয়েছিল। তাঁরা অহিংদা-ধর্ম প্রচার করে গেছেন। এ°রা হিংসা করা, মিথ্যা বলা, চুরি করা বা দান গ্রহণ করা প্রভৃতি নিষেধ করে গেছেন। এই চারটি নীতি ছাড়াও মহাবীর সাধুজীবন যাপন করার কথা প্রচার করে গেছেন। জৈনরা জীবহত্যা করেন না ; কীট-পতক্<del>ষের</del> প্রাণও তাঁদের কাছে পবিত্র। ভারধর্ম ভারতের বাইরে প্রচারিত <del>না</del> হলেও, আজও তা ভারতের একটি প্রধান ধর্ম। মৌর্য সমাট চন্দ্রগুপ্ত, অশোকের পৌত্র সম্প্রতি এবং কলিঙ্গের রাজা খারবেল জৈনধর্ম গ্রহণ করেছিলেন।

গোত্ম বুদ্ধ ও বৌদ্ধর্মঃ বহুকাল আগে হিমালয়ের নেপালের তরাই অঞ্লে কপিলবস্তু নামে একটি ছোটো রাজ্য ছিল। সেখানে শাক্যবংশীয় রাজারা রাজত্ব করতেন। ছিলেন শুদোদন। এই শুদোদনের পুত্রই বৃদ্ধদেব। ইনিই

বৌদ্ধর্মের প্রতিষ্ঠাতা। প্রথম জীবনে বৃদ্ধদেবের নাম ছিল সিদ্ধার্থ বা গৌতম। বাল্যকাল থেকেই সিদ্ধার্থ সব সময়েই যেন কি চিন্তা করতেন। গুদ্ধোদন ভাবলেন, বৃঝি বিয়ে দিলে ছেলে সংসারী হবে। নিজে দেখে-শুনে পরমা স্থলরী গোপার সঙ্গে निकार्थित विरय फिल्मन । कि कू फिन বেশ সুখেই কাটল। ইতিমধ্যে সিদ্ধার্থের রাহুল নামে এক পুত্র-সন্তান হোল। কিন্তু সিদ্ধার্থ সেই আগেরই মতো কেবল চিন্তাই করে চলেছেন—কি হবে সংসারে থেকে ! রোগ, শোক আর তুঃখ, এই নিয়ে জীবন ৷ তিনি ভাবতে লাগলেন, কি করে হঃথের হাত

Ö



বুদ্দেব

থেকে মৃক্তি পাওয়া যায়। সংসারে থাকলে দিন দিন তিনি মায়া-মমতার বাঁধনে জড়িয়ে পড়বেন, আর তাতে কেবল হুঃখই বাড়বে। তাই একদিন গভীর রাতে সংসার ছেড়ে তিনি পথে বেরিয়ে পড়লেন। তখন তাঁর বয়স, বড় জোর, উনত্রিশ বছর।

উরুবিল্ব নগরে ছয় বছর কঠিন সাধনার পর তাঁর দেহ ভীষণ হুর্বল হয়ে পড়ল। তারপর একদিন তাঁর বাসনা পূর্ণ হোল। জরা-মৃত্যু-ঝাধির ছঃখ থেকে তিনি যে-মুক্তিপথের সন্ধানে সংসার ছেড়ে বেরিয়ে পড়েছিলেন, সেই মুক্তির পথ খুঁজে পেলেন। তখন তাঁর নাম হোল বৃদ্ধ বা জ্ঞানী।

বৃদ্ধদেব কেবল নিজের মৃক্তিই চান নি, সকল মানুষের মৃক্তিই ছিল তাঁর কাম্য। তিনি কাশীর কাছে সারনাথের মৃগদাব বনে তাঁর উপদেশ প্রচার করলেন। তাঁর প্রধান শিশ্যদের মধ্যে সারিপুত্ত, মোগল্লান, আনন্দ প্রভৃতি বিশেষ উল্লেখযোগ্য। কোশলের রাজা প্রসেনজিং এবং মগধরাজ বিশ্বিসার তাঁর ভক্ত হয়েছিলেন। বৃদ্ধদেব উত্তরপ্রদেশ ও বিহারের নানা জায়গায় তাঁর ধর্মমত প্রচার করে আশি বছর বয়সে কৃশীনগরে দেহত্যাগ করেন।

বৃদ্ধের মৃত্যুর পর তাঁর শিল্পরা বর্তমানে বিহারের অন্তর্গত রাজগৃহে (রাজগীর) মিলিত হন এবং তাঁর ধর্মমত গ্রন্থের আকারে প্রকাশ করেন। এই গ্রন্থের নাম 'ত্রিপিটক'। পরে বৃদ্ধদেবের পূর্বজন্মের ঘটনা অবলম্বন করেও বই লেখা হয়। এর নাম 'জাতক'।

বৃদ্ধদেবের ধর্মত সহজ ও সুন্দর। মানুষের মন থেকে ভোগ-বাসনা দূর হলে, তবেই সে ছঃখ-কষ্টের হাত থেকে মুক্তি পেতে পারে। বৌদ্ধরা একে 'নির্বাণ' বলেছেন। নির্বাণ-শক্টির অর্থ সকল কামনা থেকে মুক্তি। সংকর্ম, সত্য কথা, সং সঙ্কন্ম, সং চেষ্টা এরকম আটটি উপায়ে নির্বাণ বা মুক্তিলাভ করা যায়। বৌদ্ধর্মের মূলনীতিই হোল অহিংসা।

প্রীস্টপূর্ব ষষ্ঠ শতাকীতে যখন মহাবীর ও বৃদ্ধ তাঁদের নতুন ধর্মের কথা মানুষকে শোনাচ্ছিলেন, তখন ভারতবর্ষ জুড়ে ছিল বহু ছোটো ছোটো জনপদ বা রাজ্য। এই রাজ্যগুলোর মধ্যে মগধ খুব শক্তিশালী হয়ে ওঠে। তখন দক্ষিণ বিহারকে মগধ বলা হোত। এই মগধের অধানে যে-বিশাল সাম্রাজ্য গড়ে উঠেছিল, তার কথাই এখন বলছি। রাজ্য থেকে সান্ত্রাজ্য ঃ আলেকজাণ্ডার পারস্থ এবং ভারতের যে-অঞ্চলগুলো জয় করেছিলেন, তা দেলুকাস নামে তাঁর এক সেনা-পতির অধিকারে আসে। এসব কথা তোমাদের আগেই বলেছি। এখন শোন চক্রগুপ্ত মোর্ষ নামে এক ভারতীয় বীরের কথা। চক্রগুপ্তপ্তর সঙ্গে দেলুকাসের যুদ্ধ হয়। যুদ্ধে হেরে গিয়ে দেলুকাস চক্রগুপ্তপ্তর সঙ্গে এক মৈত্রী-চুক্তি করেন। এই চুক্তি অনুসারে ভারতের পাঞ্জাব এবং বর্তমান আফগানিস্তান ও বেলুচিস্তানের চারটি প্রদেশ (কাব্ল, কান্দাহার, হিরাট ও মকরাণ) চক্রগুপ্তর অধিকারে আসে। চক্রগুপ্তের রাজসভায় দেলুকাস একজন গ্রীক দৃতকে পাঠান। এই গ্রীক দৃতের নাম মেগাস্থিনিস। তাঁর 'ইণ্ডিকা' গ্রন্থে আমরা মোর্য-শাসনকালে সমাজের স্থন্দর বর্ণনা পাই। পরে ভোমাদের এ বিষয়ে বলব।

চন্দ্রগুপ্ত মোর্য: আলেকজাণ্ডার যথন ভারত আক্রমণ করেন তথন দক্ষিণ বিহারে নন্দরাজারা রাজত করতেন। নন্দরাজাদের আমলেই মগধকে কেন্দ্র করে একটি মস্ত বড়ো সাম্রাজ্য গড়ে ওঠে। আলেকজাণ্ডারের সময়ে ধননন্দ নামে নন্দবংশের এক রাজা মগধে রাজত্ব করতেন। চন্দ্রগুপ্ত এই ধননন্দকে পরাজিত করে মগধের সিংহাসন অধিকার করেন।

আলেকজাণ্ডার যথন পাঞ্জাবে, তথন চক্রগুপ্ত নামে এক তরুণ যুদ্ধবিত্যা শেখার উদ্দেশ্যে তার শিবিরে এসেছিলেন। কোনো কারণে আলেকজাণ্ডার তাঁর ওপর অসন্তুষ্ট হন। তথন চক্রগুপ্ত গ্রীক শিবির আলেকজাণ্ডার তাঁর ওপর অসন্তুষ্ট হন। তথন চক্রগুপ্ত গ্রীক শিবির থেকে পলায়ন করে নিজের প্রাণ বাঁচান। এই চক্রগুপ্তই পরবর্তী কালে বিশাল মোর্য সাম্রাজ্য স্থাপন করেছিলেন। চক্রগুপ্তের প্রথম কালে বিশাল মোর্য সাম্রাজ্য স্থাপন করেছিলেন। চক্রগুপ্তের প্রথম জাবন সম্বন্ধে প্রীকদের লিখিত বিবরণ এবং ভারতের কিছু কিংবদন্তী জাহে। শোনা যায়, মগধের শেষ নন্দস্মাটের মুরা নামে এক দাসী আছে। শোনা যায়, মগধের শেষ নন্দস্মাটের মুরা নামে এক দাসী আছে। শোনা যায়, মগধের শেষ নন্দস্মাটের মুরা নামে এক চক্রগুপ্ত আবার কারো মতে চক্রগুপ্ত মোরিয় নামে একটি ক্ষত্রিয় বংশো জন্মগ্রহণ করেছিলেন। বৃদ্ধের মোরিয় নামে একটি ক্ষত্রিয় বংশো জন্মগ্রহণ করেছিলেন। বৃদ্ধের সময়ে মোরিয়রা পিপ্ললীবন নামে একটি রাজ্যে রাজত্ব করতেন। কোটিল্য বা চাণক্য নামে তক্ষশিলার এক চতুর ব্রাহ্মণের সহায়ভায় কোটিল্য বা চাণক্য নামে তক্ষশিলার এক চতুর ব্রাহ্মণের সহায়ভায় কিনি একটি সেনাদলে গঠন করেন এবং এই সেনাদলের সাহায়ে মগধরাজ ধননন্দকে বিনাশ করে সিংহাসন অধিকার করেন। তারপর মগধরাজ ধননন্দকে বিনাশ করে সিংহাসন অধিকার করেন। তারপর

17

হিমালয় থেকে মহীশূর পর্যন্ত ভারতের এক বিরাট অঞ্জে নিজের আধিপত্য বিস্তার করেন।

মেগান্থিনিসের বিবরণ থেকে জানা যায় যে, ভারতের ছোটোবড়ো অনেক রাজ্যের মধ্যে মগধই ছিল শ্রেষ্ঠ। মৌর্ধ সম্রাটের একটি
বিশাল সেনাবাহিনী ছিল। এ ছাড়া, তাঁর একটি নৌ-বাহিনীও
ছিল। বিশাল মৌর্য সামাজ্য অনেকগুলো প্রদেশে বিভক্ত ছিল।
রাজপ্রতিনিধিরা বিভিন্ন প্রদেশে শাসন করতেন। চক্রগুপ্তের রাজধানী
পাটলিপুত্র ছিল একটি প্রকাণ্ড শহর। খুব উচু প্রাচীর দিয়ে শহরটি
ঘেরা ছিল। রাজপ্রাসাদ ছিল কাঠের তৈরী, এর কারুকার্য ছিল খুব
স্থানর। পাটনার কাছে কুমারহার প্রামে চক্রগুপ্তের প্রাসাদের
ধ্বংসাবশেষ পাওয়া গেছে। চক্রগুপ্তের মন্ত্রী কোটিলাের লেখা
অর্থনাক্ত্রেও চক্রগুপ্তের শাসনব্যবন্থা সম্বন্ধে অনেক কথা আছে।
চক্রগুপ্তের পর তাঁর পুত্র বিন্দুসার রাজা হন। বিন্দুসারের পুত্র
অশোক মৌর্ধ বংশের শ্রেষ্ঠ সমাট। তাঁর মতো মহানুভব সমাট
পৃথিবীতে খুব কমই আছে।

অশোক: প্রথম জীবনে অশোক নাকি নিষ্ঠুর ছিলেন।



অশোক

অভিযেকের আট বছর পরে তিনি কলিঙ্গ জয় করেন। এখনকার উডিয়ার প্রাচীন নাম কলিঙ্গ। কলিঙ্গ যুদ্ধে প্রায় এক লক্ষ লোক নিহত হয়, এর চেয়েও বেশি লোক মারা যায় অনাহারে এবং মহা-মারীতে। এ ছাড়াও, দেড় লক্ষ জোক দেশান্তরিত হয়। যুদ্ধের এই ভন্নাবহ পরিণাম দেখে তঃখ আর অমুভাপে অশোকের অন্তর ভরে ওঠে। এর পরে তিনি

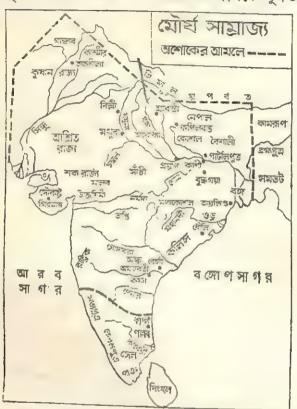
আর কোনো যুদ্ধ করেন নি। বৌদ্ধর্য গ্রহণ করে ভিনি জীবের

কল্যাণে আত্মনিয়োগ করেন। প্রজাদের নৈতিক চরিত্রের যাতে উন্নতি হয়, সেজক্য অশোক পাহাড়ের গায়ে অনেক স্থন্দর স্থন্দর উপদেশ খোদাই করে দিয়েছিলেন। জনসাধারণের স্থবিধার জক্যে উপদেশগুলো পালি ভাষায় এবং ব্রাহ্মী লিপিতে লেখা হয়েছিল।

অশোকের ব্রাক্ষা লিপি

এ ছাড়া, তিনি নানা স্থানে স্তন্তের গায়ে বৃদ্ধের বাণী খোদাই করে দিয়েছিলেন। ধর্মহামাত্র নামে একদল দায়িত্বশীল কর্মচারী ধর্মপ্রচার করতেন। পুত্র মহেল্র এবং কন্সা সভ্যমিত্রাকে তিনি সিংহলে ধর্মপ্রচার করতে পাঠান। সমাটের নির্দেশে প্রচারকেরা পৃথিবীর নানা দেশে গিয়ে বৌদ্ধর্ম প্রচার করেন। ধর্মপ্রচারের জন্মে পৃথিবীর আর কোনো রাজা এরকম চেষ্টা করেন নি। প্রজারা ছিল তাঁর সন্তানের মতো। তিনি প্রজাদের কল্যাণের জন্মেও অনেক কাজ করে গেছেন। তিনি রাজ্যের নানা স্থানে রাজ্যঘাট তৈরি করান। রাজ্যার ধারে ধারে বৃক্ষ রোপণ এবং অতিথিশালা নির্মাণ করান। তিনি জল সরবারহের জন্ম পুকুর ও খাল কাটিয়েছিলেন, মামুষ ও পশুদের চিকিংসার জন্মে হাসপাতাল নির্মাণ করেছিলেন। জাশাক ছিলেন ভারতের সর্বশ্রেষ্ঠ সমাট এবং পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ সমাটদের অন্যতম।

অশোকের কোনো উপযুক্ত উত্তরাধিকারী ছিলেন না। ফলে, তাঁর মৃত্যুর কয়েক বছরের মধ্যেই বিশাল মোর্ঘ সাম্রাজ্য নিশ্চিহ্ন হয়ে যায়। মোর্থবংশের শাসন ভারতে এক নতুন যুগের সূচনা করেছিল। অশোকের শাসনকালে মৌর্য সাম্রাজ্য পশ্চিমে হিন্দুকুশ পর্বত থেকে পূর্বে ব্রহ্মপুত্র নদ এবং উত্তরে হিমালয় থেকে দক্ষিণে তুঙ্গভদ্রা নদী



পর্বস্ত বিস্তৃত হয়েছিল। প্রাচীন ভারতে এত বড়ো সাম্রাজ্য মৌর্যদের আগে বা পরে আর কথনও গড়ে ওঠে নি। উপযুক্ত কেন্দ্রীয় শাসনের ফলে এই বিশাল সাম্রাজ্যের সর্বত্র শাস্তি ও শৃম্বলা ছিল। অশোকের পরে সাম্রাজ্যের ক্রত অবনতি ঘটে। এই সময় বিদেশ থেকে এসে ক্রেকটি জাতি ভারত আক্রমণ করে। ব্যাক্টিয়ান গ্রীক, পার্থিয়ান এবং সিথিয়ান বা শকেরা উত্তর-পশ্চিম ভারতের নানা স্থানে রাজ্য স্থাপন করে।

ব্যাক্ট্রিয়ান গ্রীকৃঃ সে যুগে আফগানিস্তানের কিছুটা অংশের নাম ছিল ব্যাক্ট্রিয়া। ব্যাক্টিয়া থেকে গ্রীকরা এসে পাঞ্জাব ও সিন্ধুপ্রদেশ অধিকার করে। ডেমেট্রিয়স ও মিনাণ্ডার নামে ছন্ধন গ্রীক রাজা ছিলেন খুব বিখ্যাত। মিনাণ্ডার বৌদ্ধর্মের প্রতি অন্তরক্ত হরে-ছিলেন। পরবর্তী কালে গ্রীক রাজারা নিজেদের মধ্যে ঝগড়া-বিবাদ করে গুর্বল হয়ে পড়ে। এক সময় গ্রীক রাজাগুলো ভেক্তে যায়।

শক রাজগণঃ শকেরা প্রথমে থাকত মধ্য এশিরায়, পরে তারা কাব্ল নদীর উপত্যকায় বাদ করতে থাকে। এ জায়গাটি শকস্থান বা দিস্তান নামে পরিচিত হয়।

শকদের আক্রমণে উত্তর-পশ্চিম ভারতের গ্রীক রাজ্যগুলো ধ্বংস হয়। উত্তর-পশ্চিম ভারত ছাড়াও মথুরা, মালব এবং গুজরাটেও শকেরা আধিপতা বিস্তার করে। শক রাজাদের মধ্যে রুজদামন ও নহপানের নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

পার্থিয়ান বা পহলব রাজগণ: পার্থিয়ানরা এসেছিল ইরান থেকে। এরাও উত্তর-পশ্চিম ভারতে রাজ্য স্থাপন করে। এই বংশের রাজাদের মধ্যে গণ্ডোফারনেসের নাম বিখ্যাত। শোনা যায়, যীশু-খ্রীস্টের শিশ্য সেন্ট টমাস খ্রীস্টধর্ম প্রচার করার জ্ঞে গণ্ডোফারনেসের রাজসভায় এসেছিলেন।

কুষাণ রাজগণঃ এই যুগের বৈদেশিক আক্রমণকারীদের মধ্যে সবচেয়ে বিখ্যাত ছিল কুষাণগণ। কুষাণরা ছিল মধ্য এশিয়ার একটি যাযাবর জাতি। ভারতের কুষাণ রাজাদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ ছিলেন কণিক। তাঁর রাজ্য আফগানিস্তান থেকে কাশী পর্যন্ত বিস্তৃত ছিল। পুরুষপুর বা পেশোয়ারে তিনি রাজধানী ছাপন করেছিলেন। কণিক বৌদ্ধর্ম গ্রহণ করে কাশ্মীরে বৌদ্ধদের একটি সভা আহ্বান করেন। এই সভায় মহাযান ধর্মমত প্রাধান্ত পায়। তিনি তাঁর সাম্রাজ্যের বিভিন্ন স্থানে বহু চৈত্য, বৌদ্ধ বিহার ও স্তৃপ নির্মাণ করেছিলেন। তাঁর রাজসভায় দার্শনিক নাগার্জুন, কবি অশ্বঘোষ এবং আয়ুর্বেদ-শাস্ত রচয়িতা চরক প্রভৃতি সেকালের জ্ঞানী ও গুণীর সমাবেশ হয়েছিল। কুষাণদের আমলে গ্রীক ও রোমান সভ্যতার কিছু কিছু প্রভাব ভারতে প্রবেশ করে। মৌর্ব সাম্রাজ্যের পতনের পরে ভারতবর্ষে যে-রাজনৈতিক বিশৃদ্ধলা দেখা দিয়েছিল, কুষাণ রাজাদের স্থশাসনে তা অনেকটা দূর হয়। কুষাণ রাজারা উত্তম-পশ্চিম ভারতের বিভিন্ন অঞ্চলে প্রায় ২৫০ খ্রীস্টান্দ পর্যন্ত রাজত্ব করেন।

মগধের গুপ্ত সাত্রাজ্যঃ কুষাণদের পরে উত্তর ভারতে গুপ্ত রাজাদের আমলে আবার একটি বিশাল সামাজ্য গড়ে উঠেছিল। গুপ্ত রাজবংশের প্রথম চন্দ্রগুপ্ত লিচ্ছবী রাজকুমারী কুমারদেবীকে বিবাহ করে নিজের ক্ষমতা ও প্রতিপত্তি অনেকখানি বাড়িয়েছিলেন। গুপ্ত বংশের শ্রেষ্ঠ রাজার নাম সমুস্তগুপ্ত। সমুস্তগুপ্ত একজন দিখিজয়ী

রাজ। ছিলেন। এলাহাবাদে একটি
পাথরের স্তস্তে তাঁর দিখিজয়ের বর্ণনা
আছে। উত্তরে হিমালয় থেকে দক্ষিণে
নর্মদা নদী এবং পূর্বে ব্রহ্মপুত্র থেকে
পশ্চিমে চম্বল পর্যস্ত তাঁর সাম্রাজ্য বিস্তৃত ছিল। সমুত্রগুপ্ত দিখিজয় সমাপ্ত করে অশ্বমেধ যজ্ঞ করেছিলেন। তিনি স্থকবি ছিলেন। তাঁর সময়ের এক রকমের মুজা দেখে মনে হয় যে, তিনি স্থন্দর বীণা বাজাতে পারতেন।



**সমূ**দ্ৰপ্তপ্ত

সমুদ্রগুপ্তের পুত্র দিতীয় চন্দ্রগুপ্ত পিতার মতো বীর এবং বিছোৎদাহী ছিলেন। তিনি মালব ও সৌরাষ্ট্র জয় করে গুপ্ত দামাজ্যের দীমা প্রদারিত করেন। দৌরাষ্ট্রের শক রাজাদের বিতাড়িত করে তিনি শকারি উপাধি গ্রহণ করেন। তাঁর উপাধি ছিল বিক্রমাদিত্য। তিনি পণ্ডিত ও গুণী ব্যক্তিদের খুব সমাদর করতেন। তাঁর রাজসভায় নাকি নবরত্ব অর্থাৎ নয় জন অদিতীয় পণ্ডিত ছিলেন। নবরত্বের একজন ছিলেন মহাকবি কালিদাস।

দ্বিতীয় চল্রগুপ্তের রাজত্বালে ফা-হিয়ান নামে এক চীনা পরিবাজক ভারতে আসেন। ফা-হিয়ান তিন বছর পাটলিপুত্রে বাস করেন। ফা-হিয়ানের বিবরণ থেকে আমরা সে মৃণের অনেক মৃলাবান তথ্য জানতে পারি। গুপ্ত রাজাদের আমলে সংস্কৃত সাহিত্যের বিশ্বয়কর উন্নতি ঘটে। কালিদাস, শৃত্রক, বিশাখদন্ত প্রমুখরা স্থলর স্থলর কাব্য ও নাটক রচনা করেন। গুপ্ত রাজারা ছিলেন হিন্দু। রামায়ণ-মহাভারত গুপ্ত যুগে নতুন করে লেখা হয়। মোট কথা, শিল্প, সাহিত্য, বিজ্ঞান ও ধর্ম প্রভৃতি সব ক্ষেত্রে গুপ্ত যুগে একটা নতুন জাবনের সাড়া জেগেছিল। সেজত্বে গুপ্ত যুগকে ভারতের স্থাব বলা হয়। গুপ্ত রাজবংশের শেষ শক্তিশালী সমাট ছিলেন স্থলগ্র (৪৫৫ থেকে ৪৬৭ খ্রীস্টাব্দ)। হুনদের আক্রমণে গুপ্ত সামাজ্যের পতন হয়।

প্রাচীন বাংলাঃ বাংলা যাদের মাতৃভাষা তারাই বাঙ্গালী, আর বাঙ্গালীরা যে-দেশে বাস করে, তার নাম বঙ্গদেশ বা বাংলা। বাংলার উত্তরে হিমালয়; দক্ষিণে বঙ্গোপসাগর; পূর্বে গারো, খাসিয়া, জয়স্থিয়া উচ্চভূমি এবং ত্রিপুরা ও চট্টগ্রাম পর্বতশ্রেণী আর পশ্চিমে রাজমহল, সাঁওতাল পরগণা ও ছোটনাগপুরের মালভূমি অঞ্চল। যে বঙ্গদেশের সীমানার কথা বলা হলো, সে বঙ্গদেশ বা বাংলা ছিল অবিভক্ত, এখনকার মতো পশ্চিমবঙ্গ আর বাংলাদেশ—এ ভাবে ফুটুকরো হয়ে যায় নি।

বাংলা একটি সুপ্রাচীন দেশ। বেদ, রামায়ণ, মহাভারত, জৈন আর বৌদ্ধ সাহিত্যে বাংলার উল্লেখ আছে। তবে বর্তমান কালের বাংলা তথন নানা অঞ্চল বা জনপদে বিভক্ত ছিল। জনপদ- শুলার ছিল নানা নাম। বঙ্গ, গৌড়, তাম্রলিপ্তি, সমতট, হরিকেল, স্কুল, পুঞু বা পুঞুবর্ধন, বরেন্দ্র বা বরেন্দ্রী, রাঢ়া বা রাঢ় দেশ। কোনো কোনো জনপদের রাজনৈতিক গুরুত্বের সঙ্গে তার আয়তন বেড়েছে বা কমেছে। আর আয়তনের হ্রাস-বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে নামেরও হয়েছে নানা হেরফের। মুসসমান যুগেই প্রথম বঙ্গদেশের জনপদ- শুলো একত্রে বাংলা অথবা বাঙ্গালা এই নামে পরিচিত হয়। পরেইরোরোপীয়রা একে বেঞ্জল (Bengal) নামটি দিয়েছিলেন।

রামায়ণ ও মহাভারতের যুগে প্রাচীন বাংলা ক্রমেই আর্থ-সভ্যতার সংস্পর্শে আসে। বাংলার রাজা বিজ্ঞাসংহের সিংহল (বর্তমান শ্রীলকা) বিজ্ঞার কাহিনী পাই মহাবংশ নামে একটি সিংহলী গ্রন্থে। গঙ্গা নদীর নিন্ন উপত্যকায় যে-অঞ্চল সমুজের খুব কাছাকাছি, প্রাচীন কালে তাকেই বোধহয় গঙ্গারাষ্ট্র বলা হোত। গ্রীক ঐতিহাসিক টলেমি গঙ্গারিডি (বা গঙ্গারিডই) নামে যে-একটি শক্তিশালী রাষ্ট্রের উল্লেখ করেছেন, তা বোধ হয় গঙ্গারাষ্ট্রই। বঙ্গদেশ তথন মগধের নন্দ রাজাদের অধীনে ছিল। গঙ্গারাষ্ট্র মৌর্যদেরও অধীন হয়। শিলালিপির প্রমাণ থেকে বলা চলে যে, উত্তরবঙ্গ মৌর্যাজার অস্তর্ভুক্ত হয়েছিল। গুঙ্গ রাজাদের আমলে বঙ্গ পাটলিপুত্র রাজ্যের অস্থীনে ছিল বলে অনেকে অসুমান করেন। খ্রীস্টীয় ১ম ও ২য় শতকেও গঙ্গারিডি বা গঙ্গারাষ্ট্রের খ্যাতি একটুকু য়ান হয় নি। গঙ্গা-রাষ্ট্রের রাজধানী গঙ্গা বা গঙ্গানগর তথনও বর্তমান। প্রাচীন বাংলায় কুষাণদের আধিপত্য সম্বন্ধে নিশ্চিত কোনো প্রমাণ নেই, তবে খ্রীস্টীয়

3

চতুর্থ শতক পর্যন্ত বাংলাদেশে সমৃদ্ধ ও বিস্তৃত ব্যবসা-বাণিজ্যের স্থাপন্ত ইঙ্গিত পাওয়া যায় পেরিপ্লাস ও টলেমির বিবরণে, মিলিন্দ-পঞ্ছো ও জাতকের গল্পে এবং কোটিল্যের অর্থশাস্ত্রে। গঙ্গানগরে স্থান্ধ কার্পাস বস্ত্র তৈরি হোত। এই সময়ে বাংলার সঙ্গে মিশর ওরোম সাফ্রাজ্যের, পূর্ব-দক্ষিণ এশিয়ার দেশগুলোর এবং চীনের রীতিমতো ব্যবসা-বাণিজ্য চল্লত। বাংলার সমৃদ্ধির আকর্ষণেই নন্দ রাজাদের আমল থেকে গুণ্ড রাজাদের আমল পর্যন্ত বিভিন্ন যুগে বাংলায় আধিপতা স্থাপনের চেষ্টা চলেছে।

বাংলার রাজনৈতিক ইতিহাস সুস্পষ্ট হয়ে ওঠে গুপ্ত রাজাদের আমল থেকে। মেহেরোলি লোহস্তস্তে রাজা চন্দ্রের বঙ্গবিজয়ের কথা আছে। এই চন্দ্র কারো মতে গুপ্ত সম্রাট প্রথম চন্দ্রগুপ্ত, কারো মতে বিতীয় চন্দ্রগুপ্ত। রাজা চন্দ্র যিনিই হোন না কেন, তাঁর বঙ্গ-বিজয়ের পূর্বে বঙ্গদেশ-যে কিছুকাল স্বাধীন ছিল, এ কথা বলা চলে।

বাক্ডা জেলার শুশুনিয়া পাহাড়ের একটি লিপিতে সিংহবর্মার পুত্র পুন্ধরণের রাজা চন্দ্রবর্মার কথা আছে। ইনিই বোধহয় সে সময়ে রাঢ় অঞ্চল শাসন করভেন। সমুস্ঞপ্ত রাজা চন্দ্রবর্মাকে পরাজিত করেছিলেন। সমুস্ঞপ্ত সমতট ছাড়া প্রাচীন বাংলার আর প্রায় সব জনপদই গুপু সামাজ্যের অন্তর্ভুক্ত করেছিলেন।

দ্বিতীয় চল্রগুপ্তের পুত্র প্রথম কুমারগুপ্তের আমল থেকে প্রায় ধর্চ শতকের মাঝামাঝি কাল পর্যন্ত বাংলার গুপ্ত রাজত্বের প্রধান কেল্র ছিল পুত্ত বর্ধন। ৫০৭-৮ খ্রীন্টাব্দের আগে কোনো এক সময়ে সমতটিও গুপ্ত শামাজ্যের অন্তর্ভুক্ত হয়। গুপ্তরাজাদের আমলে বাংলার সাধারণ মার্থ জমিজমা ক্রয়-বিক্রয়ে, স্বর্ণ ও রৌপ্যমুদ্ধা বাবহার করত। স্বর্ণমুদ্ধার নাম ছিল দিনার এবং রৌপ্যমুদ্ধার নাম রূপক। গুপ্তরাজাদের আমলে বাংলায় ব্রাহ্মণা ধর্ম ও সংস্কৃতির প্রসার হয়।

ভারতের সঙ্গে বিদেশের যোগাযোগঃ সিন্ধ্-উপত্যকার
অধিবাসীরা পন্চিম ও মধ্য এশিয়ার সঙ্গে যোগযোগ রক্ষা করে
চলত। ভারতীয়দের এই বিদেশযাত্রার প্রধান প্রেরণা ছিল বাণিজ্য।
আলেকজাণ্ডারের ভারত আক্রমণের সময় থেকেই পশ্চিম এশিয়ার
দেশগুলোর সঙ্গে ভারতের ঘনিষ্ঠ পরিচয় হতে থাকে। ইন্দো-গ্রীক,
শক ও পার্থিয়ানরা আক্রমণকারী হিসেবে এলেও পরে ভারতীয়
সমাজে মিশে যায়।

কুষাণ যুগে স্থান রোমের সঙ্গে ভারতের নিয়মিত বাণিজ্য চলত।
প্রীস্টীয় প্রথম শতকের লেখা 'পেরিপ্লান' নামে একটি গ্রন্থে এই
বাণিজ্যিক লেনদেনের স্থানর বর্ণনা আছে। ভারতের পশ্চিম উপকৃলে
তখন অনেক বন্দর ছিল। ঐসব বন্দর দিয়ে নানা রকম বিলাসদ্রব্য,
মূলাবান পাথর, হাতির দাঁতে, স্কল্প মসলিন কাপড় প্রভৃতি রোমে
যেত, আর রোম থেকে কোটি কোটি স্বর্ণমূলা ভারতে আসত।
স্থলপথেও এই বাণিজ্য চলত।

ভারতের সঙ্গে মধ্য এশিয়ার যোগাযোগ ঘটেছিল খ্রীস্টীয় প্রথম শতক থেকেই। প্রায় সমগ্র মধ্য এশিয়া ছিল কণিছের অধীন। মধ্য এশিয়ার একটি বিস্তীর্ণ অঞ্চলে বৌদ্ধ ধর্ম ও সংস্কৃতি ছড়িয়ে পড়েছিল। তুর্কিস্তানের বালির ভূপের নিচে বহু বৌদ্ধ বিহার ও ভূপ, বৌদ্ধ মূর্তি, হিন্দু দেবদেবীর মূর্তি, মুদ্রা এবং ভারতীয় ভাষায় লেখা অনেক পুঁথি পাওয়া গেছে। এসব থেকে বোঝা যায় যে, এক সময় ধর্মে, ভাষায় এবং শিল্পরীতিতে মধ্য এশিয়ার অধিবাসীয়া ছিল সম্পূর্ণ ভারতীয়।

মধ্য এশিয়া থেকে বৌদ্ধর্ম একে একে চীন, কোরিয়া, জাপান এবং তিব্বতে পৌছায়। দক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ার দেশগুলোও ভারতীয় সভ্যতাকে সাদরে গ্রহণ করে। এখনকার ইন্দোচীন, শ্যাম, ব্রহ্মদেশের দক্ষিণাঞ্চল, মালয় এবং ইন্দোনেশিয়ার দ্বীপগুলোকে প্রাচীন কালে স্বর্ণভূমি বলা হোত। ভারতের পূর্ব উপকৃলের দন্তপুর, তাম্রলিগু ( এখনকার তমলুক) প্রভৃতি বন্দর থেকে ভারতীয় বাণিজ্য-জাহাজ স্বর্ণভূমিতে যেত। অশোকের রাজত্বাল থেকেই সিংহলের সঙ্গে ভারতের যোগাযোগ ঘটেছিল।

বিদেশের সঙ্গে যোগাযোগের ফলে ভারতীয় সভাতার ওপরেও ঐ সকল দেশের সভাতার নানা রকম প্রভাব পড়েছিল। এই প্রভাব লক্ষ করা যায় বিশেষ করে শিল্লের ক্ষেত্রে। পশ্চিম ভারত অভি প্রাচীন কাল থেকেই পারস্থা ও গ্রীসের সংস্পর্শে এসেছিল। পারসিক, গ্রীক ও ভারতীয় সভাতার সমন্বয়ের ফলে এই অঞ্চলে একটি নতুন শিল্পরীতি গড়ে ওঠে। একে গান্ধার শিল্প বলা হয়। গ্রীক-দেবতাদের অঞ্করণে বৃদ্ধ্যূতি নির্মাণের মধ্যে গান্ধার শিল্পর পরিচয় পাওয়া যায়। গ্রীক, শক, পহলব, কুষাণ প্রভৃতি বিদেশী জাতির সংমিশ্রণের ফলে ঐ সব দেশের সভাতা ও সংস্কৃতির সঙ্গে ভারতীয় সভাতা ও সংস্কৃতির সমন্বয় ঘটে। এই সমন্বয়ের ফলে ভারতীয় সংস্কৃতি যথেষ্ট লাভবান হয়। ফলে ভারতীয় মনীযার বিকাশ ঘটে।

সামাজিক ক্ষেত্রেও যথেষ্ট পরিবর্তন ঘটে। শক, পহলব, কুষাণ প্রভৃতি বিদেশীরা ক্রমণ ভারতীয় ধর্ম গ্রহণ করে ভারতের সমাজদেহে মিশে যায়। ফলে আর্যদের চতুর্বর্ণের জায়গায় অসংখ্য উপবিভাগের স্পষ্টি হয়। জাতিভেদ প্রথার মধ্যেও যথেষ্ট শৈথিল্য দেখা যায়।

মেগান্থিনিন ঃ চন্দ্রগুপ্ত মৌর্ধের রাজসভায় যে-গ্রীকদৃত মেগাস্থিনিস এসেছিলেন, একথা ভোমাদের বলেছি। মেগান্থিনিস কাব্ল ও পাঞ্জাব হয়ে পাটলিপুত্রে আসেন। চন্দ্রগুপ্তের রাজধানী পাটলিপুত্র ও রাজপ্রাসাদ এবং মৌর্য শাসন-প্রণালী সম্পর্কে তাঁর বিবরণ থুবই মূল্যবান।

মেগান্থিনিসের বিবরণঃ রাজধানী পাটলিপুত্র ছিল প্রকাণ্ড শহর। মৌর্ব সম্রাটের বিশাল সেনাবাহিনীতে ছিল ৬ লক্ষ পদাতিক, ৩০,০০০ ঘোড়সওয়ার এবং ৯,০০০ হাতি। এ ছাড়া, ছিল একটি নৌ-বাহিনী।

রাজ্যশাসনের জন্মে অনেক কর্মচারী ছিল। ভিন্ন ভিন্ন কাজের জন্মে ভিন্ন ভিন্ন কর্মচারী। রাজপ্রতিনিধিরা ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশ শাসন করতেন।

দেশে চুরি-ভাকাতি ছিল না। দণ্ডবিধি থুব কঠোর ছিল। সমাট বহু গুপুচর নিয়োগ করেছিলেন; ভারা ছদ্মবেশে ঘূরে বেড়াত। ভারতবাদীদের সাধু ও সরল ব্যবহারে মেগান্থিনিস মুগ্ধ হয়েছিলেন। ভারা মামলামোকদ্দমা করতে চাইত না, পরের দ্রব্যেও লোভ করত না। ভারতবাদীরা সভা কথা বলত। তারা ক্রীতদাদ রাখত না। এ কথাটি অবশ্য দম্পূর্ণ সভা নয়। তবে মেগান্থিনিদের বিবরণ থেকে বোঝা যায় যে, ভারতীয়রা ছিল স্বাধীনভাপ্রিয়। মেগান্থিনিস ভারতীয়দের সাতটি শ্রেণীতে বিভক্ত করেছেন, যথা—(১) দার্শনিক, (২) কৃষক, (৩) শিকারী ও পশুপালক, (৪) বণিক ও শ্রামশিল্পী,

(৫) সৈনিক, (৬) পর্যবেক্ষক বা গুপ্তচর এবং (৭) অমাতা। মেগাস্থিনিস বলেছেন যে, ভারতীয়রা একমাত্র যজ্ঞের সময়ে মন্ত পান করত। তবে তারা বিলাসী ছিল এবং অলঙ্কার পছন্দ করত। ভারতবাসীর প্রধান উপজীবিকা ছিল কৃষি। কৃষকরা ছিল পরিশ্রেমী,

সংযমী ও মিতব্যয়ী।

ফা-হিয়ানঃ চীনা পরিবাজক ফা-হিয়ান গুপ্তসমাট দ্বিতীয়

চন্দ্রগুপ্তের শাসনকালে ভারতে এসেছিলেন। তিনি প্রায় দশ বছর (৪০১ থেকে ৪১০ খ্রীন্টান্দ) ভারতে থাকেন। এর মধ্যে প্রায় ছয় বছর তিনি বিভীয় চন্দ্রগুপ্তের সামাজ্যে অতিবাহিত করেন। তাঁর বিবরণ থেকে সেই সময়কার ভারতবর্ষ সম্বন্ধে অনেক কথা জানতে পারি। তখন রাজ্যের অবস্থা খুব ভালো ছিল। খাজনা ছিল কম, জিনিসপত্র ছিল সস্তা। স্কুতরাং প্রজারা স্থ্যে-শান্তিতে বাস করত। দেশে চোর-ভাকাতের উপদ্রব ছিল না। মোর্যগুগের মত শান্তি অত কঠোর ছিল না। সাধারণ অপরাধের শান্তি ছিল অর্থদণ্ড। একমাত্র বিদ্যোহ ও দম্মতার জন্মে অঙ্গচ্ছেদ করা হোত। সকলে নির্ভয়ে পথে চলাফেরা করতে পারত। দেশের মধ্যে যোগাযোগের স্থন্দর বাবস্থা ছিল। প্রজাদের মঙ্গলের জন্মে রাজা লানশালা ও ধর্মশালা তৈরি করে দিয়েছিলেন। কুগ্ণ ও ছঃস্থের জন্মে হাসপাতাল ছিল। রাজা অন্ম ধর্মের প্রতি থুব উদার ছিলেন। দেশের নানা স্থানে বন্ধ দেব-মন্দির ও বৌদ্বমঠ স্থাপিত হয়েছিল।

মথুরা ও মগধের ঐশ্বর্য দেখে ফা-হিয়ান মৃগ্ধ হয়েছিলেন।
পাটলিপুত্রে মৌর্যদের রাজপ্রাসাদের শোভা-সৌন্দর্য মেগাস্থিনিসের
বিশ্ময় স্পৃষ্টি করেছিল। বাংলায় তাম্রলিপ্ত ছিল সেকালের একটি
বিখ্যাত বন্দর। তাম্রলিপ্ত বন্দর থেকে ভারতীয় বণিকরা জাহাজে
চড়ে দূর-দূরাস্তরে বাণিজ্য করতে যেত। চণ্ডাল ও নীচ জাতির
লোকেরা নগরের বাইরে বাস করত। মেগাস্থিনিস ও ফা-হিয়ানের
বিবরণ থেকে বোঝা যায় যে, গুপ্তযুগে সাধারণ মান্মধের জীবনে
মুখ-সক্তলতা ও নিরাপত্তাবোধ বেড়েছিল। রাথ্রেরও সমৃদ্ধি বেড়েছিল। ফলে সাহিত্য, শিল্প, ধর্ম প্রভৃতি সংস্কৃতির নানা ক্ষেত্রে নতুন
নতুন স্থিটি সম্ভব হয়েছিল।

এবার তোমাদের এই বিষয়ে কিছু বলব।

অবার তোমানের এই নিকে নির মোর্যদের পরবর্তী কালে সাহিত্য: সাহিত্যের দিক দিয়ে মোর্যদের পরবর্তী কালে ভারতীয় মনীষার অপূর্ব বিকাশ হয়েছিল। অথঘোষ, বস্থমিত্র প্রভৃতির রচনা এ কালের জ্ঞানভাণ্ডারকে সমৃদ্ধ করেছিল। রামায়ণ, মহাভারত, বাৎস্থায়নের 'কামসূত্র', কোটিলার 'অর্থশাস্ত্র', যাজ্ঞবজ্ঞার 'স্মৃতি', মনুর 'সংহিতা' প্রভৃতিও এ সময়ে সঙ্কলিত হয়। গুপুর্ণে সংস্কৃত সাহিত্যের অভূতপূর্ব উন্নতি হয়। কালিদাসের লেখা 'শকুন্তলা'



নাটক এবং 'রঘ্বংশ', 'কুমারসম্ভব' প্রভৃতি কাব্য সংস্কৃত সাহিত্যের অমূল্য সম্পদ।

শিলঃ গান্ধারের শিল্পীরা অ্যাপোলো, জিউস, ডায়না প্রভৃতি প্রীক ও রোমান দেবদেবীর অমুকরণে বৃদ্ধ্যূর্তি নির্মাণ করতে থাকেন। আবার সম্পূর্ণ ভারতীয় শিল্পকলার পরিচয় মেলে অমরাবতী ও মথুরার শিল্পরীতিতে। পেশোয়ারে স্ফ্রাট কণিচ্চের তৈরি চৈত্য, সাঁচি স্থুপের তোরণবারের কারুকার্য, নাসিক, নানাঘাট প্রভৃতি জায়গার



অজন্তার গুলাচিত্র

গুহাচৈতা; বরহুত, ভাজা ও বৃদ্ধগন্নার মঠ প্রভৃতি মোর্যোত্তর যুগের স্থাপত্য, ও ভাস্কর্য শিল্পের স্থন্দর নিদর্শন। গুপুর্গে স্থাপতা ও চিত্রশিল্পের অভূতপূর্ব উন্নতি হয়েছিল। এ যুগের পাথর ও ব্রোঞ্জের তৈরি বহু দেবদেবীর মৃতি আজন্ত আমাদের বিস্ময়ের সৃষ্টি করে। হায়জাবাদের অজন্তা গুহার প্রাচীর-চিত্রাবলী অপর্ব শিল্প-প্রতিভার নিদর্শন। ছবি-গুলোর বেশির ভাগই वृक्तरमरवंद्र कीवरनंद्र नाना ঘটনা নিয়ে। নারীমূতির

এমন স্থলর ছবি আর কোথাও দেখা যায় না।

বিজ্ঞানঃ পাটলিপুত্রের জীবক ছিলেন বৈছ্যকশাস্ত্রে স্থপণ্ডিত। ভক্ষশিলায় আচার্য আত্রেয়র কাছে তিনি বৈছ্যকশাস্ত্র অধ্যয়ন করেন। তিনি শলাশাস্ত্রেও পারদর্শী ছিলেন। গুপু আমলের হিন্দুরা শারীর-বিছায় পারদর্শী ছিলেন।

প্রাচীন ভারতবর্ষে রসায়ন শাস্ত্রেরও বিশেষ উন্নতি হয়। খ্রীস্চীয় পঞ্চম শতকে ভারতে পারদ ও লোহার রাসায়নিক গবেষণা হয়েছিল।



আকরিক ধাতুকে বিশুদ্ধ করে নেবার বিভাও প্রাচীন ভারতীয়র। আয়ত্ত করেছিলেন।

আর্যভট্টের সময়ে ভারতে জ্যোতিষ বিজ্ঞানের চরম উন্নতি হয়।
ভারতীয় জ্যোতির্বিদদের মধ্যে তিনিই প্রথম আবিদ্ধার করেন যে,
পৃথিবী তার অক্ষের চারদিকে ঘোরে। স্র্যগ্রহণ ও চন্দ্রগ্রহণের কারণ
তিনিই আবিদ্ধার করেন। তিনি ৪৭৬ খ্রীস্টাব্দে পাটলিপুত্রে জন্মগ্রহণ
করেছিলেন। বরাহমিহিরের জন্ম হয় ৫০৫ খ্রীস্টাব্দে। বরাহমিহির
তাঁর 'বৃহৎসংহিতা' নামক গ্রন্থে ভারতের প্রাচীন জ্যোতিষশাস্ত্রের
একটি মূল্যবান বিষরণ রেখে গেছেন। ব্রন্মগুপ্ত ছিলেন আর একজন
জ্যোতির্বিজ্ঞানী।

বৈদিক যুগে আর্থরা সংখ্যাগণিতে থুব উন্নতিলাভ করেছিলেন। দশমিক পদ্ধতিতে অঙ্ক লিখন হিন্দুদেরই সৃষ্টি। বীজগণিতের মোট তব্ঞলিও আর্যভট্ট ও ব্রহ্মগুপ্ত জানতেন।

প্রাচীন ভারতে ধাতৃ-বিজ্ঞানেরও যথেষ্ট উন্নতি হয়। দিল্লীতে যে-মস্থা লোহার থামটিতে আজও মরিচা ধরে নি, তা তৈরি হয়েছিল আজ থেকে পনেরো শো বছর আগে।

শিক্ষাঃ শিক্ষার ক্ষেত্রেও ভারতীয়রা পিছিয়ে থাকে নি।
প্রাচীনকাল থেকেই পশ্চিম পাঞ্জাবের তক্ষশিলা শিক্ষার একটি প্রাসিদ্ধ
কেন্দ্র ছিল। ভারতের নানা জায়গা থেকে এবং চীন, গ্রীন, মিশর,
ইরান ও মধ্য এশিয়া থেকেও বহু ছাত্র এখানে জ্ঞানলাভের জন্য
আসত। পঞ্চম শতাকীতে মগধের নালন্দা বিশ্ববিদ্যালয় তক্ষশিলার
স্থান অধিকার করে। এখানে ব্যাকরণ, দর্শন, ধর্ম, সাহিত্য, অন্ধ,
অর্থনীতি, জ্যোতির্বিজ্ঞান প্রভৃতি শাস্ত্র পড়ান হোত। দেশ-বিদেশ
থেকে বহু ছাত্র এখানে এসে পড়াশোনা করত।

## वनू भी न नी

- )। (तम काहारक वर्ष ? (तम कथां हित्र वर्ष की ? (तम कग्नथां ना अवः की की ?
  - ২। বৈদিক যুগের সমাজ কেমন ছিল।
- ত। আর্যদের ধর্মের কথা সংক্রেণে বল। ৪। বৈদিক যুগে রাজা কাকে বলা হোত? রাজা কাদের পরামর্শ নিয়ে শাসন করতেন?



- ৫। ভারতের ছ'থানি মহাকাবোর নাম কা কা । মহাকাবা ছ'থানি থেকে আমরা কা কা জানতে পারি ।
  - ৬। মহাবীরের জীবন সম্বন্ধে যা জান বল।
  - ৭। জৈন ধর্মের কয়েকটি নীতির কথা বল।
  - ৮। वृद्धानत्वत्र कीवनकथा नित्र धकि हाति। श्रवस लिथ।
  - ১। বৃদ্ধদেবের ধর্মত সম্বন্ধে কী জান ?
  - >०। ठल्र ७ द्यार्थत्र काहिनी मः एक पन ।
  - ১১। ভারতের শ্রেষ্ঠ সমাট কে ? তাঁর সম্বন্ধে কী জান ?
- ১২। কুষাণ রাজাদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ কে ছিলেন ? তাঁর কথা সংক্ষেপে
  - ১৩। সমুত্রপ্ত কে ? তাঁর সম্বন্ধে কা জান ?
  - ১৪। প্রাচীন বাংলার কথা যা জান, সংক্রেপে বল।
- ১৫। 'ভারতের সঙ্গে বিদেশের যোগাযোগ'—এই বিষয় নিয়ে একটি ছোটো প্রবন্ধ লেখ।
- ১৬। মেগাস্থিনিস ভারতীয়দের সম্বন্ধে যেসব কথা বলে গেছেন, তা সংক্ষেপে লেখ।
- ১৭। ফা-হিয়ান কে? তিনি কতদিন ভারতে ছিলেন? তিনি ভারতীয়দের সম্বন্ধে কী কী বলে গেছেন ?
  - ১৮। সাহিত্যের ক্ষেত্রে প্রাচীন ভারতীয়দের কৃতিত্বের কথা বল।
  - ১৯। প্রাচীন ভারতের শিল্পকীর্তির কথা বল।
  - ২০। বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে প্রাচীন ভারতীয়র। কী রকম উন্নতি করেছিলেন ?
- ২>। 'শিক্ষার ক্ষেত্রেও ভারতীয়রা পিছিয়ে থাকে নি'—কথাটি ব্ঝিয়ে দাও।
- ২২। শূলস্থান পূরণ কর:
- (ক) ঋথেদ লেখা। (খ) আর্থরা যজ্ঞের সময় পান করত।
  (গ) রাজার প্রধান পরামর্শদাতা ছিলেন —। (ঘ) চন্দ্রগুপ্ত পরাজিত
  করে মগধের সিংহাসন অধিকার করেন। (৩) নবরত্বের একজন ছিলেন
  মহাকবি —। (চ) প্রায় সমগ্র মধ্য এশিয়া ছিল অধীন। (ছ) —ও
   ঐশ্বর্থ দেখে ফা-হিয়ান মুগ্ধ হয়েছিলেন।
  - २७। निरुत्र विषय्रश्चला मक्तरक या जान वन :

গ্রামণী, সভা, ইন্দ্র, ত্রিশলা, নির্বাণ, প্রদেনজিং, কৌটিলা, নহপান, কুমারদেবী, শকারি, আর্থভট্ট।